(प्रायोगिक संस्करण)
भाषा भारती
कक्षा 4
भारती
कक्षा 4
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

देश हमारा सबसे प्यारा
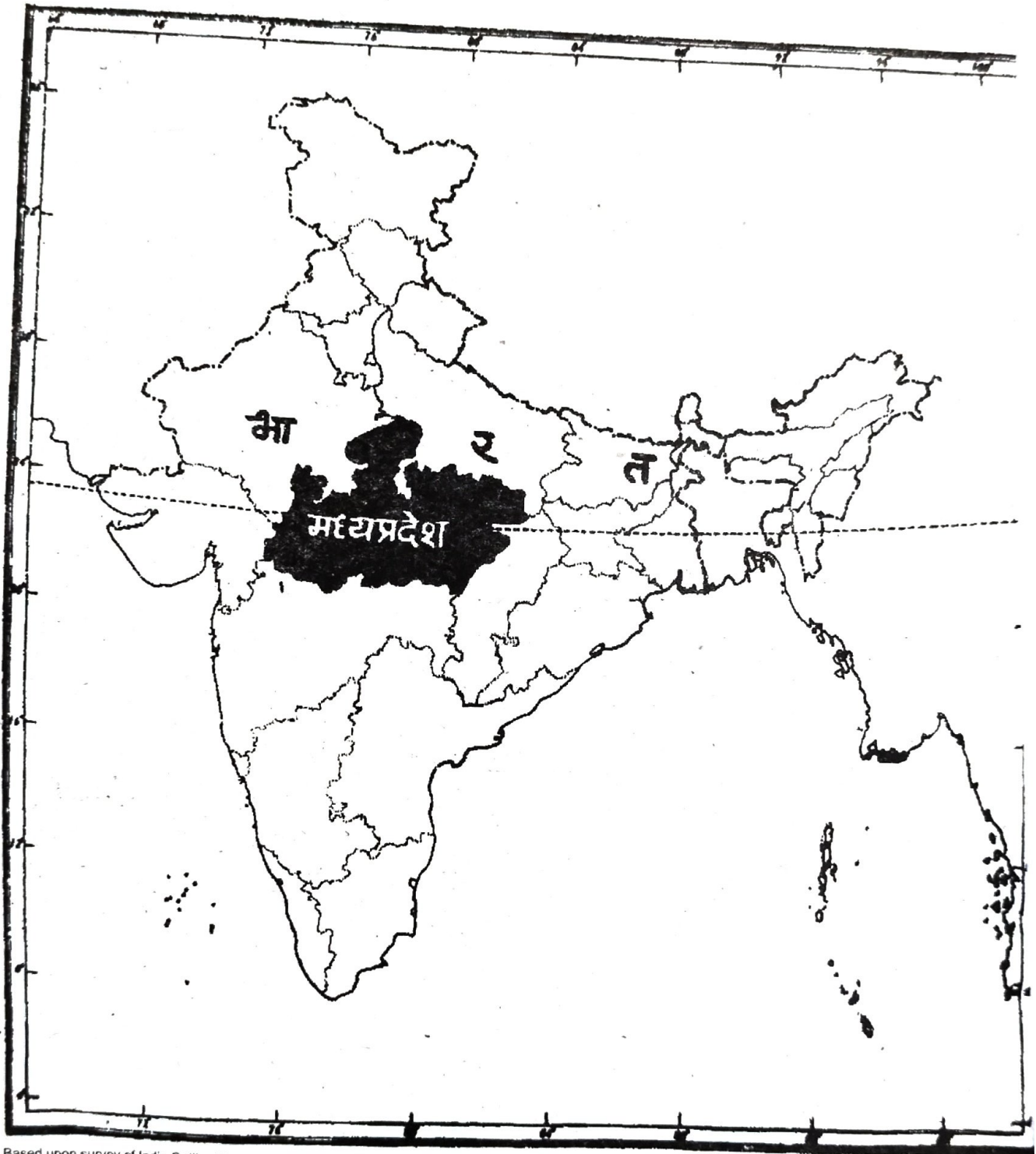
Based upon survey of India Outline Map printed in 1987.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
The interstate boundaries between Arunachal Pradesh, Assam and Meghalaya shown on this map are as per interpreted from the North-Eastern Areas (Reorganisation) Act. "1971", but have yet to be verified.
Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher.
"इस मानचित्र मे उत्तरप्रदेश एव उतरांचल, झारखण्ड एवं बिहार, छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश के बीच की राज्य सीमाएँ सम्बन्धित सरकारों द्वारा सत्यापित नहीं की गयी हैं।"

मेरा भारत महान

भाषा भारती

कक्षा - 4

मध्यप्रदेश
राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

वर्ष 2006

मूल्य रू. २०.००

- प्रकाशन वर्ष 2006

- **निदेशन** : नीलम शमी राव (आय. ए. एस.)
  संचालक, म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
- **मार्गदर्शन** : अभय बेडेकर, अपर संचालक, म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
- **संयोजन** : शकुन्तला श्रीवास्तव, म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
- **समन्वयक** : सुधा मिश्रा, म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
- **सह समन्वयक** : सुमन सिंह, म. प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र
- **सम्पादक** : डॉ. शोभा भारद्वाज
  डॉ. महेश परिमल
- **मॉडरेटर** : श्री सौभाग्यमल जैन
- **लेखकगण** : सुधा शर्मा, मुरारी लाल उपाध्याय, डॉ. वन्दना मिश्रा, रेचल जोब, रामसेवक सोनी, सरोज दवे, अरविन्द श्रीवास्तव, रामगोपाल रैकवार, प्रदीप कुमार सोनी 'शून्य', आर.सी. भार्गव, बिन्दु त्रिपाठी, साहब सिंह तोमर, अरूण नामदेव, राजकुमारी जैन, मंजु मेहता, अरविन्द द्विवेदी, अरूण सचान, डॉ. वन्दना पाराशर, डॉ. प्रेमभारती डॉ. इन्दुबाला पाटनी, ज्योति रघुवंशी
- **मुख्य पृष्ठ** : विकास मालवीय
- **चित्रांकन** : अभिषेक श्रीवास्तव
- **आकल्पन** : पी. एण्ड पी. कम्प्यूटर्स, भोपाल

आभार - केन्द्र उन सभी व्यक्तियों, संस्थाओं एवं रचनाकारों का हृदय से आभारी है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। पाठ्य पुस्तक की विषयवस्तु का संकलन विभिन्न पुस्तकों पत्र पत्रिकाओं आदि से किया गया है। रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया है यद्यपि कुछ रचनाकारों का परिचय उपलब्ध न होने के कारण यह कार्य पूर्ण न हो सका। इस अपूर्ण कार्य में आपका सहयोग अपेक्षित है। अंततः प्रारम्भिक शिक्षा से जुड़े सभी शिक्षकों, शिक्षाविदों एवं पालकों के प्रति आभार जिन्होंने समय-समय पर पुस्तकों को बेहतर बनाने के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव दिए।

मुद्रक : म०प्र० पाठ्य पुस्तक निगम के लिए आलोक प्रिन्टर्स, आगरा, फोन : **(0562) 2364217** द्वारा मुद्रित ।
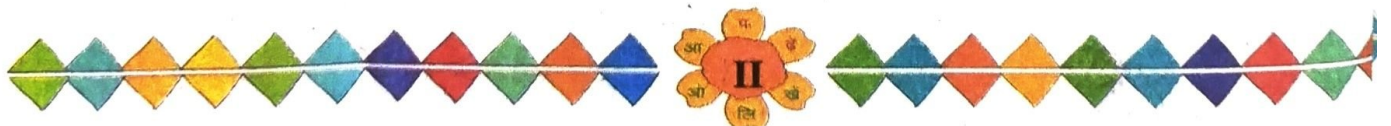
पुस्तक के बारे में....

भाषा अध्ययन - अध्यापन मात्र एक विषय के रूप में सीमित न रहते हुए सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास की महत्वपूर्ण धुरी है। राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल का यह प्रयास रहा है कि पुस्तक सर्व शिक्षा अभियान का अभिन्न अंग बन सके। इस दृष्टि से प्रयास है कि पुस्तक बस्ते से बाहर निकल कर दैनिक जीवन में अपनी उपस्थिति दर्ज करा सके। नवीन पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है कि शिक्षा मात्र विषयवस्तु याद कराने तक सीमित न रहकर भाषा शिक्षण की अपेक्षित दक्षताओं को प्राप्त करने में सहयोग प्रदान करे।

छात्रों, पालकों, शिक्षकों और भाषा विशेषज्ञों द्वारा मिले सुझावों को आधार मानकर पुस्तक को नए कलेवर में रचा गया है। पुस्तकें सीखने में प्रमुख सहयोगी होती हैं यदि पुस्तक से बच्चों की मित्रता हो जाए तो वो बोलने लगती हैं। प्रत्येक अभ्यास के साथ बच्चे खेलने लगते हैं। आकर्षक आवरण, चित्रात्मक प्रस्तुति, बोधगम्य भाषा, विषयवस्तु की क्रमबद्धता, अभिव्यक्ति की रोचकता के माध्यम से प्रस्तुत पुस्तक को आकर्षक और सार्थक बनाने का प्रयास किया है।

मानवीय प्रेम, साम्प्रदायिक सद्भाव, प्रकृति तथा पर्यावरण संवेदना और राष्ट्रप्रेम आदि मूल्यपरक विषयवस्तु को बालमन के लिए आकर्षक बनाते हुए विभिन्न भाषागत विधाओं यथा- कविता, कहानी, संस्मरण, एकांकी, जीवनी, संवाद, वार्तालाप, लेख, निबन्ध, पत्र, व्यंग्य, डायरी आदि में संजोने का प्रयास किया गया है। भारतीय संस्कृति और गौरव के साथ-साथ मध्यप्रदेश के सन्दर्भ व साहित्यकारों की कृतियों को समावेशित किया गया है।

अधिगम को सुगम एवं उद्देश्यनिष्ठ बनाने के लिए अभ्यास में उच्चारण शुद्धता, वर्तनी, शब्द निर्माण, कल्पनाशक्ति, मौलिक चिन्तन, व्यावहारिक व्याकरण, भावों एवं विचारों की पकड़, सृजनात्मकता, तर्कशक्ति तथा स्वतन्त्र अभिव्यक्ति आदि दक्षताओं के विकास के पर्याप्त अवसर प्रदान करने का प्रयास किया है। प्रत्येक पाठ के आरम्भ में **'आइए सीखें'** दिया गया है। इसमें पाठ के उद्देश्य तथा उसमें समाहित दक्षताएँ दी गई हैं। पृष्ठ के नीचे **'शिक्षण संकेत'** दिए हैं। ये पाठ पढ़ाने के सम्भावित तरीकों पर सुझाव मात्र है। अभ्यास को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा है- 1. **बोध प्रश्न** 2. **भाषा अध्ययन** 3. **योग्यता विस्तार**

बोध प्रश्न के अन्तर्गत पाठ को पढ़कर अर्थ ग्रहण या भाव ग्रहण से सम्बन्धित प्रश्न हैं। भाषा अध्ययन के अन्तर्गत व्यावहारिक व्याकरण, शब्द सामर्थ्य आदि से सम्बन्धित अभ्यास हैं, योग्यता विस्तार के अन्तर्गत पठित वस्तु को समझने, उस पर विचार करने तथा भाषा का प्रभावी प्रयोग करने के अवसर दिए गए हैं। पाठ में आए कठिन शब्द पाठ के अन्त में दिए गए हैं।

सम्पूर्ण सत्र की शिक्षण प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए पुस्तक मुख्यतः तीन भागों में विभक्त है पहला भाग सितम्बर अन्त तक दूसरा भाग दिसम्बर अन्त तक तथा तीसरा भाग मार्च अन्त तक पूरा होना अपेक्षित है। प्रत्येक भाग के बाद विविध प्रश्नावली दी गई है। जिसमें विभिन्न तरीकों के प्रश्न दिए गए हैं। ये सुझावात्मक हैं। इस प्रकार के अन्य प्रश्न बनाए जा सकते हैं ताकि बच्चे किसी भी तरीके से पूछने पर प्रश्नों के उत्तर दे सकें। तभी रटकर उत्तर याद करने के स्थान पर समझकर दक्षता विकास सम्भव हो सकता है। पुस्तक के अन्त में प्रारूप प्रश्न पत्र दिया गया है। यह भी सुझावात्मक है इससे शिक्षकों को प्रश्न पत्र बनाने में सुविधा होगी।

आशा है यह पुस्तक आपकी कसौटी पर खरी उतरेगी। भाषा शिक्षण को प्रभावी बनाने की दृष्टि से पुस्तक के सम्बन्ध में आपके बहुमूल्य सुझाव सदैव आमन्त्रित हैं।

संचालक

मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल

भाषा न्यूनतम अधिगम स्तर पाठ्यचर्या

क्र.	अधिगम क्षेत्र	अधिगम प्रतिफल
1.	सुनना	1.4.1 परिचित परिस्थितियों में दिए गए सरल भाषणों को सुनकर समझ सकेंगे। 1.4.2 अपरिचित परिस्थितियों में हुए वार्तालाप एवं संवाद को समझ सकेंगे। 1.4.3 किसी क्रिया को सम्पन्न करने के लिए एक के बाद एक दिए गए मौखिक निर्देशों को समझ सकेंगे।
2.	बोलना	2.4.1 बिना रुके स्वाभाविक रूप से बोल सकेंगे। 2.4.2 प्रभावशाली ढंग से कविता पाठ कर सकेंगे। 2.4.3 अपरिचित वस्तुओं के विषय में वर्णन कर सकेंगे। 2.4.4 कक्षा में होने वाली सहज चर्चा में भाग ले सकेंगे।
3.	पढ़ना	3.4.1 कार्टून, कामिक्स और पोस्टर पढ़ सकेंगे। 3.4.2 हाथ के लिखे हुए पत्रों को पढ़ सकेंगे। 3.4.3 बाल पत्रिकाएँ पढ़ सकेंगे।
4.	लिखना	4.4.1 साफ-साफ और स्पष्ट लिख सकेंगे। 4.4.2 सरल विराम चिह्नों सहित श्रुतिलेखन कर सकेंगे। 4.4.3 निर्देशानुसार अनुच्छेदों और विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुये निबन्ध लिख सकेंगे।
5.	विचारों का बोधन	5.4.1 मौखिक अथवा लिखित सामग्री में व्यक्त विचारों एवं घटनाओं के बीच सरल कार्य कारण सम्बन्धों को पहचान सकेंगे। 5.4.2 किसी सामग्री को सुनने अथवा पढ़ने के पश्चात "क्योंकि" "चूंकि" का प्रयोग करते हुए प्रश्नों का उत्तर दे सकेंगे।
6.	व्यावहारिक व्याकरण	6.4.1 वाक्य रचना के सामान्य प्रयोग सम्बन्धी नियमों को समझ सकेंगे।
7.	स्व-अधिगम	7.4.1 जहाँ उपलब्ध हों वहाँ बाल शब्द कोश का प्रयोग कर सकेंगे।
8.	भाषा प्रयोग	8.4.1 औपचारिक एवं अनौपचारिक भाषा के भेद को समझ सकेंगे।
9.	शब्दावली नियन्त्रण	9.4.1 पढ़कर समझने का लगभग 4,000 शब्दों का शब्द भण्डार अर्जित कर सकेंगे।

कालखण्ड विभाजन	अंक
पाठ्य पुस्तक आधारित पठन बोध, उच्चारण, मौखिक लिखित अभिव्यक्ति	80
व्यावहारिक व्याकरण	40
स्वतंत्र अभिव्यक्ति (पत्र, निबन्ध आदि रचना)	60
कुल	180

मूल्यांकन	अंक
पाठ्य पुस्तक आधारित (बोध प्रश्न भाषा अध्ययन)	52
व्यावहारिक व्याकरण	14
कविता की पंक्तियाँ तथा सारांश	10
स्वतंत्र अभिव्यक्ति (पत्र, निबन्ध चित्र देखकर लिखना)	24
कुल	100

विषय-सूची

पाठ 1

प्रार्थना

आइए सीखें – ● कविता का हाव–भाव एवं लय के साथ वाचन। ● कविता के भाव ग्रहण करना। ● कविता को कण्ठस्थ करना। ● समानार्थी एवं विलोम शब्दों की समझ।

आँख खोलकर सुबह–सुबह मैं मन में कहता हूँ,
प्रभु तेरा उपकार कि मैं भारत में रहता हूँ।
मेरी मातृभूमि है भारत, मैं भारत के योग्य बनूँ,
मातृभूमि की प्रकृति, पुरुष, पशु सबको अपना सगा गिनूँ।

शिक्षण संकेत– ● कविता का शुद्ध उच्चारण, लय एवं ताल के साथ आदर्श पाठ करें और बच्चों से भी करवाएँ। ● कविता के मुख्य भाव को सरल बातचीत के रूप में समझाएँ। ● प्रार्थना का महत्व बताते हुए उन्हें प्रतिदिन प्रार्थना करने हेतु प्रेरित करें।
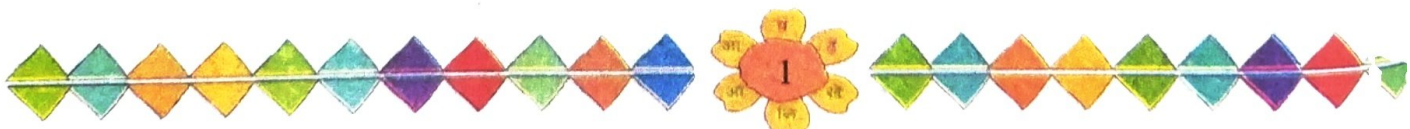
इनका दुख अपना दुख मानूँ इनके सुख को सुख अपना,
प्रभु ऐसा बल दो कि कर सकूँ पूरा बापू का सपना।
भारत के जल, पवन, अन्न, माटी में पलता हूँ,
प्रभु तेरा उपकार कि मैं भारत में रहता हूँ।

भवानी प्रसाद मिश्र मध्यप्रदेश के सुप्रसिद्ध साहित्यकार है। इनका जन्म सन् 1914 ई. में हुआ बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह 'कल्पना' पत्रिका के सम्पादक हो गये। उन्होंने 'आकाशवाणी' में भी कार्य किया। मिश्र जी का निधन सन् 1985 ई. में हो गया।

भवानीप्रसाद मिश्र

शब्दार्थ

उपकार – भलाई
मातृभूमि – जन्मभूमि
योग्य – लायक
अन्न – अनाज
बल – शक्ति, ताकत
पवन – हवा, वायु

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. इस कविता में कवि किसका उपकार मान रहा है?
2. कवि किसके योग्य बनना चाहता है?
3. कवि किन–किन को अपना सगा मानना चाहता है?
4. कवि किसके सपनों को पूरा करना चाहता है?

2. खाली स्थान भरिए –

1. प्रभु तेरा .... कि मैं भारत में रहता हूँ।
2. ....की प्रकृति, पुरुष, पशु सबको अपना सगा गिनूँ।
3. भारत के जल .... अन्न माटी में पलता हूँ।

3. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव लिखिए–

1. इनका दुख अपना दुख मानूँ इनके सुख को सुख अपना।
2. मेरी मातृभूमि है भारत मैं भारत के योग्य बनूँ।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य प्रयोग कीजिए–

शब्द	वाक्य प्रयोग
(क) उपकार	____________________
(ख) सपना	____________________
(ग) मातृभूमि	____________________
(घ) पवन	____________________
(ङ) माटी	____________________

2. समान अर्थ वाले शब्दों की जोड़ी बनाइए–

आँख	ईश्वर
प्रभु	वायु
पवन	प्रातः
सुबह	पानी
जल	नयन

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द छाँटकर लिखिए–

दुःख	अयोग्य	पराया	शाम

शब्द	**विलोम शब्द**
अपना	______________
सुख	______________
सुबह	______________
योग्य	______________

योग्यता विस्तार

- मातृभूमि का महत्व बताने वाली अन्य कविताओं को ढूँढ़कर कक्षा में सुनाइए।
- इस कविता को प्रार्थना के समय सामूहिक रूप से गाइए।

इकस
नगर
ने ज
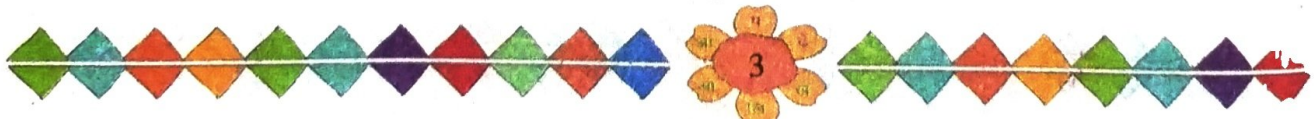
पाठ 2

गुरुदेव

आइए सीखें – ● चित्रकथा पढ़ना। ● मौन वाचन करना। ● महापुरूषों की जीवनी से परिचित होना। ● शुद्ध वाक्य लिखना। ● शब्द युग्म, विलोम तथा समानार्थी शब्दों को जानना।

(1)

7 (सात) मई सन् 1861 (अट्ठारह सौ इकसठ)। बंगाल के कलकत्ता (कोलकाता) नगर में एक प्रतिष्ठित परिवार में एक बालक ने जन्म लिया।

(2)

धीरे–धीरे रवीन्द्र बड़ा होने लगा। बचपन में रवीन्द्रनाथ को सभी रवि कहकर बुलाते। रवि ने शिक्षा के साथ–साथ धार्मिक संस्कार भी प्राप्त किए।
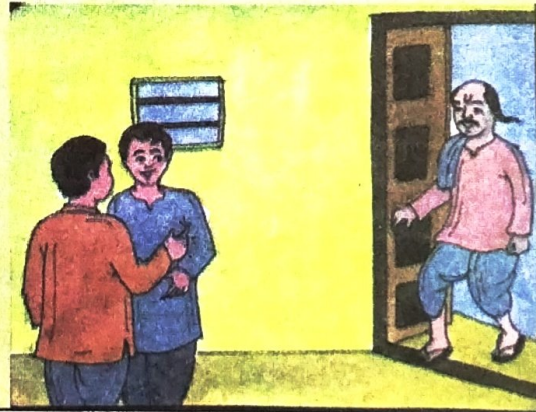
शिक्षण संकेत – ● चित्रों और उनके ऊपर दिए गए वर्णन के आधार पर रवीन्द्रनाथ ठाकुर के जीवन से परिचित कराएँ। ● चित्रकथा समझने और पढ़ने का ढंग बताकर चित्रों पर बातचीत करवाएँ।

(3)

(4)

(5)

रवीन्द्र गाते भी अच्छा थे। घर वाले उन्हें कोकिल कण्ठी कहते थे।

रवि का गला कोयल की तरह सुरीला है।

इसकी, चित्रकला नाटक और संगीत में भी विशेष रुचि है।

(6)

(7)

शान्ति निकेतन श्री द्रेवेन्द्र नाथ द्वारा बनाया गया एक छोटा सा स्थान था।

(8)

बड़े होने पर रवीन्द्रनाथ उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैण्ड गए पर वे वहाँ से जल्दी लौट आए।

(9)

उन्होंने सन् 1901 (उन्नीस सौ एक) में शान्ति निकेतन में विद्यालय खोला जहाँ बच्चे स्वतन्त्रतापूर्वक प्राकृतिक वातावरण में ज्ञान प्राप्त करने लगे।
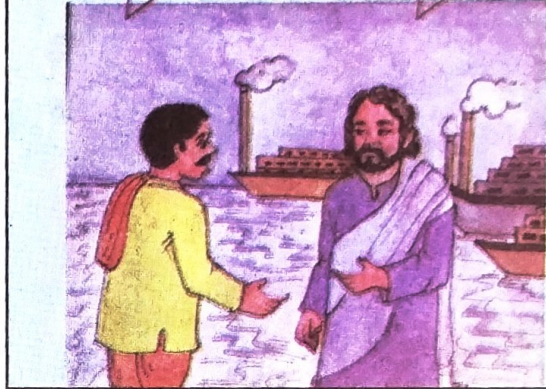
(10)

महात्मा गांधी उन्हें गुरुदेव कहते थे। शान्ति निकेतन के छात्र व अध्यापक भी उन्हें गुरूदेव कहते। वे गुरूदेव के नाम से ही प्रसिद्ध हो गए।
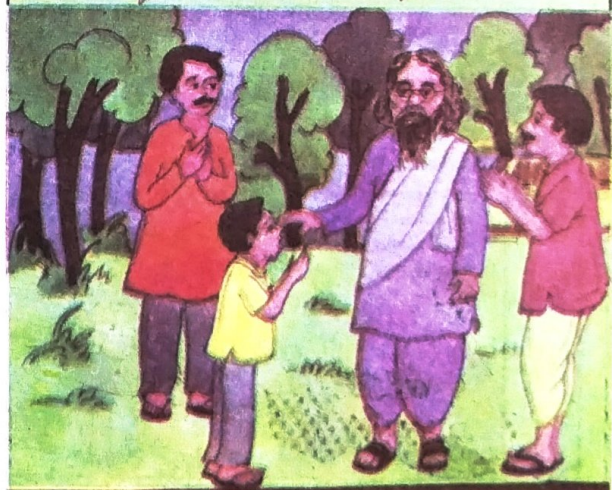
(11)

(12)

(13)

इंग्लैण्ड के सम्राट ने उन्हें 'सर' की उपाधि दी पर सन् 1919 (उन्नीस सौ उन्नीस) में जलियाँवाला काण्ड से दुखी होकर उन्होंने उसे लौटा दिया।

अंग्रेजों ने निर्दोष लोगों की हत्या की है। मैं 'सर' की उपाधि लौटा रहा हूँ।

(14)
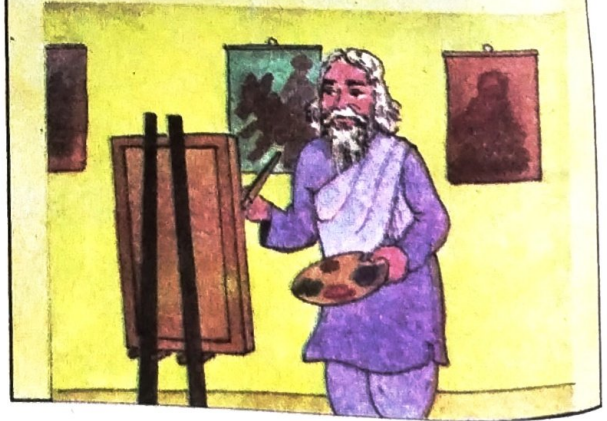
(15)

(16)

● **शान्ति निकेतन** – महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा स्थापित एक आश्रम जहाँ गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा विद्यालय और विश्व भारती संस्था की स्थापना की गई। यह पश्चिम बंगाल में बोलपुर नामक स्थान पर है।

● **नोबेल पुरस्कार** – डायनामाइट के आविष्कारक स्वीडन के महान वैज्ञानिक अल्फ्रेड नोबेल की वसीयत के अनुसार 'नोबेल फाउंडेशन' संस्था द्वारा भौतिकी, रसायन, चिकित्सा, साहित्य, शांति और अर्थशास्त्र के लिए सर्वश्रेष्ठ काम करने वालों को प्रति वर्ष यह पुरस्कार दिया जाता है। इसकी वर्तमान राशि लगभग 5 (पाँच) करोड़ रूपए है।

● **जलियाँवाला काण्ड** – सन् 1919 (उन्नीस सौ उन्नीस) में अमृतसर के जलियाँवाला बाग में अंग्रेजों के विरोध में शान्तिपूर्वक सभा कर रहे सैकड़ों लोगों पर अंग्रेजों ने गोलियाँ चलाईं जिससे सैकड़ों निर्दोष लोग मारे गए।

● **रवीन्द्र संगीत** – गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा अपने लिखे गीतों की धुन स्वयं बनाई थी, उसे रवीन्द्र संगीत कहा जाता है।

शब्दार्थ

प्रतिष्ठित–सम्मानित, प्रतिष्ठा प्राप्त। संस्कार–श्रेष्ठगुण। कथा–कहानी। वृद्ध–बूढ़ा। प्रकृति–संसार और उसके समस्त पदार्थ। कोकिल कण्ठी–जिसकी आवाज कोयल जैसी मीठी और मधुर हो। प्रकाशित होना–छपना। सुरीला–मधुर। रुचि–लगाव। प्रान्त–राज्य। विभाजन–बँटवारा। निर्दोष–जिसका दोष न हो। प्रसिद्ध–नामी, विख्यात। एशियाई–एशिया महाद्वीप में रहने वाला। काण्ड –घटना। शैली–तरीका। संगीतज्ञ–संगीतकार, संगीत जानने वाला।

अभ्यास

1. बोध प्रश्न

1. नीचे लिखे प्रश्नों के चार–चार सम्भावित उत्तर दिए गए हैं। सही उत्तर पर सही का चिह्न (✓) लगाइए–

(1) रवीन्द्रनाथ ठाकुर (टैगौर) का जन्म कहाँ हुआ था?

(क) दिल्ली (ख) कोलकाता (कलकत्ता)

(ग) कानपुर (घ) इलाहाबाद

(2) बालक रवि ने अपनी पहली कविता किस उम्र में लिखी थी?

(क) 7 वर्ष (ख) 15 वर्ष

(ग) 10 वर्ष (घ) 12 वर्ष

(3) रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपना विद्यालय किस स्थान पर खोला था?

(क) श्रीकान्त निकेतन (ख) परमार्थ निकेतन

(ग) शान्ति निकेतन (घ) प्रशान्त निकेतन

(4) रवीन्द्रनाथ ठाकुर को गुरुदेव का सम्बोधन सबसे पहले किसने दिया था?

(क) जवाहरलाल नेहरु (ख) सरदार वल्लभ भाई पटेल

(ग) महात्मा गाँधी (घ) सुभाष चन्द्र बोस

(5) रवीन्द्रनाथ ठाकुर उच्च शिक्षा प्राप्त करने किस देश में गए थे?

(क) पोलैण्ड (ख) न्यूजीलैण्ड

(ग) हालैण्ड (घ) इंग्लैण्ड
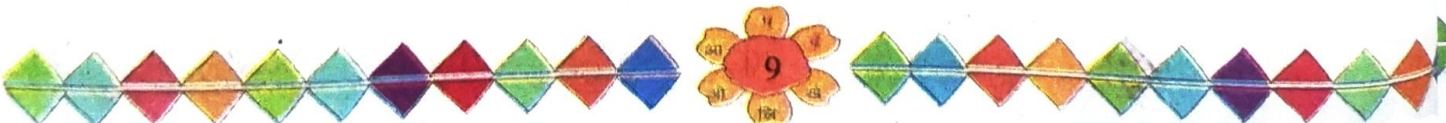
2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(क) रवीन्द्रनाथ को ———— पुस्तक पर नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। (गीतांजलि, श्रद्धांजलि)

(ख) रवीन्द्रनाथ को ———— से बहुत प्यार था। (सम्पत्ति, प्रकृति)

(ग) रवीन्द्रनाथ को सभी सम्मानपूर्वक ———— कहकर पुकारते थे। (रवि, गुरुदेव)

(घ) गुरुदेव ने ———— संगीत की रचना की। (रवीन्द्र, कवीन्द्र)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

(क) रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(ख) रवीन्द्र को 'कोकिल कण्ठी' क्यों कहते थे?

(ग) देवेन्द्रनाथ जी अपने बेटे को कहाँ ले गए?

(घ) शान्ति निकेतन विद्यालय की क्या विशेषता थी?

(ड) गुरुदेव का कौन सा गीत 'राष्ट्रगान' बना?

भाषा अध्ययन

1. नीचे कुछ वाक्यों को अलग–अलग भागों में लिखा गया है। उन्हें मिलाकर शुद्ध वाक्य लिखिए–

(क)	पर उन्हें	गीतांजलि	मिला	नोबेल पुरस्कार
(ख)	सभी रवीन्द्रनाथ	बुलाते थे।	को बचपन में	रवि कहकर
(ग)	खोला	उन्होंने	शान्ति निकेतन में	एक विद्यालय
(घ)	उन्होंने चित्र	आयु में	साठ वर्ष की	बनाना शुरू किया।

शुद्ध वाक्य

1. ————————————————

2. ————————————————

3. ————————————————

4. ————————————————

2. 'मान–सम्मान' दोनों युग्म शब्द हैं। इसी प्रकार साथ–साथ आने वाले कुछ शब्द नीचे लिखे हैं, उनको सही शब्द के साथ जोड़कर लिखिए।

कलाप काज भरा सज्जा खुशी दुलार

क्रिया ---------- हरा ---------- काम ----------

हँसी ---------- साज ---------- प्यार ----------

3. नीचे लिखे शब्दों के विलोम (उल्टे अर्थ वाले) शब्द छाँट कर लिखिए।

उधर	खोटा	बुराई	दुःख	गोरा	अचल

जैसे– इधर – उधर

खरा – ----------

अच्छाई – ----------

सुख – ----------

चल – ----------

काला – ----------

4. नीचे लिखे शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए–

प्रेम – ----------

विद्यालय – ----------

आयु – ----------

पुत्र – ----------
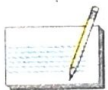
योग्यता विस्तार –

- गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।
- गुरुदेव चित्रकथा के आधार पर रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जीवनी अपने शब्दों में लिखिए।
- अन्य महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़िए और उन पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
- नोबेल पुरस्कार प्राप्त भारतीयों की सूची बनाइए।
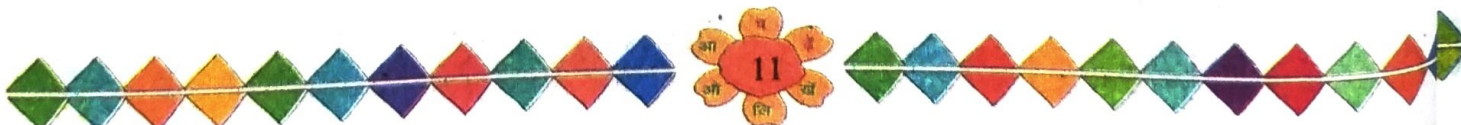
पाठ 3

सीखो

आइए सीखें –

● कविता को लय एवं हाव–भाव के साथ पढ़ना। ● प्रकृति से मानवीय गुणों की समझ। ● कल्पनाशक्ति का विकास। ● समानार्थी शब्द, तुकान्त शब्द की समझ।

फूलों से नित हँसना सीखो,
भौरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से,
नित सीखो शीश झुकाना।
सीख हवा के झोंकों से लो,
कोमल भाव बहाना।
दूध और पानी से सीखो,
मिलना और मिलाना।
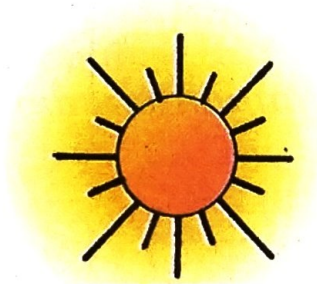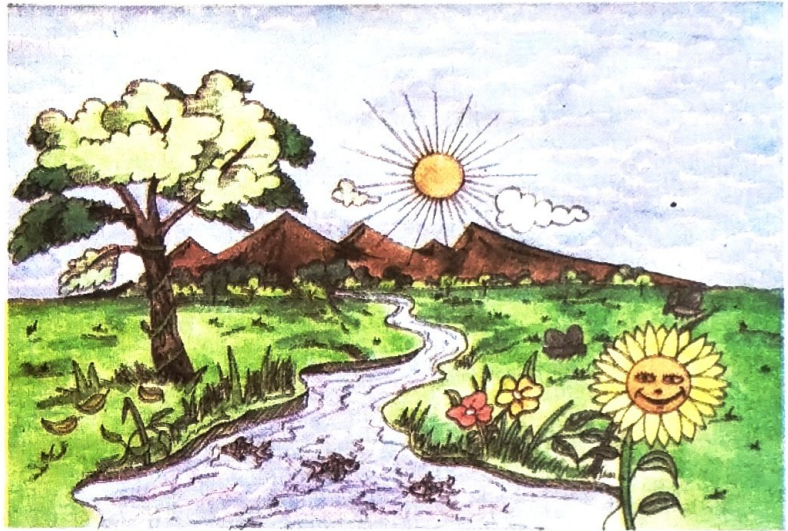
सूरज की किरणों से सीखो,
जगना और जगाना।
लता और पेड़ों से सीखो,
सबको गले लगाना।

शिक्षण संकेत– कविता के माध्यम से समान अनुभूति, सेवा भाव और सद् व्यवहार का विकास करें। कविता का हाव भाव, सुर, ताल व लय के साथ एकल तथा सामूहिक पाठ कराएँ। इसी प्रकार की अन्य कविता भी सुनाएँ।

मछली से सीखो,

स्वदेश के लिए तड़पकर मरना।

पतझड़ के पेड़ों से सीखो,

दुःख में धीरज धरना।

दीपक से सीखो जितना,

हो सके अंधेरा हरना।

पृथ्वी से सीखो प्राणी की,

सच्ची सेवा करना।

जलधारा से सीखो आगे,

जीवन पथ में बढ़ना।

और धुएँ से सीखो हरदम,

ऊँचे ही पर चढ़ना।
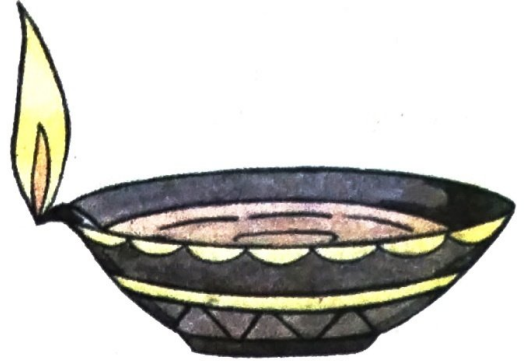
श्रीनाथ सिंह का जन्म 1901 (उन्नीस सौ एक) में हुआ था। इन्होंने अनेक उपन्यास और कहानियों की पुस्तके लिखी। बच्चों के लिये उन्होंने बड़े सुन्दर बालगीत लिखे है। 'गुब्बारा', 'दोनो भाई', 'बाल भारती', 'लंपा चंपा', 'मीठी ताने', 'दिपहरी', तथा 'बाल कवितावली' आदि उनके बाल गीतो के कई संग्रह प्रकाशित हो चुके है।

— **श्रीनाथ सिंह**

शब्दार्थ

नित – हमेशा, सदा। तरु – पेड़, वृक्ष। कोमल भाव – मधुर भावना। लता – बेल। स्वदेश – अपना देश। पतझड़ –पत्तों का झड़ना, एक मौसम जिसमें पत्ते झड़ते हैं। धीरज – धैर्य, सब्र। हरना – दूर करना, मिटाना। पृथ्वी – धरती। प्राणी – जीव। पथ – राह। जलधारा– पानी की बहती हुई धार।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. लता और पेड़ों से क्या सीख मिलती है?
2. स्वदेश के लिए तड़पकर मरने से कवि का क्या आशय है?
3. सच्ची सेवा की भावना किससे मिलती है?
4. धुँआ हमें क्या सिखाता है?

2. सही उत्तर चुनिए और सही का चिह्न लगाइए–

1. फूलों से क्या सीखना चाहिए?

(क) चिल्लाना (ख) रोना

(ग) हँसना (घ) सोना

3. कौन क्या सिखाता है, बताइए?

जैसे– अँधेरा हरना – दीपक

(क) स्वदेश के लिए मरना – ____________________

(ख) आगे बढ़ना – ____________________

(ग) दुःख में धीरज रखना – ____________________

(घ) सबको गले लगाना – ____________________

(ङ) सेवा करना – ____________________

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए–

शीश, शीशम, शील, शीतल,

किरण, गण, तृण, प्राणी, ऋण, रण,

पतझड़, झाड़, झाड़ी, झड़प

2. निम्नलिखित शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द लिखिए–

जैसे:–तरु – पेड़ वृक्ष

फूल ---- ---

पानी ---- ---

हवा ---- ---

3. आपस में चर्चा कीजिए और लिखिए–

(क) सूरज नहीं निकलता तो ---------------

(ख) बादल रंग–बिरंगे होते तो ---------------

(ग) पेड़–पौधे चलते–फिरते तो ---------------

(घ) हवा दिखाई देती तो ---------------

4. आम के चित्र में कुछ शब्द छिपे हैं, उदाहरण के अनुसार उन्हें खोजकर लिखिए।

कच्चा – कच्ची

नन्हीं –

अच्छा –

खट्टा –

डंडा –

पक्का –
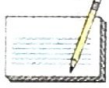
योग्यता विस्तार –

1. रंग–बिरंगी तितलियों के चित्र संग्रह कर एलबम में सजाइए।
3. बाग–बगीचे में जाकर तरह–तरह के फूल और पत्तियों का संग्रह कर एलबम में लगाइए।
4. फूल का चित्र बना कर उसमें रंग भरिए।

इस कविता को गाकर सुनाइए–

फूल कहीं जो मैं बन जाता।
खुशबू अपनी खूब लुटाता।।
तितली को मैं पास बुलाता।
भँवरे के संग–संग मैं गाता।।
रंगों–सी मुस्कान छोड़ता।
फिर कोई न मुझे तोड़ता।।
कई नाम मेरे हो जाते।
'पुष्प' 'सुमन' या 'कुसुम' कहाते।।

पाठ 4

गुलाबजामुन

आइए सीखें –

- कहानी का हाव–भाव के साथ वाचन। ● विशेषण शब्दों की पहचान।
- भाववाचक संज्ञा बनाना। ● विस्मय बोधक चिह्न का प्रयोग।

रम्मू की प्रिय मिठाई है गुलाबजामुन। रस से भरे गुलाबजामुन रम्मू को बहुत अच्छे लगते हैं। रम्मू गुलाबजामुन का इतना शौकीन है कि गुलाबजामुन खाकर और रस पीकर वह पुरवे को जीभ से चाट डालता है। पुरवे में रस का इतना भी अंश नहीं रहता कि चींटियाँ भी लग सकें ।

रम्मू की बुआजी को भी गुलाबजामुन अच्छा लगता है । वे फूफाजी के साथ चौक घूमने गईं तो और सामान के साथ गुलाबजामुन भी लाईं। गुलाबजामुन लाकर उन्होंने रम्मू की माँ को दिए और बोलीं – "भाभीजी, ये गुलाबजामुन हैं। बच्चों को दे दीजिए, और आप भी ले लीजिए। अम्मा जी को भी दे दीजिए। मैं अभी नहीं लूँगी, इच्छा नहीं है।"

रम्मू की माँ ने गुलाबजामुन ले लिए। गुलाबजामुन बहुत थे। रम्मू की माँ बोलीं– "बहन जी, आप इतना सामान क्यों ले आती हैं?"

रम्मू की बुआजी मुस्कराकर बोलीं– "बच्चों के लिए लाई हूँ और मुझको भी तो गुलाबजामुन बहुत अच्छे लगते हैं।"

रम्मू की माँ ने सबसे पहले गुलाब जामुन रम्मू की दादी को दिए। दादी ने पहले तो गुलाबजामुन नहीं लिए, पर जब अधिक आग्रह किया तो एक गुलाबजामुन ले लिया।

दादी के बाद एक–एक गुलाबजामुन बच्चों को दिया गया। बचे हुए गुलाबजामुन जो

काफी थे, रम्मू की माँ ने एक डिब्बे में रख दिए और डिब्बा चौके में बने टाँड़ पर रख दिया। टाँड़ पर अनेक डिब्बे थे– दो–दो किलो वाले, चार–चार किलो वाले। उन्हीं के बीच में उन्होंने गुलाबजामुन का डिब्बा भी रख दिया।

रम्मू ने माँ को डिब्बे में गुलाबजामुन डालते देखा। फिर वह खेलने बाहर चला गया।

इन्हें भी जानें–

पुरवा–कुल्हड़, टाँड़–ऊँचाई पर सामान रखने के लिए बनाया गया स्थान, शौकीन–रूचि रखने वाला, चौका–रसोई बनाने का स्थान।

अब बताइए–

1. रम्मू को कौन–सी मिठाई अधिक पसन्द थी?
2. तुम्हें कौन सी मिठाई पसन्द है?

शाम होने में अभी तीन घण्टे की देर थी। रम्मू की बुआ जी ने कहा– "भाभीजी, चलिए ताऊजी के यहाँ हो आएँ। ताऊजी और ताईजी से दो साल से भेंट नहीं हुई है।"

"चलिए मैं भी दो महीने से उनके यहाँ नहीं गई। उनसे मिलने की मेरी भी बड़ी इच्छा है।" रम्मू की माँ ने कहा।

इधर दोनों ताऊजी के यहाँ गईं और उधर रम्मू के मन की हो गई। बात यह थी कि रम्मू को केवल एक गुलाबजामुन मिला था। रम्मू चाहता था कि उसे कम से कम तीन–चार गुलाबजामुन मिलते, तब उसकी इच्छा पूरी होती। जब माँ और बुआजी ताईजी के यहाँ गईं तो वह बहुत प्रंसन्न हुआ। उसने सोचा कि अब वह डिब्बे से दो–तीन गुलाबजामुन और निकालकर खा लेगा। उसका बड़ा भाई भी किसी मित्र के यहाँ गया था। पिताजी छह बजे के पहले दफ्तर से आने वाले नहीं थे। इस तरह वह घर में अकेला था।

जाते हुए माँ ने कहा– "रम्मू, घर देखना। मैं बुआजी के साथ ताईजी के यहाँ जा रही

शिक्षण संकेत– ● पाठ में आए क्षेत्रीय शब्दों (बोली) के मानक शब्द बताएँ। ● पारिवारिक रिश्तों के नामों से परिचित कराएँ। ● दूसरी मिठाइयों के बारे में बताएँ।

हूँ। हमें ढाई–तीन घण्टे लगेंगे। तुम घर में ही रहना, कहीं मत जाना।"

"अच्छा माँ, आप जाइए। मैं घर में ही रहूँगा। कहीं नहीं जाऊँगा।" रम्मू बोला। वह यही चाह रहा था कि ये लोग जल्दी से जल्दी जाएँ और वह चौके में जाकर गुलाबजामुन उड़ाए।

इन्हें भी जानें–

ताऊजी–पिताजी के बड़े भाई। ताईजी–ताऊजी की पत्नी। दफ्तर–कार्यालय। उड़ाए–खाए। (पाठ के सन्दर्भ में)

अब बताइए–

1. अपने आसपास बनने वाली मिठाइयों के नाम बताओ।
2. कौन सी मिठाई किस चीज से बनती है पता करो।

रम्मू की माँ और बुआजी इधर गली में गईं और उधर रम्मू के मन की हो गई। वह अन्दर आया और उसने चौके का दरवाजा खोला।

चौके में टाँड़ पर उसने दृष्टि डाली बीस डिब्बे एक नाप के सजे हुए थे–एक के बाद एक, नए–नए। उसने पहला डिब्बा उठाया। वह बहुत हल्का लगा। फिर भी सोचा कि शायद इसी में गुलाबजामुन होंगे। डिब्बा खोल डाला। पर उस डिब्बे में मिर्च की बुकनी थी। खुलते ही उसको ऐसी धाँस लगी कि चार–पाँच छींकें एक साथ आ गईं। उसने डिब्बा बन्द करके वहीं रख दिया। रम्मू ने अब दूसरा डिब्बा उठाया किन्तु जब दूसरा डिब्बा खोला और जैसे ही उसमें हाथ डाला तो उसका हाथ मैदा से सन गया।

अब तीसरे डिब्बे की बारी थी। तीसरे डिब्बे में चीनी रखी थी। गुलाबजामुन इसमें भी नहीं मिले। रम्मू खीझ उठा। उसे बड़ा गुस्सा आया। डिब्बों में यदि कुछ अन्तर होता तो वह डिब्बे को पहले ही पहचान लेता और इतनी परेशानी नहीं होती। वह तीन डिब्बे खोल चुका था, पर गुलाबजामुन किसी डिब्बे में नहीं मिले।

रम्मू ने चौथा डिब्बा उठाकर खोला। उसमें मूँग की दाल थी। अब वह बहुत परेशान होने लगा। फिर उसने बड़ी आशा से पाँचवाँ डिब्बा खोला तो खीझ कर रह गया। उसमें खड़ी हल्दी की गाँठें रखी थीं।

रम्मू ने हार नहीं मानी, क्योंकि गुलाबजामुन किसी न किसी डिब्बे में ही थे। रम्मू को करीब आधा घण्टा डिब्बे खोलने में लग चुका था, उधर उसकी माँ और बुआजी वापस लौट आईं, क्योंकि ताईजी घर पर नहीं थीं। उनके घर के दरवाजे पर ताला लटक रहा था।

जब वे घर में घुसीं और चौके में पहुँचीं तो खीझा हुआ रम्मू सातवाँ डिब्बा खोल रहा था। उस डिब्बे पर उसे पूरा भरोसा था कि इसी में गुलाबजामुन होंगे। उसने तुरन्त अन्दर हाथ डाल दिया। इस डिब्बे में सरसों का तेल था। पूरा हाथ तेल में डूब गया। ज्यों ही डिब्बे में से हाथ निकाला कि रम्मू ने सामने माँ और बुआजी को खड़ा पाया।

हाथ तेल से तर था। जमीन पर तेल चू रहा था। बुआजी मुस्करा रहीं थीं और माँ गुस्से में थीं। रम्मू कुछ सोच नहीं पा रहा था कि क्या करे। आखिर गुस्से में भरी माँ बोलीं – ''चौके में क्या कर रहे थे? तेल के डिब्बे में हाथ क्यों डाला?''
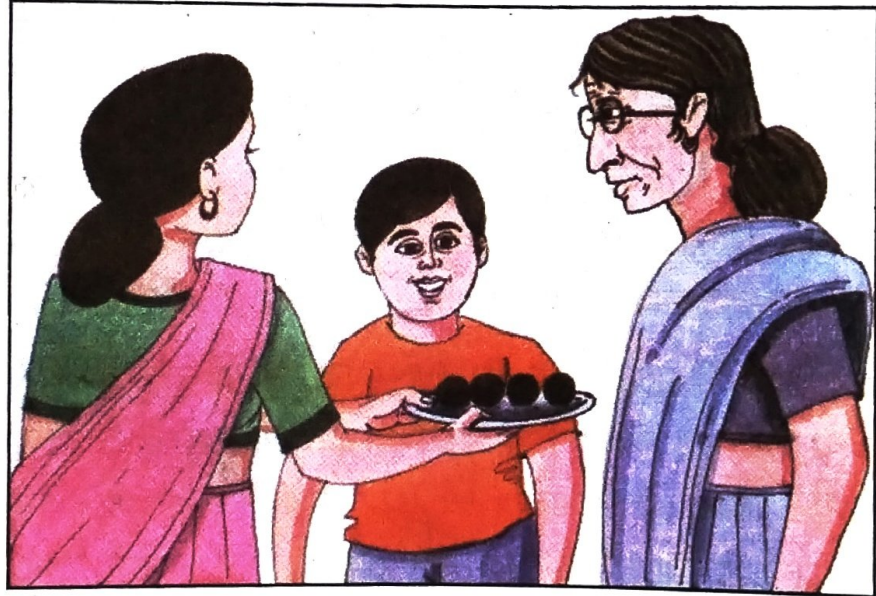
''मैं ..... मैं ..... मैं कुछ नहीं कर रहा था माँ..... डिब्बे में ..... डिब्बे में मेरा हाथ अपने आप चला गया।'' रम्मू डरते हुए बोला।

बुआजी रम्मू की बात सुनकर जोर से हँस पड़ीं। माँ को गुस्सा तो बहुत आ रहा था, पर फिर भी शान्त होकर उन्होंने कहा– ''सूखे कपड़े से हाथ पोंछो और फिर जाकर साबुन से हाथ धोओ।''

शाम को जब सब लोग इकट्ठा हुए तो बुआजी के कहने पर बच्चों को एक–एक गुलाबजामुन फिर दिया गया और उनके कहने पर रम्मू को दो गुलाबजामुन दिए गए। उसके भाई और बड़ी बहन ने कोई आपत्ति नहीं की किन्तु रम्मू को दो गुलाबजामुन पाकर भी मन में

संकोच और पश्चाताप था।

यदि बुआजी और माँ न आतीं तो रम्मू को तीन डिब्बे और खोलने पड़ते, तब गुलाबजामुन मिलते। उसकी माँ गुलाबजामुन दसवें डिब्बे में रख गई थीं।

इन्हें भी जानें

खीझ–चिड़चिड़ापन या झल्लाहट। **आपत्ति**–विरोध। **पश्चाताप**–पछतावा।

अब बताइए–

1. आप रम्मू की जगह होते तो क्या करते?
2. क्या आपने कभी कोई ऐसा काम किया है जिससे आपको पश्चाताप हुआ हों।

डॉ. श्री प्रसाद बच्चों के कवि ही नहीं बाल साहित्य के समीक्षक है इनका जन्म 1932 (उन्नीस सौ बत्तीस) में आगरा के पारना ग्राम में हुआ था। बच्चों के लिये उनकी कविताए 'मेरा साथी घोड़ा', 'चिडियाघर की सैर', 'ताक धिना धिन', 'झिलमिल तारे', 'फूलो का गीत' कविता संग्रह लिखे है।

डॉ. श्री प्रसाद

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) रम्मू की माँ ने सबसे पहले गुलाबजामुन किसे दिया?

(ख) ताई जी के घर जाते समय माँ ने रम्मू से क्या कहा?

(ग) रम्मू चौके में क्या ढूँढ रहा था?

(घ) रम्मू की माँ और बुआ घर जल्दी वापिस क्यों आ गईं?

(ङ) रम्मू के मन में पश्चाताप क्यों था?

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द छाँटकर खाली स्थान में भरिए-

(क) रम्मू की बुआजी ——— से मिलने गईं। (ताऊजी, चाचाजी)

(ख) रम्मू की माँ ने गुलाबजामुन का डिब्बा ——— पर रख दिया। (टाँड,छत)

(ग) बुआजी और माँ न आतीं तो रम्मू को ——— डिब्बे और खोलने पड़ते। (दो, तीन)

(घ) दो गुलाबजामुन पाकर, रम्मू के मन में ——— था। (हर्ष, संकोच)

3. उदाहरण के अनुसार नीचे दी गई तालिका को पूरा कीजिए-

डिब्बों का क्रम	वस्तु का नाम	रम्मू को क्या हुआ
उदाहरण पहला	मिर्ची की बुकनी	धाँस लगना
दूसरा		
तीसरा		
चौथा		
पाँचवाँ		
छठवाँ		
सातवाँ		

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए-

(क) हट्टा, कट्ठा, पट्टा, खट्टा, ठट्ठा, गट्ठा,

(ख) गुस्सा, रस्सा, लस्सी, रस्सी

(ग) धक्का, कच्चा, सच्चा, छक्का, चम्मच, रम्मू

(घ) डिब्बा, नब्बे, मुरब्बा

2. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए-

(क) दुकानदार के यहाँ रस भरी जलेबियाँ हैं। ———

(ख) मीठा पान अच्छा लगता है। ———
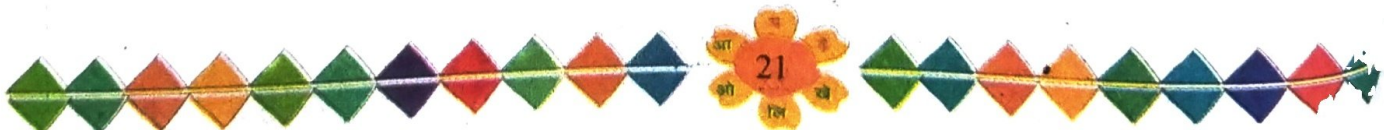
(ग) मेले में हजारों व्यक्ति थे। ____________

(घ) अनु बहुत नटखट है। ____________

3. सही जोड़ी बनाइए—

गुण	धार्मिक
हठ	गुणी
झगड़ा	मूल्यवान
फुर्ती	झगड़ालू
धर्म	फुर्तीला
मूल्य	हठी

4. यहाँ शेर और चूहा कहानी के अंश दिए गए हैं। उनमें रिक्त भाग की पूर्ति करके, कहानी पूरी कीजिए—

किसी जंगल ________ शेर ________ था

वहीं पास के एक __________ में चूहा ____________ था

एक दिन __________ सो रहा था।

चूहा ____________ ऊपर कूदने ____________।

शेर नींद से ___________ ।

उसने चूहे को ____________।

चूहा गिड़गिडाने ____________।

उसने कहा मुझे ________________।

मैं किसी दिन आपके ________________ ।

____________ ने उसे छोड़ दिया।

एक दिन __________ जाल में ____________ गया।

शेर दहाड़ने _________ । चूहे ने उसकी ____________ सुनी।

उसने अपने नुकीले ———————— से जाल ——————— दिया।

——————— ने चूहे को ————————— दिया।

5. **दिए गए शब्दों में 'पन' जोड़कर भाववाचक संज्ञा बनाइए—**

उदाहरण लड़का + पन = लड़कपन

अपना	————————————
भोला	————————————
बालक	————————————
पराया	————————————

6. **कोष्ठक में दिए गए विस्मय बोधक शब्दों को नीचे लिखे वाक्यों में जोड़कर लिखिए—**

(अहा, बाप—रे—बाप, अरे, हाय)

(क) ....! कितने मीठे गुलाबजामुन हैं।

(ख) ....! आप आ गए।

(ग) ....! कितनी सर्दी है।

(घ) ....! अब मैं क्या करूँ?
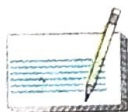
योग्यता विस्तार

- इस कहानी को अभिनय के रूप में प्रस्तुत कीजिए।
- अपनी पसन्द की मिठाइयों की सूची बनाइए।

पाठ 5

समय बड़ा अनमोल

आइए सीखें –

● समय का महत्व जानकर समय पर काम करने की प्रेरणा। ● महापुरुषों के प्रसंगों द्वारा समय के सदुपयोग की प्रेरणा। ● समान भिन्नार्थक शब्द। ● लिंग तथा वचन परिवर्तन तथा अनेक शब्दों या वाक्यांश के लिए एक शब्द की समझ।

शिवनारायणजी गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। बच्चों से उन्हें बहुत लगाव है। प्यार से सभी बच्चे उन्हें दादाजी कहते हैं। दादाजी बच्चों को तरह तरह की कहानियाँ सुनाते, पहेलियाँ बुझाते। बच्चे भी उनसे प्रश्न करते और आनन्दित होते। हर रविवार की तरह इस बार भी बच्चे दादाजी के घर के सामने बने बगीचे में बैठे थे।

दादाजी आज अपनी बात शुरू कर पाते इससे पहले ही सुबोध बोल पड़ा– दादाजी! बड़े भैया दीदी से पूछ रहे थे कि ऐसी कौन सी वस्तु है जो सबसे अमूल्य है, आप बताइए न!

दादाजी – अच्छा! सौरभ तुम ही बताओ इस प्रश्न का उत्तर।

सौरभ – (सोचकर) सोना–चाँदी।

दादाजी – और सोच कर सही बताने का प्रयास करो।

सौरभ– अच्छा, मुझे सोचने दो। वह चीज तरल है या ठोस।

दादाजी– न तरल है न ठोस।

सुबोध – तो मैं बताता हूँ फिर तो वह हवा ही होगी।

दादाजी– अच्छा! मैं संकेत देता हूँ, बताओ तो जानें! वह एक बार निकल जाने के बाद दोबारा नहीं आता। (सब चुप हो जाते हैं। बच्चों की स्थिति भाँप कर दादाजी स्वयं बताते हैं।)

शिक्षण संकेत – ● शिक्षक पाठ का आदर्श वाचन करें। ● समय के महत्व को बताने वाली कुछ और घटनाएँ बच्चों को सुनाएँ।

दादाजी – वह वस्तु समय है। समय अमूल्य है, जिसकी कीमत नहीं चुकाई जा सकती। एक बार निकल जाने के बाद समय फिर से नहीं लौटता।

सुकृति – 'दादाजी! विद्यालय की दीवार पर एक वाक्य लिखा है, 'जो समय को नष्ट करता है, उसे समय नष्ट कर देता है' इसका क्या आशय है?

दादाजी– इसका अर्थ है, जो व्यक्ति समय का सदुपयोग नहीं करते, वे अपने जीवन में पिछड़ जाते हैं। उनका जीवन नष्ट हो जाता है।

सौरभ – इसी तरह दादाजी, जो बच्चे समय पर स्कूल पढ़ने नहीं जाते और व्यर्थ में इधर–उधर घूमकर समय नष्ट कर देते हैं, वे कक्षा में पिछड़ जाते हैं और बाद में पछताते हैं।

दादाजी – बिल्कुल ठीक। इसी को कहते हैं कि "अब पछताए होत का जब चिड़िया चुग गई खेत"। चिड़िया से याद आया कि चिड़ियाँ भी समय पर चहकने लगती हैं। मुर्गा सुबह, समय पर बाँग देता है।

सौरभ – दादाजी! सूरज भी तो समय से उदित होता है और समय से ही अस्त हो जाता है।

दादाजी ने सबको समझाते हुए बताया कि प्रकृति में होने वाली सभी घटनाएँ समय से होती हैं। समय से ही ऋतुएँ आकर अपना–अपना कार्य करती हैं।

दादाजी – अच्छा अब ऐसे महापुरूष का नाम बताओ जिसके जीवन में समय का बहुत महत्व रहा हो?

तराना – उसकी कोई पहचान बताएँ तो मैं उसका नाम बता दूँगी।

दादाजी – वे घड़ी हाथ में नहीं पहनते थे, कमर में लटकाते थे। उन्होंने बिना हथियार के स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी।

तराना – तब तो निश्चित ही वे महात्मा गांधी ही थे।

दादाजी – हाँ! एकदम ठीक पहचाना। महात्मा गांधी ही वे महापुरुष हैं जिनके जीवन में समय का बड़ा महत्व था। इससे सम्बन्धित उनके जीवन की एक घटना सुनाता हूँ।

सभी मिलकर– अवश्य, दादाजी!

दादाजी – सुनो, गांधी जी प्रतिदिन नियत समय पर प्रार्थना स्थल में जाकर प्रार्थना के बाद भाषण देते थे। एक बार उनके लिए ताँगा आने वाला था, परन्तु ताँगे वाला कोई दूसरी सवारी लेकर चला गया। गांधीजी बार–बार घड़ी की ओर देख रहे थे। एकाएक उन्होंने पास खड़े आश्रमवासी से कहा– "भाई! जल्दी से एक साइकिल मँगा दीजिए।" साइकिल आई, महात्माजी साइकिल पर सवार होकर शीघ्रता से सभा स्थल की ओर बढ़े। सभा स्थल पर पहुँच कर वे जल्दी से मंच पर जा पहुँचे। उन्होंने घड़ी पर दृष्टि डाली और फिर चैन की साँस ली। वह हाँफ रहे थे परन्तु उनके चेहरे पर सन्तोष था। उन्होंने ठीक समय पर भाषण आरम्भ कर दिया। ऐसे थे समय के पाबन्द हमारे महात्मा गांधी।

गांधीजी के इस प्रसंग को सुनाने के बाद दादाजी बच्चों को अपने कमरे में ले गए। जहाँ कई प्रकार के चित्रों, चार्टों, पुस्तकों का संकलन था। कुछ चित्र, चार्ट दीवार पर प्रदर्शित किए गए थे। दादाजी ने एक चित्र बच्चों को दिखाया, चित्र अद्भुत था। आकाश में उड़ते हुए व्यक्ति के पैरों में पंख लगे थे और चेहरा बालों से ढका हुआ था।

दादाजी– सोचो, यह चित्र उस वस्तु के बारे में है जो कभी लौटकर नहीं आती। जिसका गांधी जी के जीवन में भी बड़ा महत्व था।

सुकृति – वह तो समय ही था .... लेकिन यह पंख वाला व्यक्ति और चेहरा ढका हुआ ...... ठीक ठीक समझाइए न दादाजी।

दादाजी– -ठीक है। तो सुनो! यह व्यक्ति समय के रूप में दिखाया गया है। यह समय ही है जो व्यक्ति के सामने से बिना रुके निकल जाता है। समय के मूल्य को जानने वाले लोग उसे पहचान लेते हैं और अपना कार्य पूरा करते हैं। वे लोग जो समय को नहीं पहचान पाते, उनके सामने से समय निकल जाता है। समय अपना चेहरा इसीलिए छिपाए रहता है कि उसकी पहचान करने वाले ही उसका लाभ ले सकें। आई न बात समझ में।

सभी बच्चे दादाजी की बातें ध्यान से सुन रहे थे। तभी सुकृति ने दादाजी से कहा "दादाजी कोई ऐसी कविता सुनाइए ना जिससे समय का महत्व पता चल सके।"

दादाजी बोले– समय बड़ा बलवान होता है। समय को परखने वाला रंक से राजा और उपेक्षा करने वाला राजा से रंक हो जाता है। अतः हमें समय की गति और उसके स्वभाव को पहचानना चाहिए। अच्छा! सुनो कबीरदासजी का यह दोहा समय के महत्व को अच्छी तरह से स्पष्ट करता है।

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब ।

पल में परलय होयगी बहुरि करेगा कब ।।

दादाजी ने कहा– "हमें समय से ही जब सब काम करने हैं तो चलो! अब भोजन का समय हो गया है, भोजन करें।" सभी बच्चे प्रसन्नतापूर्वक अपने–अपने घर चल दिए।

शब्दार्थ

प्रतिष्ठित–सम्माननीय। भाँप कर – समझकर,। अमूल्य– जिसका मूल्य न हो। विचारक – विचार करने वाला। क्षणिक–क्षण भर। सदुपयोग– अच्छा उपयोग। व्यर्थ–बेकार चहकना– चिड़ियों का बोलना। उदित– निकलना, उदय होना। अस्त – डूबना। महापुरुष–अच्छे कार्य करने वाला महान पुरूष। आश्रमवासी– आश्रम में रहने वाला। चैन की साँस–सन्तोष अनुभव करना। रन्क–निर्धन, गरीब। बलवान– ताकतवाला। प्रगति– उन्नति, विकास। उपेक्षा–ध्यान न देना।

बोध प्रश्न

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

(क) ऐसी कौन सी वस्तु है जो सबसे अमूल्य है?

(ख) महात्मा गाँधी को भाषण देने साइकिल से क्यों जाना पड़ा?

(ग) समय की कीमत न जानने वाले व्यक्ति कैसे होते हैं?

(घ) वाक्य पूरा कीजिए।

(क) ———— रंक से राजा हो जाता है।

(ख) ———— राजा से रंक हो जाता है।

भाषा अध्ययन

1. **निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध उच्चारण कीजिए और अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखिए–**

प्रदर्शित, निवृत, भाँपकर, क्षणिक, ऋतु, आश्रमवासी

2. **निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

समय, सदुपयोग, सन्तोष, अद्भुत, अमूल्य

3. **दिए गए उदाहरण के अनुसार लिंग परिवर्तन करते हुए वाक्यों को पुनः लिखिए–**

उदाहरणः नौकर सब्जी लाता है। नौकरानी सब्जी लाती है।

1. राजा घूमने जाता है। ____________________
2. पुत्री बाजार जाती है। ____________________
3. पुजारी पूजा करता है। ____________________
4. गायिका गीत गाती है। ____________________

4. **नीचे लिखे गए शब्दों का अन्तर समझते हुए, उन्हें वाक्य में प्रयोग कीजिए–**

उदा.– बाग– बाँग

मेरे घर के पास एक बाग है।

मुर्गा सुबह बाँग देता है।

तागा – ताँगा

सास – साँस

पाव – पाँव

____

____

____

____

____

____

____

____

5. 'कक्ष' शब्द लगाकर नए शब्द बनाइए–
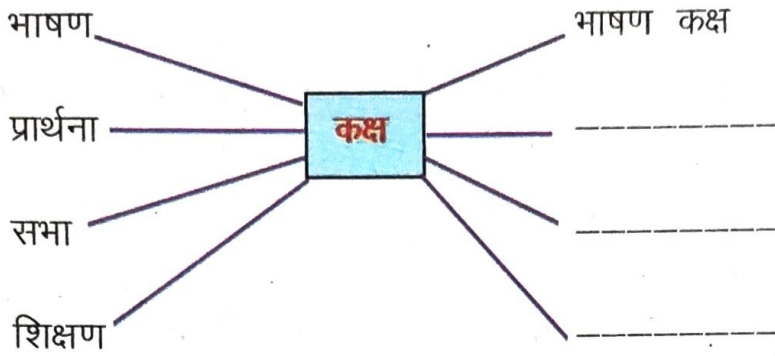
6. नीचे बनी तालिका में कुछ शब्द दिए हुए हैं। इनके सामने विलोम शब्द सही क्रम में नहीं है। उनकी सही जोड़ी बनाइए–

सुबह	सफेद	
ठोस	अवनति	__________
उदय	अहिंसा	__________
रंक	तरल	__________
काला	अस्त	__________
उन्नति	राजा	__________
हिंसा	शाम	__________

7. नीचे दी तालिका में निर्देशानुसार बहुवचन बनाइए–

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
लड़का	लड़के	नदी	नदियाँ
केला	______	पहेली	______
ताला	______	कहानी	______
बेटा	______	थाली	______
मुर्गा	______	नारी	______

8. वाक्यांश के लिए उनके सामने एक शब्द लिखिए–

(क) मन्दिर में पूजा करने वाला ________________

(ख) चित्र बनाने वाला ________________

(ग) गाँव में रहने वाला ________________

(घ) काम से जी चुराने वाला ________________

(ङ.) जो जन्म से अंधा है ________________

9. निम्नलिखित शब्दों में से हिन्दी और उर्दू के शब्दों का चयन कर उन्हें पृथक–पृथक लिखें–

प्रतिष्ठित, चेहरा, परेशान, अमूल्य, दंग, महत्व

हिन्दी	उर्दू
__________	__________
__________	__________
__________	__________
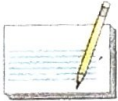
योग्यता विस्तार–

- अपना हर काम समय पर कीजिए और अपने मित्रों में इसकी चर्चा कीजिए।
- समय की पाबन्दी से क्या लाभ हैं सूची बनाइए।
- ऐसे आदर्श वाक्यों (कथनों) का संग्रह कीजिए जिनसे समय का महत्व ज्ञात होता है।

पाठ 6

मेरा एक सवाल

आइए सीखें –

● देश सेवा, प्रगति और सुरक्षा के प्रति सजगता। ● अभिनयात्मक शैली में गीत नाटिका की प्रस्तुति। ● देश की उन्नति, प्रगति में सभी का सहयोग समझना। ● तुकान्त शब्द, लिंग भेद एवं प्रेरणार्थक क्रिया समझना।

पात्र –

1. भारत माता
2. किसान
3. सैनिक
4. मजदूर
5. विद्यार्थी
6. शिक्षक

(सामने एक चौपाल है। वहाँ पर कुछ लोग बैठे हैं। तभी गीत की आवाज उभरती है)

चूँ–चूँ–चूँ–चूँ, चिड़ियाँ चहकीं।

मँह, मँह, मँह, मँह कलियाँ महकीं।

पूर्व दिशा में लाली घोली।

भारत माँ बच्चों से बोली।

(गीत की समाप्ति के साथ दरवाजा खुलता है। द्वार से भारत माता का प्रवेश)

शिक्षण संकेत – ● इस गीत नाटिका को अभिनयात्मक शैली में पढ़वाया जाए। ● कठिन शब्दों के अर्थ सन्दर्भानुसार स्पष्ट कराए जाएँ। ● इस कविता के द्वारा देश की प्रगति में सबकी सहभागिता की भावना का विकास करें।

भारतमाता–

कौन करेगा मेरा आँगन,
हरा–भरा खुशहाल?
कैसे सुलझाओगे, बोलो,
मेरा एक सवाल!

किसान –

हम खेतों में अन्न उगाकर,
कर देंगे खुशहाल!
माँ! हम हल से हल कर देंगे;
तेरा एक सवाल।
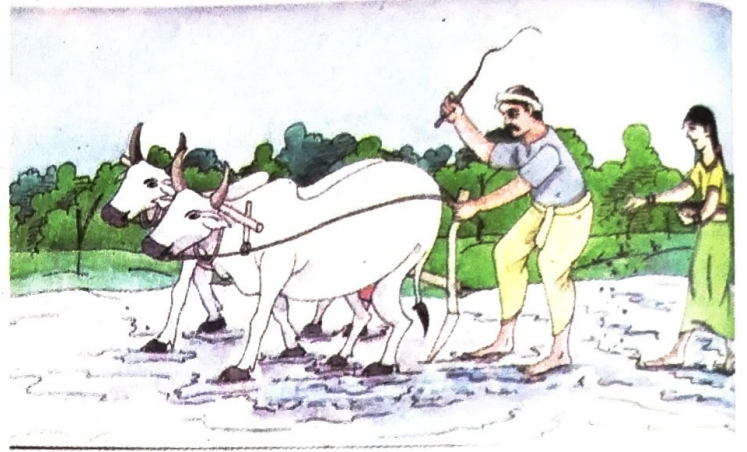
भारतमाता–

कौन करेगा मेरी रक्षा,
बोलो मेरे लाल?
कौन मुझे मजबूत करेगा,
मेरा एक सवाल!

सैनिक–

डटा रहूँगा मैं सीमा पर,
तेरा हूँ मैं लाल।
शत्रुदमन कर हल कर दूँगा,
तेरा एक सवाल।

शिक्षण संकेत– ● संयुक्ताक्षर एवं आधे अक्षरों वाले शब्दों का श्रुतलेखन करवाएँ। ● पाठ में आए उर्दू शब्दों के समानार्थी हिन्दी शब्द बताएँ।
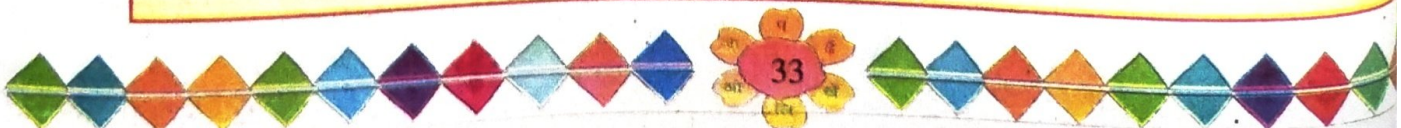
भारतमाता—

कौन करेगा करके मेहनत,

मुझको मालामाल?

कौन पसीना बहा सकेगा?

मेरा एक सवाल!

मजदूर—

हम उत्पादन बढ़ा, करेंगे

तुझको मालामाल।

करके मेहनत हल कर देंगे,

तेरा एक सवाल।

भारतमाता—

कौन ज्ञान विज्ञान सीखकर,

मेटेगा जंजाल?

कैसे मुझे मिलेगा गौरव,

मेरा एक सवाल!

विद्यार्थी —

हम पढ़—लिख कर्त्तव्य करेंगे

मेटेंगे जंजाल।

ज्ञान—दीप से हल कर देंगे,

तेरा एक सवाल।

शिक्षण संकेत— ● पाठ में आए पात्रों के साथ अन्य व्यक्तियों के कार्यों को समझाएँ तथा राष्ट्र के विकास में इनके महत्व को बताएँ।

भारतमाता–

कौन करेगा पढ़ा–लिखाकर,

सबको यहाँ निहाल?

ज्ञान और विज्ञान सिखाकर?

मेरा एक सवाल!

शिक्षक–

ज्ञान और विज्ञान सिखाकर,

सत्य आचरण ढाल।

पढ़ा लिखाक़र हल कर देंगे,

तेरा एक सवाल।

भारतमाता–

हिलमिलकर सब काम करेंगे,

सब होंगे खुशहाल।

सच बच्चों तुम हल कर दोगे,

मेरे सभी सवाल।

सब मिलकर

हम सब मिलकर काम करेंगे,

तेरे हैं हम लाल।

सदा करेंगे जग में ऊँचा,

माँ तेरा यह भाल।

भारतमाता की जय।

भारतमाता की जय।

शब्दार्थ

सुलझाना–हल करना। हल– कृषि कार्य में काम आने वाला एक यन्त्र। समाधान सुलझाना। लाल– बेटा, पुत्र। शत्रुदमन– शत्रुओं का नाश। मालामाल– धन सम्पत्ति से परिपूर्ण। पसीना बहाना– कठिन परिश्रम करना। उत्पादन– बनाना, निर्माण करना। मेटेगा– मिटाएगा, दूर करेगा। जंजाल–उलझन, परेशानी। गौरव–मान सम्मान। कर्तव्य– कार्य उत्तरदायित्व। ज्ञानदीप– ज्ञान का दीपक। निहाल– हर तरह से तृप्त करना, प्रसन्न करना, संतुष्ट। जग–संसार। भाल– मस्तक।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) किसान ने भारतमाता का सवाल किस तरह सुलझाने की बात कही?

(ख) ज्ञान का दीप जलाकर कौन सी समस्या हल करने की बात कही गई है?

(ग) उत्पादन कौन बढ़ाता है?

(घ) शिक्षक, भारत माता का सवाल कैसे हल करेंगे?

(ङ) भारत माता ने किस–किस से सवाल किए हैं? उनकी सूची बनाएँ।

2. सही उत्तर चुनकर लिखिए–

(1) सूरज उगते समय किस दिशा में लाली दिखाई देती है?

(क) पश्चिम में (ख) पूर्व में (ग) दक्षिण में (घ) उत्तर में

(2) देश की सीमाओं की रखवाली कौन करता है?

(क) मजदूर (ख) विद्यार्थी (ग) सैनिक (घ) किसान

भाषा अध्ययन

1. **निम्नलिखित शब्दों के उदाहरण के अनुसार अन्य शब्द लिखिए–**

ढोल–	बोल,	गोल,	मोल,	तोल
भाल–	----	----	----	----
हल–	----	----	----	----
माता–	----	----	----	----
बच्चा–	----	----	----	----

2. **अगर पहले खाने में लिखी हुई पंक्तियों को लड़की कहे तो किस तरह कहे? दूसरे खाने में लिखिए? यदि लड़का–लड़की दोनों मिलकर वही पंक्ति बोले तो किस तरह कहेंगे? उसे तीसरे खाने में लिखिए–**

अ आ		अ आ
जैसे– मैं पढ़लिखकर मेटूँगा जंजाल।	मैं पढ़लिखकर मेटूँगी जंजाल।	हम पढ़लिखकर मेटेंगे जंजाल
(क) मैं उत्पादन बढ़ा करूँगा तुझको मालामाल।	----------------	----------------
(ख) मैं खेतों में अन्न उगाकर कर दूँगा खुशहाल	----------------	----------------
(ग) पढ़लिखकर हल कर दूँगा तेरा एक सवाल	----------------	----------------
(घ) ज्ञानदीप से हल कर दूँगा तेरा एक सवाल	----------------	----------------

3. पढ़िए, समझिए और उदाहरण के अनुसार लिखिए

(क)	(ख)
पढ़–लिखकर	पढ़ा–लिखाकर
खा–पीकर	______________
चल–फिरकर	______________
लड़–भिड़कर	______________
मिल–जुलकर	______________
घूम–फिरकर	______________

4. सोचिए और लिखिए–

क्या होगा यदि?

(क) किसान हल नहीं चलाए तो ______________

(ख) छात्र पढ़ाई नहीं करें तो ______________

(ग) सब मिलकर कार्य नहीं करें तो ______________
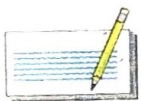
योग्यता विस्तार –

- आदर्श विद्यार्थी की दिनचर्या लिखकर कक्षा में लगाइए।
- भारतमाता से सम्बन्धित अन्य कविता याद कर कक्षा में सुनाइए।
- 'मेरा एक सवाल' के आधार पर छात्र–छात्राओं को पात्र बनाकर यह गीत नाटिका बाल सभा में प्रस्तुत करवाएँ।
- भारतमाता और कौन से प्रश्न पूछ सकती हैं। आप अपने मन से प्रश्न बनाइए। वे प्रश्न किससे पूछेंगीं और क्या उत्तर हो सकता है। आपस में चर्चा कीजिए और बताइए।

पाठ 7

रूप बड़ा या गुण

आइए सीखें –

● बाहरी रूप रंग की अपेक्षा आन्तरिक गुणों का महत्व समझना। ● विराम चिह्न, विशेषण तथा मुहावरों, का प्रयोग। ● वाक्य परिवर्तन, 'नहीं', 'मत' शब्द का प्रयोग।

मेघदूत, रघुवंश और अभिज्ञान शाकुन्तलम् जैसे महान ग्रन्थों के रचयिता महाकवि कालिदास को कौन नहीं जानता? उज्जैन के महाराजा विक्रमादित्य अपनी वीरता और न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके दरबार में नौरत्न थे। उनमें से एक थे कालिदास।

एक बार महाकवि कालिदास राजा विक्रमादित्य के साथ बैठे हुए थे। गर्मियों के दिन थे। राजा और महाकवि कालिदास गर्मी से बेहद परेशान थे। दोनों के शरीर पसीने से लथपथ थे। प्यास के मारे बार–बार कण्ठ सूखा जा रहा था। दोनों के पास मिट्टी की एक–एक सुराही

शिक्षण संकेत– ● महाराज विक्रमादित्य एवं महाकवि कालिदास के बारे में बच्चों को बताएँ। ● गुणों का महत्व बताएँ। ● पाठ में आए मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करें और वाक्य में प्रयोग करवाएँ।

रखी हुई थी। प्यास बुझाने के लिये थोड़ी–थोड़ी देर में उन्हें पानी पीना पड़ रहा था।

राजा विक्रमादित्य बहुत ही सुन्दर व्यक्ति थे, जबकि कालिदास उतने सुन्दर नहीं थे। विक्रमादित्य का ध्यान महाकवि के चेहरे की ओर गया। वे चुटकी लेने के लिये बोल पड़े– ''महाकवि, इसमें सन्देह नहीं कि आप अत्यन्त विद्वान, चतुर और गुणी हैं, लेकिन ईश्वर ने यदि आपको सुन्दर रूप भी दिया होता तो कितना अच्छा होता''?

''महाराज, इसका उत्तर मैं आपको आज नहीं, कल दूँगा।'' कालिदास ने कहा।

संध्या होते ही कालिदास सीधे सुनार के पास गए। उन्होंने उसे रातों–रात सोने की एक सुन्दर सुराही तैयार करने का आदेश दिया और घर लौट गए।

अगले दिन कालिदास ने पहले ही पहुँच कर राजा की मिट्टी की सुराही हटा दी और उसके स्थान पर सोने की सुराही कपड़े से ढक कर रख दी।

ठीक समय पर राजा विक्रमादित्य कक्ष में पधारे। राजा विक्रमादित्य और महाकवि कालिदास वार्तालाप करने लगे।

कल की तरह आज भी बहुत गर्मी थी। राजा को प्यास लगी। उन्होंने पानी के लिए संकेत किया। एक सेवक ने उनकी सुराही से पानी निकाल कर दिया। पानी होंठों से लगाते ही वे सेवक पर बरस पड़े– ''क्या सुराही में उबला पानी भर के रखा है?'' सेवक की तो घिग्घी
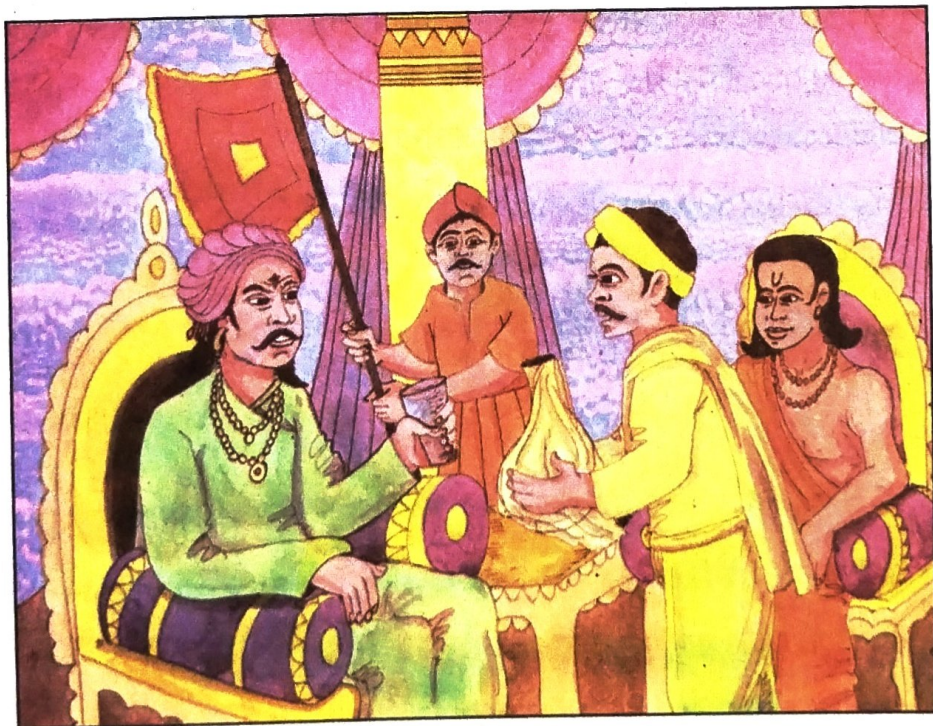
बँध गई।

महाकवि कालिदास ने सुराही का कपड़ा हटाया। सोने की सुराही देखकर राजा विक्रमादित्य दंग रह गये।

राजा विक्रमादित्य ने कहा– ''हद हो गई। पानी भी कहीं सोने की सुराही में रखा जाता है? कहाँ गई मिट्टी की सुराही? सोने की सुराही यहाँ किस मूर्ख ने रखी है?

कालिदास ने शान्त स्वर में कहा –''वह मूर्ख मैं ही हूँ श्रीमान!''

''महाकवि आप?''

''जी हाँ, महाराज! आप सुन्दरता के पुजारी हैं न? आपकी यह सुराही साधारण मिट्टी की थी सो उसे हटा कर मैंने सोने की यह सुन्दर सुराही रख दी। क्या यह अच्छी नहीं है?'' सोने की सुराही में तो पानी और भी अधिक ठण्डा और स्वादिष्ट होना चाहिए?

महाराज, महाकवि का आशय समझ गए। उन्होंने महाकवि से क्षमा माँगी और कहा कि ''आपने मेरी आँखें खोल दीं। अब मुझे समझ में आ गया कि महत्व बाहरी सुन्दरता का नहीं, बल्कि आन्तरिक गुणों का होता है।''

शब्दार्थ

न्यायप्रिय–न्याय में विश्वास करने वाला। लथपथ–सराबोर। कण्ठ–गला,। बेहद–बहुत, अधिक। रचयिता–रचना करने वाला। सुराही–मिट्टी का लम्बी गर्दन वाला पात्र। कक्ष – कमरा। वार्तालाप – बातचीत। घिग्घी – भय के कारण मुँह से आवाज न निकलना। आशय – मतलब, आँखे खुलना – सच्चाई जानना।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) विक्रमादित्य क्यों प्रसिद्ध थे?

(ख) कालिदास की रचनाएँ कौन–कौन सी हैं?

(ग) कालिदास ने सोने की सुराही क्यों बनवाई?

(घ) विक्रमादित्य ने कालिदास के रूप के लिए क्या कहा?

(ड) कालिदास ने विक्रमादित्य की बात का जवाब देने के लिये क्या किया?

(च) 'महत्व बाहरी सुन्दरता का नहीं आन्तरिक गुणों का होता है।' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) विक्रमादित्य ––––––––– के राजा थे। (ग्वालियर, उज्जैन)

(ख) कालिदास ––––––––– भाषा के कवि थे। (संस्कृत, हिन्दी)

(ग) विक्रमादित्य ––––––––– व्यक्ति थे। (कुरूप, सुन्दर)

(घ) कालिदास ने राजा के लिए ––––––––– की सुराही बनवाई। (चाँदी, सोने)

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए–

विक्रमादित्य, नवरत्न, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, सन्देह, विद्वान, घिग्घी, क्षमा।

2. निम्नलिखित शब्दों में 'महा' शब्द जोड़कर नया शब्द बनाइए तथा उदाहरण के अनुसार उसके समक्ष उपयुक्त शब्द भी (नाम) लिखिए–

महा	कवि	महाकवि	कालिदास
	पुरुष	–––––––	––––––
	सागर	–––––––	––––––
	काव्य	–––––––	––––––

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

कालिदास, सुन्दर, चतुर, विद्वान, रूप, सुराही

जानिए–

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, दोष, रंग, आकार, अवस्था आदि) बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जैसा – सूखे, ठण्डी, कुछ आदि।

4. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए–

1. उज्जैन का राजा न्यायप्रिय था। 2. यहाँ खाली सुराही रखी है।
3. चतुर व्यक्ति अपना काम शीघ्र कर लेते हैं। 4. गीता एक सुन्दर लड़की है।
5. गाय का दूध मीठा है।

5. उदाहरण के अनुसार नीचे दिए गए शब्दों से मुहावरे बनाकर उनके अर्थ लिखिए–

		बना मुहावरा	अर्थ
(क) कान	कच्चा	– कान का कच्चा	किसी की भी कही हुई बात पर विश्वास करने वाला
	भरना	– कान भरना	चुगली करना
(ख) जबान	मीठा	– ______	______
	पक्का	– ______	______
(ग) नाक	कटना	– ______	______
	दम	– ______	______
(घ) आँख	खोलना	– ______	______
	भरना	– ______	______

5. निम्नलिखित वाक्यों में 'नहीं', 'मत' शब्दों का यथास्थान प्रयोग कीजिए–

(क) कालिदास सुन्दर थे।

(ख) आज भीषण गर्मी है।

(ग) यहाँ खेलो।

(घ) विद्यालय की दीवार गन्दी करो।

(ङ.) बाहर धूप में खेलो।

6. नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार वाक्य परिवर्तन कीजिए–

उदाहरण – विक्रमादित्य बहुत सुन्दर थे।

मैंने सुना है कि विक्रमादित्य बहुत सुन्दर थे।

(क) कालिदास नवरत्नों में से एक थे।

(ख) शहर में बहुत भीड़–भाड़ होती है।

(ग) भारत में दूध की नदियाँ बहती थीं।

(घ) आपकी, चित्रकारी में रुचि है।

(ङ) भोपाल तालाबों की नगरी है।

आइए समझें –

1. रोको मत, जाने दो।

2. रोको, मत जाने दो

3. रोको मत, जाने दो।

पहले वाक्य का आशय स्पष्ट नहीं। दूसरे वाक्य में रोकना चाहा गया है। तीसरे वाक्य में जाने के लिए निर्देश है।

- वास्तव में यहाँ एक छोटे से चिह्न (,) ने अर्थ बदल दिया है।
- वाक्य में जब ऐसे ही विभिन्न चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, तो उन्हें विराम चिह्न के नाम से जाना जाता है। वस्तुतः विराम चिह्नों के सही प्रयोग से वाक्य के भाव/अर्थ सरलता से समझ में आ जाते है।

(1) पूर्ण विराम (।) यह वाक्य पूरा होने पर लगाया जाता है।
जैसे – एक पेड़ था।

(2) अल्प विराम (,) यह वाक्य के बीच में कुछ समय रूकने के लिए लगाते हैं।
जैसे–जब वह थक जाता, तो पेड़ की छाँव में सो जाता।

(3) प्रश्न वाचक (?) यह उन वाक्यों में लगाते हैं जिनमें कोई प्रश्न किया गया हो।
जैसे – क्या तुम मुझे कुछ पैसे दो सकते हो ?

(4) विस्मय बोधक (!) आश्चर्य संबोधन, प्रसन्नता, घृणा आदि मनोभावों को बताने के लिए लगाते हैं।
जैसे– अरे बाप रे ! इतना बड़ा पेड़ !!

(5) योजक (–) तुलना करते समय, समास के बीच में या दो समान शब्दों के बीच में लगाते हैं। जैसे :– बहुत सी, माता–पिता, बारी–बारी।

7. निम्नलिखित वाक्यों में यथा स्थान सही विराम चिह्न का प्रयोग कीजिए–

(क) कैसे रंग बिरंगे फूल खिले हैं

(ख) राम मोहन सोहन और गोपाल आ रहे हैं

(ग) गुरुजी ने पूछा विशाल तुम पाठशाला क्यों नहीं आए

(घ) बेटा तुम पचमढ़ी घूमने जाओ

(ङ) माता पिता की आज्ञा का पालन करो

(च) देखो तालाब कितना सुन्दर है
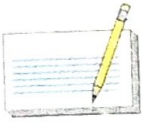
योग्यता विस्तार–

- महापुरुषों के चित्र ढूँढकर कक्षा में लगाइए।
- पुस्तकालय में से महापुरूषों के जीवन के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कीजिए।
- महाकवि कालिदास और राजा विक्रमादित्य के सम्बन्ध में और अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।

यह भी जानें–

- नवरत्न (नौरत्न)– विशेष योग्यता रखने वाला व्यक्ति जिनकी संख्या नौ थी। जिनकी तुलना रत्नों से की गई है।
- राजा विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्न थे– धन्वन्तरी, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु वेताल भट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररूचि
- कालिदास संस्कृत भाषा के महाकवि थे।

पाठ 8
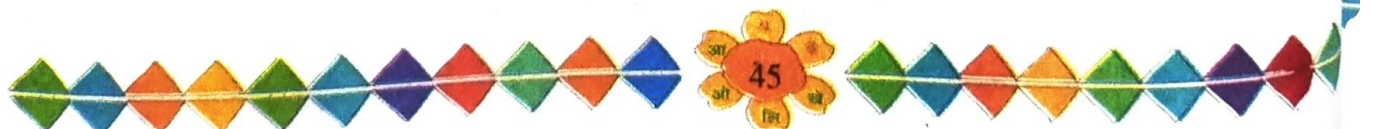
महान वैज्ञानिक की महान खोज

आइए सीखें –

● पेड़–पौधे और जीव–जन्तुओं के महत्व को समझना। ● पेड़–पौधों के प्रति संवेदनशीलता। ● वैज्ञानिकों के जीवन, उनके अनुसंधान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिचय। ● ध्वनि साम्य शब्दों के अर्थों की समझ। ● उपसर्ग, विलोम शब्द और वाक्य पृथक करने की समझ।

राजेश और रानी घर के आँगन में बनी क्यारियों की साफ–सफाई कर रहे थे। रानी पेड़–पौधों को पानी दे रही थी। ठण्डी–ठण्डी हवा चल रही थी। पेड़ पौधों की डालियाँ धीरे–धीरे इस तरह हिल रहीं थीं कि मानो वे आज बहुत खुश हैं। आज उनके आसपास की गन्दगी जो साफ हो गई थी।

अमरूद के पेड़ की हिलती हुई डालियों को राजेश बड़े ध्यान से देख रहा था। उसे पेड़ की कुछ आड़ी–टेढ़ी डालियाँ अच्छी नहीं लग रही थीं। उसके मन में यह विचार आ रहा था

शिक्षण संकेत– ● शिक्षक बच्चों से चर्चा कर विज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझाएँ। ● कुछ और वैज्ञानिकों की भी जानकारी दें।

कि यदि इन डालियों को तोड़ दिया जाए तो पेड़ की सुन्दरता और बढ़ जाएगी।

वह पेड़ के पास पहुँचा। उसने झटके से एक डाली को तोड़ दिया। चट की आवाज सुन रानी चौंक पड़ी। उसने देखा, पेड़ की एक डाली टूट चुकी थी। अब राजेश दूसरी डाली को तोड़ने वाला ही था कि रानी ने राजेश को रोकते हुए कहा– "नहीं भैया, नहीं। इसे मत तोड़ो।" राजेश ने अपना हाथ खींच लिया। वह रानी की ओर देखने लगा। रानी के चेहरे पर दुख के भाव देख राजेश सहम गया। "क्या बात है रानी?" उसने रानी से पूछा।

जरा सोचिए–

क्या पेड़ पौधों के फूल, फल, पत्ते और डालियों को अकारण तोड़ना उचित है?

"भैया अभी–अभी आपने पेड़ की एक नन्ही डाली तोड़ दी है। क्या आप नहीं जानते कि इस समय इस पेड़ को कितना दर्द हो रहा होगा?" रानी ने दुखी स्वर में कहा।

रानी की बात सुनकर राजेश को हँसी आ गई। वह रानी से बोला– "रानी क्या पेड़–पौधों को भी दर्द होता है? दर्द का अनुभव तो सिर्फ मनुष्य और पशु–पक्षी ही करते हैं। पेड़–पौधे हमारी तरह कहाँ बोल पाते हैं? इनमें जान नहीं होती। इसलिए इनके दुख–दर्द की बात सोचना बेकार है।"

रानी राजेश की बात से सहमत नहीं हुई। दोनों में बहस छिड़ गई। अलका दोनों की बातों को ध्यान से सुन रही थी। वह उनके पास आई। राजेश और रानी ने अलका की ओर देखा। राजेश कुछ कहने ही वाला था कि अलका बोल पड़ी "राजेश! मैंने तुम दोनों की बातें सुनी हैं। रानी ठीक कह रही है। पेड़–पौधों को भी हमारी तरह सुख–दुख का अनुभव होता है।

यह सुनकर राजेश को बड़ा आश्चर्य हुआ। "बुआजी आप यह किस आधार पर कह रही हैं?" राजेश ने अलका से पूछा। "हमारे देश के महान वैज्ञानिक डॉ. जगदीशचन्द्र बसु ने इसे प्रयोग द्वारा सिद्ध किया है।" अलका ने कहा।

अलका की बात सुनकर राजेश और रानी चकित रह गए। उनकी उत्सुकता और बढ़ गई। "बुआजी हमें महान वैज्ञानिक डॉ. जगदीशचन्द्र बसु के बारे में कुछ और बताइए" राजेश और रानी ने अलका से आग्रह किया। अलका उन्हें बताने लगी...

जगदीशचन्द्र बसु विश्व के एक महान वैज्ञानिक थे। इनका जन्म बंगाल प्रान्त में ढाका जिले के विक्रमपुर के पास राढ़ीखाल गाँव में 30 (तीस) नवम्बर, 1858 (अठारह सौ अठ्ठावन) को हुआ था। इनके पिता भगवानचन्द्र बसु फरीदपुर में एक उच्च पदाधिकारी थे।
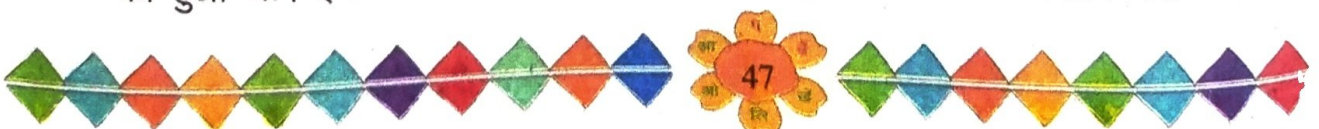
जगदीशचन्द्र ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा एक ग्रामीण पाठशाला में प्राप्त की। आसपास के प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण उनमें बचपन से ही पेड़–पौधों तथा जीव–जन्तुओं के प्रति आकर्षण उत्पन्न हुआ। हरे–भरे खेतों और बगीचों में काम करना, जंगलों में घूमना, तरह–तरह के जीव–जन्तु पालना और घुड़सवारी करना इनके प्रमुख शौक थे।

जगदीशचन्द्र बसु ने प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कर उच्च शिक्षा कलकत्ता और इंग्लैण्ड में प्राप्त की। उन्होंने अनेक विज्ञान सम्बन्धी अनुसंधान किए। उन्हें इसके लिए अनेक पुरस्कार भी मिले।

"बुआजी आप हमें यह बताइए कि बसु महोदय ने कैसे सिद्ध किया कि पेड़–पौधों में जीवन होता है।" बीच में ही राजेश बोल पड़ा।

"अच्छा, तुम्हें इस बारे में जानने की और अधिक जिज्ञासा है? ठीक है, मैं और अधिक जानकारी देती हूँ।" अलका ने राजेश से कहा। वह आगे बताने लगी–

जगदीशचन्द्र बसु को पेड़–पौधों और जीव–जन्तुओं से गहरा लगाव था। उन्होंने वनस्पतियों के स्वभाव का अध्ययन करने के लिए कई प्रयोग किए। **'क्रेस्कोग्राफ'** नामक यन्त्र के माध्यम से उन्होंने विभिन्न प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि पेड़–पौधे भी हमारी तरह सुख–दुख का अनुभव करते हैं। पेड़–पौधों में भी चेतना होती है। इन्हें भी सुख–दुख का अनुभव होता है। ये खाते–पीते हैं, कार्य करते हैं, आराम करते हैं, सोते–जागते हैं और छूने से सिकुड़ते–फैलते हैं। पेड़–पौधों को हानि पहुँचाने से उन्हें पीड़ा होती है। इनके अन्दर प्रेम, भय, शोक आदि के भाव भी होते हैं।

बसु महोदय ने 1906 (उन्नीस सौ छः) में **'वृक्षों में जीव है'** नामक एक ग्रन्थ प्रकाशित

कराया था जिसमें पेड़–पौधों की प्रकृति और विकास के बारे में मनोरंजक और ज्ञानवर्धक जानकारी दी गई थी।

जगदीशचन्द्र बसु की इस खोज ने सारे संसार को चकित कर दिया। उन्होंने पेरिस में एक महत्वपूर्ण भाषण दिया और जन्तुओं तथा वनस्पतियों में समानता बताई। विदेशों में उनकी खोज का बड़ा सम्मान हुआ। उन्हें अनेक देशों में बुलाया गया। अमरीका, फ्रांस, इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया जापान आदि देशों में उन्होंने अपनी खोज पर भाषण दिए। वे जहाँ भी जाते विज्ञान प्रेमी उनके भाषण सुनने के लिए उन्हें घेर लेते। लोग उनके कार्यों की भूरि–भूरि प्रशन्सा करते।

विज्ञान के अन्य क्षेत्रों मे भी उन्होंने कई अनुसंधान किए। उनको उत्कृष्ट वैज्ञानिक अनुसन्धानों के लिए लंदन विश्वविद्यालय ने उन्हें 'डॉक्टर ऑफ साइंस' की उपाधि तथा भारत सरकार ने 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया।

अपार धैर्य, दृढ़ संकल्प शक्ति, दयालुता, स्वाभिमान और राष्ट्रप्रेम जैसे गुण उनके चरित्र की विशेषताएँ थीं।

23 (तेईस) नवम्बर 1937 (उन्नीस सौ सैतीस) को इस महान वैज्ञानिक का निधन हो गया। वैज्ञानिक जगत उनके महान योगदान का सदा ऋणी रहेगा।

अलका के चुप होते ही राजेश और रानी का ध्यान भंग हो गया। वे बड़े शान्त भाव से अलका की बातों को सुन रहे थे। राजेश के मन पर इन बातों का गहरा प्रभाव पड़ा। पेड़ की डाली तोड़ने का अब उसे बहुत दुख था। जगदीशचन्द्र बसु के प्रति श्रद्धा से उसका मस्तक झुक गया था। उसने अलका से कहा– "बुआजी आज आपने हमें अमूल्य बातें बताई हैं। अब भविष्य में, मैं कभी किसी पेड़–पौधे या जीव–जन्तु को हानि नहीं पहुँचाउँगा।"

शब्दार्थ

विचार–मन में उठने वाली बात। सहमना–डरना। सहमत–राजी। आश्चर्य–अचम्भा। उत्सुकता– प्रबल इच्छा। आग्रह– अनुरोध। सौंदर्य– सुन्दरता। आकर्षण–खिंचाव। अनुसन्धान–शोध, खोज। जिज्ञासा–जानने की इच्छा। चेतना–जीवनी शक्ति, जीवन महत्वपूर्ण–खास। भूरि भूरि– बहुत बहुत। कीर्ति– प्रसिद्धि। उत्कृष्ट– श्रेष्ठ। धैर्य– धीरज। संकल्प– दृढ़ निश्चय।
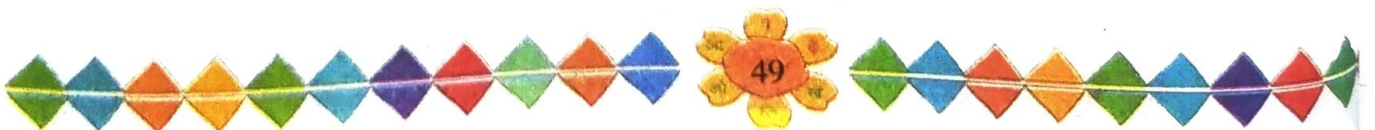
बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) पेड़ पौधों की डालियाँ खुश क्यों लग रही थीं?

(ख) जगदीशचन्द्र बसु का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(ग) गाँव की पाठशाला में शिक्षा प्राप्त करते समय जगदीशचन्द्र बसु में किन–किन गुणों का विकास हुआ?

(घ) बसु महोदय का 1906 में कौनं–सा ग्रन्थ प्रकाशित हुआ?

(ङ) लंदन विश्व विद्यालय और भारत सरकार ने बसु महोदय को कौन–कौन सी उपाधियाँ प्रदान कीं?

(च) बसु महोदय के चरित्र की क्या–क्या विशेषताएँ थीं?

(छ) राजेश ने बुआजी के समक्ष क्या संकल्प लिया?

2. खाली स्थान भरिए :–

(क) रानी के चेहरे पर दुख के भाव देख राजेश ––––––– गया।

(ख) पेड़–पौधों को भी हमारी तरह –––––– का अनुभव होता है।

(ग) जगदीशचन्द्र बसु ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा एक ––––––– पाठशाला में प्राप्त की।

(घ) जगदीशचन्द्र बसु को –––––––– और –––––– से गहरा लगाव था।

(ङ) ––––––– नवम्बर –––––– को इस महान वैज्ञानिक का निधन हो गया।

3. सही व गलत बताइए–

(क) पेड़–पौधे हमारे मित्र नहीं हैं।

(ख) हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाना चाहिए।

(ग) राजेश को पेड़ की डाली तोड़ने का बहुत दुख था।

(घ) जगदीशचन्द्र बसु ने महत्वपूर्ण भाषण नहीं दिए।

(ङ) पेड़–पौधों को भी दर्द होता है।
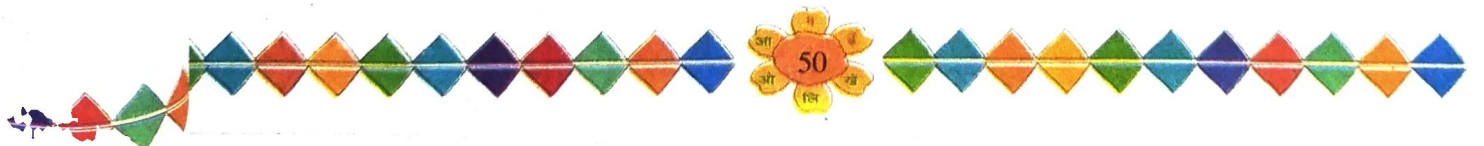
भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए–

सौन्दर्य, ग्रामीण, वैज्ञानिक, उत्कृष्ट, आकर्षण, जिज्ञासा, कीर्ति, क्षेत्र, श्रद्धा, ऋणी,

विशेष :– 'अ' लगाकर नए शब्द बनाओ।

जैसे– कारण	अकारण
1. सामान्य	———
2. शुद्ध	———
3. मान्य	———
4. भाव	———
5. सत्य	———
6. शुभ	———

2. निम्नलिखित वाक्यों में शौक और शोक का प्रयोग इस प्रकार किया गया है उनके अर्थ स्पष्ट हो गए हैं।

अ. सीमा को खेलने का बहुत <u>शौक</u> था।

ब. महात्मा गाँधी की हत्या के समाचार से सारा देश <u>शोक</u> में डूब गया था।

उदाहरण के अनुसार दिए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

चैन – चेन

पीला – पिला

दिन – दीन

और – ओर
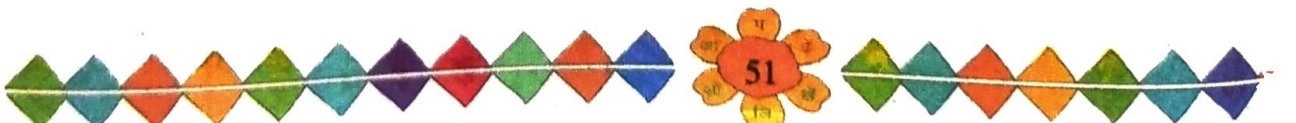
3. निम्नलिखित वाक्यों को तोड़कर (अलग–अलग) दो सार्थक वाक्यों में लिखिए–

उदाहरण मैं आया और वह चला गया।

मैं आया।

वह चला गया।

(क) आप नहीं जानते कि पेड़ों को भी दर्द होता है।

____

____

(ख) बसु ने सिद्ध किया कि पेड़–पौधों में जान होती है।

____

____

(ग) उसने परिश्रम किया इसलिए वह उत्तीर्ण हो गया।

____

____

(घ) मैं अवश्य आता किन्तु आपने कहा नहीं था।

____

____

4. निम्नलिखित वाक्यों में कुछ शब्द रेखांकित किए गए हैं। आप रेखांकित शब्दों के स्थान पर उनके विलोम शब्दों का प्रयोग करते हुए, फिर से वाक्य बनाइए।

(क) हमें अपने आसपास <u>**गंदगी**</u> नहीं रखना चाहिए।

____

(ख) संसार में <u>**प्रेम**</u> से बढ़कर कुछ नहीं है।

____

(ग) पेड़–पौधे सभी के **<u>मित्र</u>** हैं।

(घ) हमें **<u>शुद्ध</u>** पानी ही पीना चाहिए।

----

5. निम्नलिखित तालिका में उदाहरण के अनुसार क्रिया के रूप बदलकर लिखिए-

बताना	बताएँगे	
जगाना	--------	
बोलना	--------	
हँसना	--------	
जाना	जाकर	जाएँगे
हँसना	-------	--------
खाना	-------	--------
पढ़ना	-------	--------
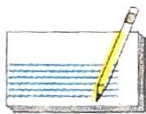
योग्यता विस्तार–

- वैज्ञानिकों के नाम और उनके द्वारा की गई खोजों का चार्ट बनाकर कक्षा में लगाइए।
- प्रकृति की विभिन्न घटनाओं को ध्यान से देखिए और सोचिए कि वे कैसे घटित होती हैं?
- अपने आस–पास लगे पेड़–पौधों के नामों की सूची बनाइए।

विविध प्रश्नमाला – एक

1. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ लिखिए–

   (क) मेरी मातृभूमि है भारत, मैं भारत के योग्य बनूँ।

   (ख) सूरज की किरणों से सीखो जगना और जगाना।

   (ग) इनका दुख अपना दुख मानूँ, इनके सुख को सुख अपना।

   (घ) सीख हवा के झोंकों से लो, कोमल भाव जगाना।

2. निम्नलिखित कथन किसने किससे कहे तालिका में लिखिए?

किसने कहा	कथन	किससे कहा
	"समय को परखने वाला रंक से राजा और उपेक्षा करने वाला राजा से रंक हो जाता है।"	
	"डटा रहूँगा मैं सीमा पर तेरा हूँ मैं लाल" "जी हाँ महाराज! आप सुन्दरता के पुजारी हैं न।"	
	"हाँ राजेश पेड़–पौधे तो हमारे मित्र हैं यह हमें शुद्ध वायु भी देते हैं।"	

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए?

   (क) दादाजी ने किस चित्र को समय का प्रतीक बताया?

   (ख) कालिदास ने किन–किन ग्रंथों की रचना की?

   (ग) मजदूर और किसान किस प्रकार भारत माता के सवाल को हल कर सकते हैं?

   (घ) जगदीशचन्द्र बसु ने किन–किन देशों में जाकर अपनी खोज पर भाषण दिए?

   (च) गुरुदेव ने 'सर' की उपाधि को क्यों लौटा दिया था?

   (छ) रम्मू को दो गुलाबजामुन मिलने पर भी मन में संकोच क्यों था?

4. किस यन्त्र की सहायता से पता चलता है कि पेड़–पौधे भी हमारी तरह सुख–दुख का अनुभव करते हैं?

   (क) माइक्रोस्कोप (ख) क्रेस्कोग्राफ (ग) वीडियोग्राफ (घ) बैरोमीटर

5. उस कहानी का नाम बताओ जिसमें कहानी के पात्र 'रम्मू' की प्रिय मिठाई और कहानी का नाम एक ही है।

6. निम्नलिखित के बारे में अपने शब्दों में लिखिए–

(क) नोबेल पुरस्कार (ख) महाराजा विक्रमादित्य (ग) शान्ति निकेतन

7. शब्द और विलोम की जोड़ी बनाकर लिखें–

योग्य	मूल्य	उदय	रात	मृत्यु	गर्म	दिन
रंक	दुख	अयोग्य	सुख	जीवन	अस्त	अमूल्य
ठंका	राजा					

शब्द	विलोम
जैसे– रात	दिन
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

8. निम्नलिखित कहानी में रिक्त स्थानों की उचित सर्वनाम शब्दों से पूर्ति कीजिए?

एक घने जंगल में बहुत से जानवर रहते थे। एक लकड़हारा जंगल गया। वहाँ.....................सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी की। लकड़ियाँ सिर पर रखकर–घर की तरफ चल पड़ा। रास्ते में..............गुलमुल खरगोश मिला।.........बहुत ठण्ड लग रही थी। लकड़हारे ने अपनी सूखी लकड़ियाँ जलाकर..............ठण्ड दूर कर दी। एक दिन लकड़हारा लकड़ियाँ ले जाते समय अपना बटुआ भूल गया। खरगोश बटुए को पहचान गया।............बटुए को लेकर लकड़हारे के पास पहुँचकर बोला। "यह लो............बटुआ।"

9 निम्नलिखित अनुच्छेद में दिए गए विराम चिन्हों का प्रयोग कर फिर से लिखिए?

पूर्ण विराम (।), प्रश्नवाचक (?), अल्पविराम ('), विस्मय बोधक (!), योजक चिह्न (–)

"सुभाष की शाला अच्छी शाला है शाला के बगीचे में गेंदा गुलाब और चमेली के रंग

बिरंगे फूल लगे हैं प्रधानाध्यापक कार्यालय की दीवार पर एक कथन लिखा है विद्या विनय देती है सभी विद्यार्थी अपने गणवेश पहनकर आते हैं एक बार जिलाधीश महोदय ने स्वयं इसे देखकर आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा था वाह इतनी सुन्दर कला भला दूसरी हो सकती है आप भी बताइए इतनी सुन्दर कला कैसे बनी

10. निम्नलिखित वाक्यों में आए मुहावरे छाँटकर लिखिए–

(क) उन्होंने महाकवि से क्षमा माँगी और कहा "आपने मेरी आँखें खोल दीं।"

(ख) अठन्नी पाकर गोपाल मारे खुशी के फूल उठा।

(ग) राजा के डांटने पर सेवक की घिग्घी बँध गई।

11. नीचे लिखे वाक्यों में गहरे काले शब्दों के वचन बदलकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए?

(क) **पुस्तकें** हमें ज्ञान देती हैं इस............................में कविता भी है।

(ख) **नर्मदा** एक पवित्र नदी है। गंगा, यमुना और सरस्वती भी पवित्र.................हैं।

(ग) कई **शिक्षाप्रद** कहानियाँ हैं। पंच परमेश्वर भी उनमें से एक शिक्षाप्रद............ है।

12. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों की वर्तनी सही करके लिखिए।

(क) गोलू ने <u>बगीचे</u> में <u>तितलिया</u> देखीं।

(ख) <u>महातमा</u> जी <u>कुटीया</u> में रहते हैं।

(ग) <u>मैले</u> में कई कार्यक्रम थे।

(घ) सभी <u>गृह</u> सूर्य के <u>चककर</u> लगाते हैं।

13. निम्नलिखित शब्दों में से विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए।

"सरिता अच्छी लड़की है। वह नीले कपड़े पहनकर आती है। मीठी बातें करना उसकी पहचान है। सरिता तेज चलती है और महान व्यक्तियों को अपना आदर्श मानती है।

14. "समय बड़ा अनमोल" पाठ के आधार पर समय के बारे में कोई भी दो वाक्य लिखिए।

15. यदि भारतमाता तुम्हारे सपने में आकर पूछें कि कक्षा में कैसे प्रथम आओगे तो तुम इस सवाल का जवाब क्या दोगे?

पाठ 9

द्वार–द्वार चमकी दीवाली

आइए सीखें –

- लय ताल के साथ कविता पढ़ना। ● कविता का भाव समझना। ● त्यौहार के बारे में जानना। युग्म शब्दों को पहचानना।

जगमग–जगमग दिये जल उठे,
द्वार–द्वार चमकी दीवाली।
खील–बतासे बाँट रही है,
अम्मा सबको भर–भर थाली।

झूम–झूम कर हँसते गाते,
दौड़–दौड़ कर दीप जलाते।
भर–भर कर फुलझड़ी खिलौने,
बच्चे बाजारों से लाते।
अन्नू , बन्नू, सीता, गीता,
नाच रहे दे–देकर ताली।
द्वार–द्वार चमकी दीवाली।

गली–गली में चहल–पहल है,
मचा हुआ है धूम–धड़ाका।
लिए मिठाई कोई आता,
कोई लाता बम फटाका।
ऐसी सजी दीप मालाएँ,
जैसे हों फूलों की डाली,
द्वार–द्वार चमकी दीवाली।

शिक्षण संकेत– ● कविता पाठ के बाद बच्चों से दीवाली क्यों मनाते हैं? कैसे मनाते हैं? समूह में चर्चा करवाएँ।

शब्दार्थ

दवार – दरवाजा, चहल पहल– धूमधाम, रौनक,

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) अम्मा दीवाली पर क्या बाँट रही हैं?

(ख) बच्चे दीवाली पर बाजार से क्या–क्या चीजें खरीदते हैं?

(ग) दीवाली का त्यौहार कैसे मनाया जाता है?

(घ) आपको दीपावली का त्यौहार क्यों अच्छा लगता है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों में तीन सही तथा एक गलत उत्तर है उसे चुनिए–

1. दीवाली के त्यौहार में–

   (क) खील बताशे बाँटते हैं। (ख) दिए जलाते हैं

   (ग) एक दूसरे पर रंग डालते हैं (घ) पटाखे फोड़ते है

2. हम दीवाली ऐसे मनाते हैं–

   (क) घरों में साफ सफाई करते हैं। (ख) मिठाई खाते हैं।

   (ग) दीपक जलाते हैं। (घ) कूड़ा–कचरा फैलाते हैं।

3. दीवाली पर पटाखे फोड़ते समय क्या करेंगे?

   (क) अकेले में पटाखे नहीं फोड़ेंगे।

   (ख) लापरवाही से पटाखे फोड़ेंगे।

   (ग) बम पटाखे घर के अन्दर नहीं फोड़ेंगे।

   (घ) अनारदाना हाथ में लेकर नहीं चलाएँगे।

3. सही जोड़ी बनाइए

क	ख
धूम	पटाखा
खील	धड़ाका
बम	पहल
चहल	बताशा

4. रिक्त स्थान में सही शब्द लिखिए–

(क) दीवाली पर दीपक .... हैं (चलाते / जलाते)

(ख) अम्मा बच्चों को खील बताशे .... रही है (फेंक / बाँट)

(ग) बच्चे .... दे–देकर नाच रहे हैं (गाली / ताली)

(घ) दीवाली पर खूब .... धड़ाका होता है (धूम / धूल)

(ङ.) दीवाली पर पटाखे .... हैं (तोड़ते / फोड़ते)

5. कविता की वह पंक्तियाँ लिखिए जिनका अर्थ नीचे दिया गया है–

(क) हर गली में चहल–पहल है।

____

(ख) बच्चे बाजार से फुलझड़ी व खिलौने, भर–भर कर ला रहे हैं।

____

(ग) दीपावली पर घर–घर दीपक जगमगाने लगे हैं।

____

(घ) दीपकों की कतार ऐसी है, मानों डाली पर फूल खिले हैं।

____

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध उच्चारण कीजिए–

फुलझड़ी, पटाखा, दवार, दौड़, त्योहार, सुरक्षा

2. जगमग–जगमग और द्वार–द्वार के समान पाठ में दो बार आए अन्य शब्द छाँटिए और लिखिए–

____

____

____

3. निम्नलिखित वर्ग पहेली में त्योहारों के नाम छिपे हैं। आप खोजकर लिखिए–

हो	क	र	द	बै
ली	क्रि	क्षा	श	सा
लो	स	ब	ह	खी
ह	म	न्ध	रा	ई
ड़ी	स	न	ग	द
दी	पा	व	ली	र

1. ____________________ 2. ____________________

3. ____________________ 4. ____________________

5. ____________________ 6. ____________________

4. निम्नलिखित वाक्यों के सामने सही (✓) या गलत (X) का चिह्न लगाइये–

(क) बड़ों की देख–रेख में पटाखे फोड़ने चाहिए।

(ख) बहुत छोटे बच्चों को भी पटाखे फोड़ने के लिए देना चाहिए।

(ग) बीच रास्ते में रखकर पटाखे नहीं फोड़ना चाहिए।

(घ) बोतल में या अन्य किसी बर्तन में रखकर पटाखे फोड़ना चाहिए।

(ण) पटाखे फोड़ने के बाद बिना हाथ धोए ख़ाना खा लेना चहिए।

योग्यता विस्तार –

- दीपावली पर दस पंक्तियों में एक निबन्ध लिखिए।
- दीपावली पर कोई अन्य कविता यादकर सुनाइए।
- दीपावली के अवसर पर काम आने वाली वस्तुओं की सूची बनाइए।

पाठ 10

नर्मदा की आत्मकथा

आइए सीखें –

● आत्मकथा को पढ़ना और समझना। ● वाक्यांशों के लिए एक शब्द बनाना। ● प्रकृति की सुन्दरता को व्यक्त करना। ● सही वर्तनी, वाक्यांशों के लिए एक शब्द, पर्यायवाची शब्द, वचन।

मैं नर्मदा नदी हूँ। मुझे गर्व है कि मैं भारत में बहती हूँ, जहाँ नदियों को माँ और उनके जल को अमृत के समान माना जाता है। मुझे भारत की प्रमुख नदियों में गिना जाता है। मैं साल भर अपनी विशाल जलराशि के साथ बहती हूँ। मेरा नाम भी बड़ा अर्थपूर्ण है। **'नर्म'** का अर्थ है **'सुख'** और **'दा'** का अर्थ है **'देने वाली'**। मेरा एक नाम 'रेवा'' भी है। देश की दूसरी प्रमुख नदियाँ पश्चिम से पूर्व दिशा में बहती हैं पर मैं पूर्व से पश्चिम दिशा में बहती हूँ। मेरा वर्णन कई प्राचीन ग्रन्थों में है। मेरे जन्म के सम्बन्ध में भी अनेक पौराणिक कथाएँ हैं।

मैं मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले के अमरकण्टक पहाड़ से निकली हूँ। यहाँ एक प्राकृतिक कुण्ड है। मेरा जन्म इसी कुण्ड से हुआ है। इससे इसका नाम नर्मदा कुण्ड पड़ गया है।

यह भी जानें –

अमरकण्टक पहुँचने के लिए कटनी–बिलासपुर रेलमार्ग पर 'पेन्ड्रारोड' सबसे नजदीक स्टेशन है। जबलपुर और मंडला नगरों से सड़क–मार्ग से भी यात्री यहाँ पहुँचते हैं।

नर्मदाकुण्ड से निकलकर मैं एक बहुत पतली धारा के रूप में कपिल आश्रम तक आती हूँ। प्राचीनकाल में यहाँ कपिलमुनि का आश्रम था। यहाँ से मैं एक प्रपात के रूप में नीचे गिरती हूँ। इस प्रपात का नाम कपिलधारा है। कुछ आगे चलकर मेरा एक और छोटा–सा प्रपात है। यहाँ गिरती हुई धारा दूध के समान प्रतीत होती है। इसलिए इसका नाम 'दूधधारा' है।

शिक्षण संकेत– ● पर्यावरण संवेदन शीलता एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। ● भारत की नदियों के बारे में जानकारी दें। ● बच्चों को अपनी पसन्द की कोई भी वस्तु पर कहानी कहने को कहें। ● ध्यान रहे कहानी आत्मकथा शैली में हो। जैसे– मैं एक पेड़ हूँ। मैं बहुत बड़ा हूँ।.........

डिंडौरी और मंडला जिलों से निकलकर मैं जबलपुर में आती हूँ। यहाँ मेरा पाट काफी चौड़ा हो जाता है। मेरे एक ओर विंध्यपर्वत और दूसरी ओर सतपुड़ा पर्वत मालाएँ हैं। इनके बीच मैं कल–कल, छल–छल बहती रहती हूँ।

जबलपुर जिले में मेरी धारा को रोककर एक बहुत बड़ा बाँध बनाया गया है। इसका नाम बरगी बाँध है। इससे बहुत बड़े क्षेत्र की सिंचाई होती है तथा बिजली भी बनाई जाती है।

जबलपुर के निकट मेरी छटा देखते ही बनती है। मैं यहाँ भेड़ाघाट नामक स्थान पर मनमोहक प्रपात बनाती हूँ। नीचे गिरती मेरी नन्ही–नन्ही बूँदें धुएँ जैसी लगती हैं। इसलिए इसका नाम धुआँधार प्रपात है। यहाँ संगमरमर की चट्टानों के बीच बहना मुझे बहुत अच्छा लगता है। यहाँ एक स्थान पर धारा इतनी सँकरी है कि बन्दर छलाँग लगाकर पार कर जाते हैं इसलिए इस स्थान को 'बन्दर कूदनी' कहा जाता है।

जबलपुर जिले की उर्वरा भूमि को सींचकर मैं नरसिंहपुर, रायसेन, और होशंगाबाद की धरती को भी उपजाऊ बनाती हुई हन्डिया और नेमावर नगरों के समीप से गुजरती हूँ। तवा

शिक्षण संकेत– ● शिक्षक आत्मकथा शैली में पाठ को हाव–भाव के साथ पढ़ें, फिर बच्चों को पढ़वाएँ। ● बच्चों को अपने बारे में बोलने और लिखने का अभ्यास करवाएँ।

मेरी प्रमुख सहायक नदी है।

खण्डवा जिले में मेरे तट पर ओंकारेश्वर नामक पवित्र तीर्थ है। खण्डवा जिले के ही पुनासा नामक स्थान पर मुझ पर इन्दिरा सागर बाँध बनाया गया है। यह भारत का सबसे बड़ा कृत्रिम जलाशय है। इससे लाखों हेक्टेयर जमीन की सिंचाई होगी और एक हजार मेगावाट बिजली बनाई जाएगी।

मैं आगे बढ़कर धार और बड़वानी जिलों में बहती तथा महाराष्ट्र राज्य की सीमा बनाती हुई गुजरात राज्य में प्रवेश कर जाती हूँ। यहाँ मुझमें कई नदियाँ आकर मिलती हैं और मेरा पाट बहुत चौड़ा हो जाता है। गुजरात में नवगाँव नामक स्थान पर मुझ पर ''सरदार सरोवर बाँध'' बनाया गया है।

मुझ पर बने बाँधों से हजारों लोंगों को विस्थापित होना पड़ा है। मुझे इसका बहुत दुख है, पर यह सन्तोष भी है कि इससे लाखों हेक्टेयर जमीन सींची जाएगी, मछली पालन होगा तथा गाँवों, शहरों और उद्योगों को बिजली मिलेगी। पर्यटन भी बढ़ेगा।

यहाँ से आगे मैं समुद्र में मिलने चल पड़ती हूँ। गुजरात के भड़ौच जिले में विमलेश्वर नामक स्थान पर खम्भात की खाड़ी में गिरकर मैं अरब सागर में समा जाती हूँ।

मैं अपने जन्मस्थान से लेकर समुद्र में मिलने तक सबको अपने जल से तृप्त करती हूँ। मेरे जल में स्नान कर भक्तों को शान्ति मिलती है। मेरे भक्त मुझे बहुत पवित्र मानते हैं। मेरे तट पर अनेक गाँव व नगर बसे हैं तथा अनेक तीर्थ व दर्शनीय स्थल हैं।

मुझे यह बहुत बुरा लगता है कि एक ओर तो लोग मेरी पूजा करते हैं तथा दूसरी ओर मुझमें कचरा, गन्दा पानी और मृतप्राणी डालकर मेरा जल प्रदूषित करते हैं। मेरी सच्ची पूजा तो मुझे स्वच्छ बनाए रखना है।

मैं मध्यप्रदेश की जीवन रेखा हूँ। प्राचीन ग्रन्थों में मेरी स्तुति की गई है। धर्म–ग्रन्थों में ही नहीं, लोकगीतों में भी मेरा उल्लेख है। जो मेरे प्रति लोगों की श्रद्धा व प्रेम का प्रतीक है। कार्तिक माह में श्रद्धा से गाते हुए लोगों की ये पंक्तियाँ मुझे भी अच्छी लगती हैं:–

''नरबदा मैया ऐसे तो मिलीं रे,

ऐसे तो मिलीं रे,

जैसे मिल गय माई और बाप रे.....,

नरबदा मैया ऐसे तो मिलीं रे .....।''

कितना प्यार भरा है इस गीत में। लोग मुझसे मिल कर ऐसे प्रसन्न हो रहे हैं जैसे बालक को उसके माता–पिता मिल गए हों। लोगों की इस भावना से मेरी आँखें भर आती हैं।

लोग ''हर हर नर्मदे'' कहकर मेरा जाप करते हैं। मेरी कामना है कि अनन्त काल तक बहती रहूँ और सबको सुख पहुँचाती रहूँ।

शब्दार्थ

आत्मकथा– स्वयं कही या लिखी गई अपने जीवन की कहानी। गर्व–अभिमान। प्राकृतिक– प्रकृति से संबंधित। विशाल–बड़ा। आगमन–आना। प्रयत्न–कोशिश। प्रतीत–मालूम आभास होना। अर्थपूर्ण–अर्थ से भरा। पाट–नदी की चौड़ाई। मनमोहक–मन को अच्छा लगने वाला। सन्करी–कम चौड़ाई वाली। उर्वरा–उपजाऊ। कृत्रिम–मनुष्य द्वारा बनाई गई। जलाशय–तालाब। मेगावाट–विद्युत मापने की इकाई। हेक्टेयर– दस हजार वर्गमीटर क्षेत्र (लगभग ढाई एकड़ क्षेत्र)। विस्थापित–एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर बसाना। स्तुति–वन्दना, प्रार्थना। कामना–इच्छा। श्रद्धा–आदर–भाव। तृप्त करना–प्यास बुझाना, इच्छा पूर्ण करना।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) नर्मदा नदी कहाँ से निकलती है?

(ख) नर्मदा नदी किन दो पर्वतों के बीच बहती है?
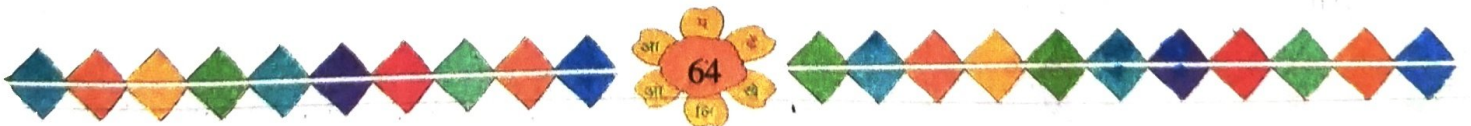
(ग) नर्मदा नदी किन–किन जिलों को हरा–भरा बनाती है?

(घ) नर्मदा नदी को मध्यप्रदेश की जीवन–रेखा क्यों माना जाता है?

(ड.) नदियों से हमें क्या–क्या लाभ है?

(ण) नर्मदा नदी पर कौन–कौन से बाँध हैं और वे कहाँ बनाए गए हैं?

2. खाली स्थान भरिए –

(क) नर्मदा का एक नाम ———— भी है।

(ख) ———— कुण्ड नर्मदा नदी का जन्म स्थान है।

(ग) नर्मदा नदी ——— दिशा से ——— दिशा की ओर बहती है।

(घ) 'कपिलधारा' व 'दुग्धधारा' ——— हैं।

3. सही व गलत बताइए–

(क) नर्मदा की सच्ची पूजा उसे स्वच्छ बनाए रखना है।

(ख) नर्मदा नदी बंगाल की खाड़ी में मिलती है।

(ग) नर्मदा नदी अमरकण्टक पहाड़ से निकली है।

4. सही उत्तर छाँटकर लिखिए –

(क) अमरकण्टक किस जिले में है?

(क) होशंगाबाद (ख) जबलपुर

(ग) अनूपपुर (घ) मण्डला

उत्तर :————————

(ख) जबलपुर जिले में कौन–सा बाँध है?

(क) बरगी बाँध (ख) सरदार सरोवर बाँध

(ग) इन्दिरा सागर बाँध (घ) तवा बाँध

उत्तर :————————
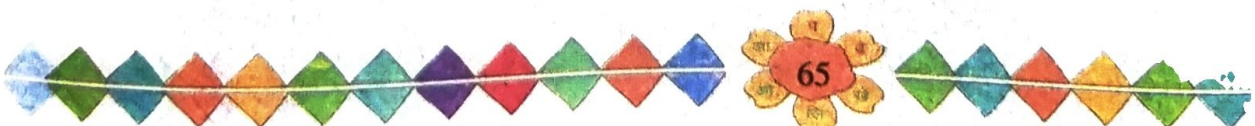
भाषा अध्ययन

1. इन शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और लिखिए–

नर्मदा, अमृत, पश्चिम, पौराणिक, प्राकृतिक, पुरुरवा, प्रपात, विंध्य, धुआँधार, कृत्रिम।

2. शुद्ध रूप चुनकर रिक्त स्थान भरिए –

(क) मैं ——— नदी हूँ। (नमर्दा, र्नमदा, नर्मदा)

(ख) भारत में बहुत सी ——— बहती हैं। (नदीया, नदियाँ, नँदिया)

(ग) यहाँ एक ——— कुण्ड है। (प्राकतिक, प्रार्कतिक, प्राकृतिक)

(घ) पुनासा खण्डवा ——— में है। (जीला, जिले, जिलों)

(ङ) जबलपुर की भूमि ——— है। (उर्वरा, उवर्रा, उरवरा)

3. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक उचित शब्द लिखिए–

(क) ऊँचाई से गिरती पानी की धार – प्रपात

(ख) यात्रा करने वाला व्यक्ति – ———

(ग) वह स्थान जहाँ दो नदियाँ मिलती हैं ———

(घ) दर्शन करने योग्य ———

4. निम्नलिखित के पर्यायवाची शब्द चुनकर लिखिए–

भूमि, नीर, सागर, पर्वत, जमीन, पानी, सिंधु, गिरि, धरा, सलिल, जलधि, नग

नदी –	सरिता	सलिला	सरि
जल –	———	———	———
पहाड़ –	———	———	———
समुद्र –	———	———	———
धरती –	———	———	———

5. पढ़िए, समझिए और खाली स्थान भरिए—

एक वचन	बहु वचन
जैसे—नदी	नदियाँ
कहानी	________
________	राशियाँ
पहाड़ी	________
________	बिजलियाँ
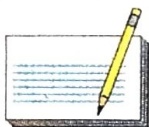
योग्यता विस्तार

- पेड़, तितली, सूरज, मछली, चिड़िया, फूल आदि बनो और उनकी आत्मकथा कक्षा में सुनाइए।
- अपने आसपास किसी नदी का भ्रमण कर उसके बारे में लिखिए।
- नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं, इनकी सहायता से आत्मकथा लिखिए—

अपना नाम, माता—पिता का नाम, जन्म—तिथि, जन्म—स्थान, अपनी कक्षा, विद्यालय, अध्यापिका/अध्यापक, अपना प्रिय खेल, मित्र, रुचि परिवार आदि।

मैं ______ हूँ। मेरी माता का नाम ______ है। मेरे ________

____

____

____

____

____

पाठ 11

यह कदम्ब का पेड़

आइए सीखें –

- कविता का लय और हावभाव सहित वाचन। ● बाल मनोभावों की अभिव्यक्ति।
- क्रियापदों तथा शब्द–युग्म का प्रयोग। ● शब्दों का वाक्यों में प्रयोग।

यह कदम्ब का पेड़, अगर माँ होता यमुना तीरे,
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया, बनता धीरे–धीरे।

ले देतीं यदि मुझे बाँसुरी, तुम दो पैसे वाली,
किसी तरह नीची हो जाती, यह कदम्ब की डाली।

तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं चुपके–चुपके आता,
उस नीची डाली से अम्माँ ऊँचे पर चढ़ जाता।

वहीं बैठ फिर बड़े मजे से बाँसुरी बजाता,
अम्माँ–अम्माँ कह, बंसी के स्वर में तुम्हें बुलाता।

सुन मेरी बंसी को माँ तुम कितनी खुश हो जातीं,
मुझे देखने काम छोड़कर तुम बाहर तक आतीं।

तुमको आती देख बाँसुरी रख मैं चुप हो जाता,
एक बार माँ कह पत्तों में धीरे से छुप जाता।

तुम हो चकित देखतीं चारों ओर न मुझको पाती,
व्याकुल–सी हो तब कदम्ब के नीचे तक आ जातीं।

शिक्षण संकेत – ● हाव–भाव तथा लय के साथ कविता का वाचन कराएँ। ● शिक्षक बच्चों से उनकी माँ के प्रेम, दुलार और स्नेह सम्बन्धों की चर्चा करें।

पत्तों का मरमर स्वर सुन जब ऊपर आँख उठातीं,
मुझे देख ऊपर डाली पर कितनी घबरा जातीं।

गुस्सा होकर मुझे डाँटतीं, कहतीं नीचे आ जा,
पर जब मैं न उतरता हँसकर कहती मुन्ना राजा।

नीचे उतरो मेरे भैया, तुम्हें मिठाई दूँगी।
नए खिलौने, माखन–मिश्री, दूध–मलाई दूँगी।

मैं हँसकर सबसे ऊपर की डाली पर चढ़ जाता,
वहीं कहीं पत्तों में छिपकर, फिर बाँसुरी बजाता।

बहुत बुलाने पर भी माँ जब मैं न उतरकर आता,
माँ, तब माँ का हृदय तुम्हारा, बहुत विकल हो जाता।

तुम आँचल फैलाकर अम्माँ, वहीं पेड़ के नीचे,
ईश्वर से कुछ विनती करतीं बैठी आँखें मीचे।

तुम्हें ध्यान में लगी देख, मैं धीरे धीरे आता,
और तुम्हारे फैले आँचल के नीचे छिप जाता।

तुम घबराकर आँख खोलतीं, पर माँ खुश हो जातीं,
जब अपने मुन्ना राजा को, गोदी में ही पातीं।

इसी तरह कुछ खेला करते हम–तुम धीरे–धीरे,
यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ होता यमुना तीरे।

शिक्षण संकेत – • कविता का भावार्थ रोचक ढंग से स्पष्ट करें।
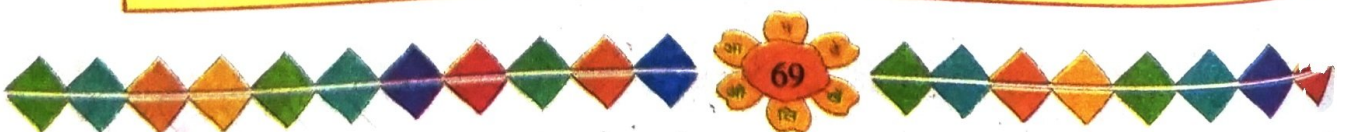
सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 (उन्नीस सौ चार) में प्रयाग में हुआ था। राष्ट्रीय आन्दोलनो में भाग लेने के कारण यह सबसे पहले 17 वर्ष की आयु में जेल गयी। देश भक्ति के साथ–साथ बाल साहित्य में इनका बहुत बड़ा योगदान है।

सुभद्रा कुमारी चौहान

शब्दार्थ

ऊँचे–ऊपर की ओर उठे हुए। चकित–हक्का बक्का, भौंचक्का। व्याकुल–घबराया हुआ, बेचैन। तीरे–किनारे। विकल–व्याकुल, बेचैन। हृदय–दिल, अन्तःकरण।

बोध प्रश्न

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कदम्ब के पेड़ पर बैठकर बालक क्या बनना चाहता था?

(ख) बेटे के पत्तों में छिप जाने पर माँ को कैसा लगता है?

(ग) नीचे उतरने के लिए माँ बेटे को कौन–कौन सी चीजें देने के लिए कहती है?

(घ) माँ को खुश करने के लिए बालक ने क्या तरकीब सोची?

(ङ) माँ गुस्सा होकर बेटे को किसलिए डाँट रही है?

2. नीचे लिखे प्रश्नों के चार–चार सम्भावित उत्तर दिए गए हैं। सही उत्तर के सामने सही का चिह्न लगाइए।

(क) बालक कदम्ब के पेड़ को किस नदी के किनारे चाहता है।

(क) गंगा (ख) नर्मदा

(ग) यमुना (घ) बेतवा
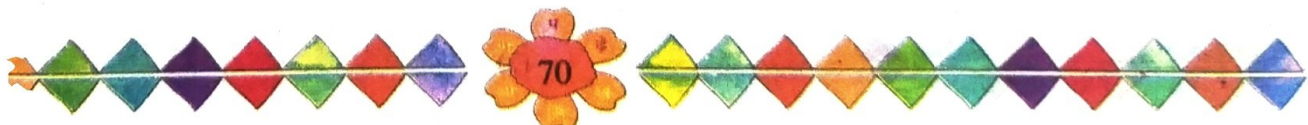
(ख) बालक क्या बजा रहा है?

(क) ढोलक (ख) तबला

(ग) मंजीरा (घ) बाँसुरी

(ग) बाँसुरी के स्वर में बालक किसे बुलाता है?

(क) बहिन को (ख) भाई को

(ग) माँ को (घ) पिता को

(घ) माँ ज़ब घबराकर आँखें खोलकर देखती है तो अपने बेटे को कहाँ पाती है?

(क) पेड़ पर (ख) आँगन में

(ग) गोदी में (घ) नदी किनारे

3. सही जोड़ी बनाइए–

माखन	रोटी
दूध	खिलौने
खेल	मलाई
दाल	मिसरी

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

तीर, व्याकुल, बंशी, चकित, विनती

2. निम्नलिखित शब्दों में (ं) अनुस्वार एवं अनुनासिक (ँ) का सही प करते हुए लिखिए–

जैसे:– बाँसुरी, बंसी।

हसना, अक, आचल, मा, डाटती, आख, पख

ा है?
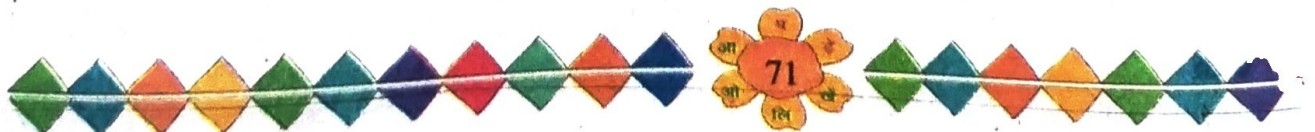
3. उदाहरण के अनुसार नीचे लिखे वाक्यों को पूरा कीजिए –

जैसे – "अगर यह कदम्ब का पेड़ यमुना के किनारे होता, तो मैं भी उस पर बैठकर धीरे–धीरे कन्हैया बन जाता।

(क) अगर मुझे साइकिल मिल जाती तो ______________________

____

____

(ख) यदि मैं मेला देखने गई/गया तो ______________________

____

____

(ग) अगर बरसात नहीं हुई तो ______________________

____

____

(घ) यदि पौधे नहीं होते तो ______________________

____

____

5. नीचे दी हुई, कविता की पंक्तियों को पूरा कीजिए –

- तुम्हें नहीं कुछ कहती पर मैं ____________ आता।
- मैं ____________ सबसे ऊपर की डाली पर चढ़ जाता।
- तुम ____________ आँख खोलती पर माँ खुश हो जाती।
- ____________ होकर मुझे डाँटती, कहती नीचे आ जा।
- तुमको आती देख बाँसुरी रख मैं ____________ हो जाता।

प्रयोग

योग्यता विस्तार

- नदी और पेड़ पर, कोई अन्य कविताएँ खोजिए और याद कर कक्षा में सुनाइए।
- कविता को गाते हुए अभिनय कीजिए।

पाठ 12

पिता का पत्र पुत्री के नाम

आइए सीखें–

● पत्र लिखना। ● पत्र द्वारा उपयोगी जानकारी प्राप्त करना। ● स्वतन्त्र लेखन की क्षमता का विकास। ● लिंग ज्ञान, रकार और रेफ़ के शब्द जानना ● पत्र लेखन के सामान्य नियमों की समझ।

नैनी जेल,

26 अक्टूबर, 1930

प्रिय इन्दिरा,

जन्मदिन पर तुम्हें कई उपहार मिलते रहे हैं। शुभकामनाएँ भी दी जा रही हैं पर मैं इस जेल में बैठा तुम्हें क्या उपहार दे सकता हूँ। हाँ, मेरी शुभकामनाएँ सदा तुम्हारे साथ रहेंगी।

क्या तुम्हें याद है कि जॉन ऑफ आर्क की कहानी तुम्हें कितनी अच्छी लगी थी? तुम स्वयं भी तो उसी की तरह बनना चाहती थीं। पर साधारण पुरुष तथा स्त्रियाँ इतने साहसी नहीं होते। वे तो अपने प्रतिदिन के कामों, बाल–बच्चों तथा घर की चिन्ताओं में ही फँसे रहते हैं परन्तु एक समय ऐसा आ जाता है कि किसी महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए सभी लोगों में असीम उत्साह भर जाता है। साधारण पुरुष वीर बन जाते हैं और स्त्रियाँ वीरांगनाएँ।
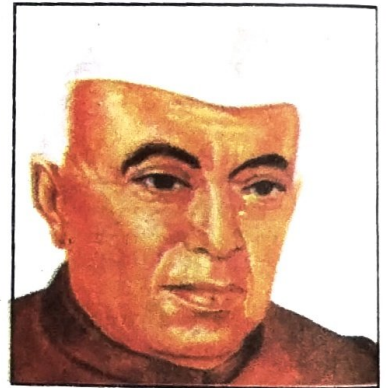
आजकल हमारे भारत के इतिहास का निर्माण हो रहा है। बापूजी ने भारतवासियों के दुखों को दूर करने के लिए आन्दोलन छेड़ा है। मैं और तुम बहुत ही भाग्यशाली हैं कि यह आन्दोलन हमारी आँखों के सामने हो रहा है और हम भी इसमें कुछ भाग ले रहे हैं। एक महान उद्देश्य हमारे सामने है और हमें इसकी पूर्ति के लिए बहुत कुछ करना है।

अब सोचना यह है कि इस महान आन्दोलन में हमारा कर्त्तव्य क्या है? इसमें हम किस तरह भाग लें? परन्तु जो कुछ हम कहें, हमें इतना अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि उससे हमारे देश को हानि न पहुँचे। कई बार हम सन्देह में भी पड़ जाते हैं कि हम क्या करें? क्या न करें?

शिक्षण संकेत – ● बच्चों को पत्र लेखन के सामान्य नियम बताएँ। ● पत्र लेखन के लिए छोटा सा विषय भी दें। ● विषय रुचिकर हो। ● कक्षा में पत्रों का वाचन करवाएँ। बच्चों को स्वतन्त्रता आन्दोलन, जवाहरलाल नेहरू व इन्दिरा गाँधी के विषय में बताएँ।

यह निश्चय करना कोई सरल कार्य नहीं है। जब भी तुम्हें ऐसा सन्देह हो तो ठीक बात का निश्चय करने के लिए मैं तुम्हें एक छोटा–सा उपाय बताता हूँ। तुम कोई भी काम ऐसा न करना जिसे दूसरे से छिपाने की इच्छा तुम्हारे मन में उठे। किसी बात को छिपाने की इच्छा तभी होती है जब तुम कोई गलत काम करती हो। बहादुर बनो और सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। यदि तुम बहादुर बनोगी तो ऐसी कोई बात नहीं करोगी जिससे तुम्हें डरना पड़े या जिसे करने से तुम्हें लज्जित होना पड़े।

तुम्हें यह तो मालूम ही है कि बापूजी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता का जो आन्दोलन चलाया जा रहा है उसमें छिपा रखने जैसी कोई बात नहीं है। हम तो सभी काम दिन के उजाले में करते हैं।

अच्छा बेटी! अब विदा।

भारत की सेवा के लिए तुम बहादुर सिपाही बनो, यह मेरी शुभकामना है।

तुम्हारा पिता

जवाहरलाल

(यह पत्र भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू ने अपनी बेटी इन्दिरा को तेरहवें जन्मदिन के अवसर पर नैनी जेल, इलाहाबाद से लिखा था।)

जवाहर लाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री थे। वे भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के केवल प्रमुख नायक ही नहीं आधुनिक युग के निर्माता भी है।

– जवाहर लाल नेहरू

शब्दार्थ

जॉन ऑफ आर्क – फ्रांस देश की एक बहादुर नारी जिसने फ्रांस की जनता के अधिकारों के लिए संघर्ष किया था। उपहार–भेंट, तोहफा। असीम–जिसकी सीमा न हो। निर्माण–बनाना। भाग्यशाली– भाग्यवान। आन्दोलन–कोई माँग पूरी करने के लिए किया जाने वाला सामूहिक प्रयास। पूर्ति–पूरा करना। महान– बड़ा। उद्देश्य–लक्ष्य, ध्येय। कर्त्तव्य–कार्य जिनकी अपेक्षा की जाती है। स्मरण–याद। अवश्य–जरूर,। निश्चय–तय,पक्का। उपाय–हल, तरकीब। स्वतन्त्रता–मुक्ति। नेतृत्व–अगुआई, जनता के मुखिया का काम।

बोध प्रश्न

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) नेहरूजी ने यह पत्र किसे लिखा था?

(ख) बापूजी ने आन्दोलन क्यों छेड़ा था?

(ग) विशेष परिस्थितियों में साधारण स्त्री और पुरुष क्या बन जाते हैं?

(घ) क्या करें या क्या न करें इसका निश्चय कैसे करना चाहिए?

(ङ) नेहरूजी ने अपनी पुत्री इन्दिरा को क्या शुभकामना दी?

2. सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. नेहरूजी ने इन्दिरा जी को यह पत्र कहाँ से लिखा था?

   (क) घर से (ख) विद्यालय से

   (ग) जेल से (घ) विदेश से

2. नेहरूजी ने अपने पत्र में 'बापूजी' किसे कहा है?

   (क) नेताजी सुभाषचन्द्र (ख) सरदार पटेल

   (ग) लोकमान्य तिलक (घ) महात्मा गांधी

3. नेहरूजी ने इन्दिराजी को यह पत्र किस अवसर पर लिखा था?

   (क) जन्म दिवस पर (ख) उत्तीर्ण होने पर

   (ग) नौकरी मिलने पर (घ) शादी होने पर

4. नेहरूजी ने अपनी पुत्री को उपहार के रूप में क्या दिया?

   (क) पुस्तकें (ख) मिठाई

   (ग) खिलौने (घ) शुभकामना

3. नीचे लिखे वाक्यों के सामने सही ✓ या गलत X का चिह्न लगाएँ–

(क) यह पत्र इन्दिराजी ने अपने पिता को लिखा था।

(ख) इन्दिराजी बचपन में जॉन ऑफ आर्क बनना चाहती थीं।
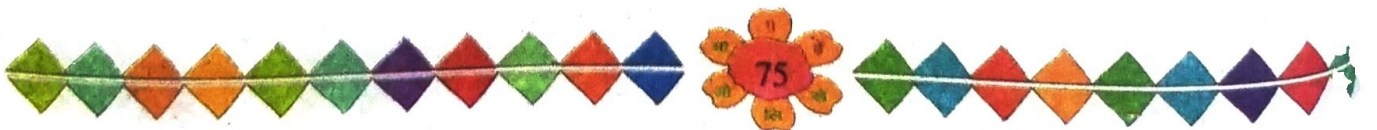
(ग) विशेष परिस्थितियों में साधारण पुरुष वीर बन जाते हैं और स्त्रियाँ वीराऩ्गनाएँ।

(घ) नेहरूजी अपनी पुत्री इन्दिरा को कमजोर बनाना चाहते थे।

भाषा अध्ययन

1. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्यो में प्रयोग कीजिए:–**

शब्द	**वाक्य में प्रयोग**
जैसे –शुभकामना	मेरी शुभकामना सदा तुम्हारे साथ रहेगी।
कर्त्तव्य	————————————————
उपहार	————————————————
निडर	————————————————
बहादुर	————————————————
आन्दोलन	————————————————

2. **निम्नलिखित पुल्लिंग शब्दों में 'आ' की मात्रा की जगह 'ई' की मात्रा लगाकर स्त्रीलिंग में बदलिए–**

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
जैसे– घरवाला	घरवाली
काका	————
दादा	————
बकरा	————
लड़का	————
बेटा	————
मुर्गा	————

3. **'र' वर्ण को विभिन्न रूपों में दिए गए शब्दों के अनुसार लिखा जाता है। ऐसे ही दो–दो शब्द लिखिए**

क्रम, ———— ————

कर्म, ———— ————

राष्ट्र, ———— ————

4. **समझकर लिखिए–**

जैसे –

(क) राम बाजार गया। राम बाजार नहीं गया।

(ख) सुमन खेलती है। ————————

(ग) ———————— बालक स्वस्थ नहीं है।

(घ) आपकी बात ठीक है। ————————

(ङ) ———————— फल मीठा नहीं है।

5. **निम्नलिखित शब्दों का उचित स्थान पर प्रयोग कीजिए –**

प्रिय, महोदय, आदरणीय, पूजनीय, माननीय, महामहिम, श्रीमान

जैसे– (क) प्रिय पुत्र

सदैव प्रसन्न रहो।

(ख) ———————— पिताजी,

सादर चरण स्पर्श,

(ग) प्रबंधक ———————— नमस्ते!

(घ) ———————— प्रधानाध्यापक महोदय।

(ङ.) ———————— मामाजी,

सादर, अभिवादन,

(च) ———————— राज्यपाल महोदय

म.प्र. भोपाल.

(छ) ———————— मुख्यमन्त्री महोदय

म.प्र. शासन भोपाल।

शिक्षण संकेत :– शिक्षक छात्रों को उचित सम्बोधनों का प्रयोग कर पत्र लिखने को कहें।

6. **नीचे लिखे शब्दों को उचित स्थान पर भरते हुए आवेदन पत्र को पूरा कीजिए :–**

(प्रार्थना, चार, महोदय, श्रीमान, अवकाश, कृपा)

प्रति,

―――――― कक्षाध्यापक महोदय,

शासकीय माध्यमिक शाला ―――――――― (स्थान का नाम)

विषय :– बुखार आने के कारण ――― दिन का ――― देने बावत्।

――――― जी,

सविनय निवेदन है कि मुझे कल से बुखार आ रहा है। अतः श्रीमान से ――――― है कि मुझे दिनांक ―――――― से ―――――― तक चार दिन का अवकाश देने की ――― करें।

दिनांक :―――

आपका आज्ञाकारी शिष्य

नाम ――――――

कक्षा ―――――
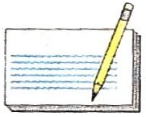
योग्यता विस्तार

- अपने पिता को पत्र लिख कर बताइए कि आप की पढ़ाई कैसी चल रही है?
- अपने शिक्षक को पत्र लिखकर बताइए कि आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं?
- महापुरुषों द्वारा लिखे गए पत्रों का संग्रह कीजिए।

पाठ 13
खूँटे का घोड़ा

आइए सीखें–

- लोककथा को समझना।
- मुहावरों की समझ।
- विराम चिह्नों का प्रयोग।
- परोपकार और सहयोग के गुणों का विकास।
- बुद्धि कौशल और सूझ–बूझ से बिगड़ी बात को बनाना।

बातों सी मीठी, कहानी सी झूठी। घड़ी–घड़ी विश्राम, जाने सीताराम। शक्कर का घोड़ा शकरपारे की लगाम। ऐसे–ऐसे बुधिया की नानी, एक दिन कहने लगी कहानी।

एक था बंजारा। बड़ा ही सीधा, नेक और दयालु। उसके पास था एक ऊँचा–पूरा, तेज तर्रार घोड़ा। बंजारा घोड़े को बहुत प्यार करता था। एक दिन की बात है। ....

इतना कहकर नानी हो गई चुप। बुधिया के मन में मच गई खलबली। उसने पूछा- ''बताओ न नानी! क्या हुआ उस दिन?'' नानी ने खाँसकर गला साफ किया और बोली–

उस दिन बंजारा घोड़े पर बैठकर कहीं जा रहा था। उसका रास्ता गुजरता था जंगल से। जंगल में था खूब बड़ा तालाब। बंजारे ने सोचा, चलूँ, घोड़े को पानी पिला दूँ। वह तालाब के किनारे गया और घोड़े ने पिया जी भरकर पानी। बंजारा चलने लगा तभी उसे एक गड्ढे में एक बूढ़ा आदमी दिखाई दिया। बंजारे को देखकर उस बूढ़े आदमी ने आवाज दी अरे भाई मुझे यहाँ से निकालो। अगर मैं यहीं पड़ा रहा तो भूखा–प्यासा मर जाऊँगा। बंजारे को दया आ गई। उसने बूढ़े आदमी को गड्ढे से बाहर निकाला।

बूढ़े आदमी ने कहा– ''तुम भले आदमी हो। मैं पास में ही रहता हूँ। लोग मुझे बाबा कहकर बुलाते हैं, घास काटते समय धोखे से इस गड्ढे में गिर पड़ा था। तुम न आते तो जाने कब तक इसी में पड़ा रहता। अगर कोई मुश्किल आ पड़े तो मेरे पास जरूर आना। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।'' इतना कहकर बाबा अपनी झोपड़ी की ओर चला गया। बंजारे ने भी अपना रास्ता पकड़ा।

इतना कह नानी दम भरने को रुक गई। बुधिया बोली– ''काम तो बंजारे ने अच्छा किया। दूसरों की मदद करना अच्छी बात है। फिर आगे क्या हुआ? क्या बंजारे को भी उस बूढ़े आदमी की मदद की जरूरत पड़ी?'' नानी ने कहा– ''थोड़ा रुको, आगे क्या हुआ? कुछ ठहरकर बताती हूँ।''

एक बार की बात है। बंजारे को अपने डेरे पर लौटते समय रात हो गई। सूना रास्ता, साँय–साँय चलती हवा और बियाबान जंगल। बंजारा चौकन्नी निगाह किए घोड़े पर बैठा चला जा रहा था। अचानक क्या देखा कि पेड़ के नीचे एक आदमी खड़ा है। उस आदमी ने बंजारे को टोका– "अरे! इतनी रात में कहाँ जा रहे हो? जंगल की राह। उस पर अकेले कहीं कोई खतरनाक जानवर मिल जाए तो क्या करोगे?"

बंजारे ने कहा– "करूँ भी तो क्या? डेरे पर तो जाना ही होगा।" वह आदमी बोला– "मेरा गाँव पास में ही है। चलो मेरे साथ रात भर रुकना, सुबह अपनी राह लेना। बंजारे ने कहा– पर तुम्हें बेकार में परेशानी होगी।" "परेशानी की क्या बात? तुम मेरा घर थोड़े ही साथ ले जाओगे।" उस आदमी ने बंजारे की बात का जवाब दिया।

बंजारा मीठी–मीठी बातें सुनकर उसके साथ हो लिया। उस आदमी ने बंजारे को अपने घर ले जाकर खूब आवभगत की। घोड़े को भी एक खूँटे से बाँधा। दाना खिलाया। बंजारे को खाट पर सुलाया और स्वयं जमीन पर सोया। बंजारा मन में सोचता– 'कितना भला है यह

शिक्षण संकेत :– ● शिक्षक पाठ को लोककथा की शैली में सुनाएँ। ● बच्चों को घुमन्तू (खानाबदोश) जातियों जैसे बंजारा, लोह, गाड़िया, नट आदि के बारे में जिनके स्थायी आवास और स्थाई बस्तियाँ नहीं होती हैं, बताएँ। ● वाचन के समय परोपकार, सहयोग, कृतज्ञता आदि मूल्यों और गुणों पर विशेष रूप से चर्चा करें। यह बुन्देली कथा लोक कथा पर आधारित है।

आदमी।' यह सोचते–सोचते बंजारा सो गया चैन की नींद। सबेरे मुर्गे ने बाँग दी तो बंजारा जागा। वह आदमी भी उठा। बंजारे ने हाथ मुँह धोया और दातुन की। अपने घर ठहराने के लिए उस आदमी को धन्यवाद दिया। बंजारा चलने को तैयार हुआ। जैसे ही उसने अपने घोड़े की लगाम को हाथ लगाया वह आदमी चिल्लाया–"अरे! अरे! यह क्या, मेरा घोड़ा कहाँ ले जा रहे हो?" बंजारा घबराकर बोला– "तुम्हारा घोड़ा। घोड़ा तो मेरा है।" वह आदमी डपटकर बोला– "चुप रहो, यह मेरा घोड़ा है। कल रात को ही तो मेरे खूँटे ने इस घोड़े को जन्म दिया है। खूँटा भी मेरा, घोड़ा भी मेरा।" बंजारे के तो यह सुनकर होश ही उड़ गए। यह कैसी मुसीबत गले आ पड़ी। बंजारा बोला– "भाई हँसी मत करो। घोड़ा मेरा है। रात में इसी पर बैठकर तो मैं तुम्हारे घर आया था।"

वह आदमी क्यों मानने वाला था, बोला–"नहीं घोड़ा मेरा हैं।" दोनों झगड़ने लगे। बंजारा कहता–"घोड़ा मेरा है।" वह आदमी कहता–"घोड़ा मेरा है।" दोनों का झगड़ा सुनकर उस आदमी के दोनों पड़ोसी भी आ गए। बंजारे ने उनसे कहा– "देखों भाइयो कैसा अन्धेर है। यह आदमी मेरे घोड़े को अपना बता रहा है।" बंजारे को क्या मालूम था कि वह आदमी और उसके दोनों पड़ौसी ठग थे। मिलजुलकर सीधे–सादे लोगों को ठगते थे। उन दोनों ने ठग की हाँ में हाँ मिलाई और बंजारे को डरा–धमकाकर भगा दिया।

बुधिया बोली– "बेचारा बंजारा! पर नानी उस बंजारे ने अपना घोड़ा पाने के लिए कुछ नहीं किया?" नानी ने कहा–"सुनती रहो। अभी पूरी कहाँ हुई कहानी। जरा दम ले लूँ तो आगे कहूँ।"

शिक्षक संकेत – शिक्षक बच्चों को बताएँ कि कुछ लोग मीठी–मीठी बातें बनाकर या लालच में डालकर ठग लेते हैं। रूपयों या जेवरों को दूना करना, गड़ा धन दिलाने की कहकर, रेलगाड़ियों में जहरीली या बेहोशी की दवा मिली खाद्य वस्तु खिलाकर लोगों का लूट लिया जाता है। इनसे सावधान रहना चाहिए।

नानी ने आगे की कहानी सुनाई ....

मुसीबत का मारा बंजारा, हैरान–परेशान। क्या करें कहाँ जाए? बंजारे को बूढ़े बाबा की याद आई। वह जंगल में तालाब के पास पहुँचा। बंजारे ने बाबा को पुकारा। बंजारे की आवाज सुनकर बूढ़ा बाबा झट अपनी झोपड़ी से निकल आया। बाबा ने कहा– "आओ बंजारे भाई! कैसे हो?" बंजारे ने घोड़ा छीने जाने का सारा किस्सा सुनाया। बाबा बोला–"चिन्ता मत करो। उन ठगों को ऐसा सबक सिखाऊँगा कि जीवन भर याद रखेंगे।"

दूसरे दिन बाबा और बंजारा जा पहुँचे उस गाँव के मुखिया के पास। बंजारे ने सारी घटना मुखिया को बताई और घोड़ा वापिस दिलाने की विनती की। मुखिया ने घोड़े समेत उस ठग को बुलवाया। मुखिया ने ठग से पूछा–"तुमने बंजारे का घोड़ा क्यों ले लिया?" ठग ने कहा– "मुखियाजी घोड़ा तो मेरा है। कल रात को ही मेरे खूँटे ने इसे पैदा किया है। इस बात के कई गवाह हैं।" उसके दोनों पड़ौसी ठगों ने गवाही दी कि हाँ, हाँ, ऐसा ही हुआ।

मुखिया यह सुनकर सोच में पड़ गया। मुखिया जानता था कि ये लोग चोर और ठग हैं पर मिलकर झूठ बोलने और गवाही देने के कारण बचे रहते हैं। बाबा यह सब देख रहा था उसने सोचा मौका अच्छा है। वह झूठ–मूठ सोने लगा। मुखिया ने उसे जगाकर पूछा–"तुम किसलिए आए हो और सो क्यों रहे हो?" बाबा बोला– "मुखियाजी, मैं जंगल में एक तालाब के किनारे रहता हूँ। कल रात आपके गाँव का यह आदमी घोड़े पर बैठकर आया। इसने तालाब के पानी में आग लगा दी। जब मैं पानी में लगी आग बुझाने लगा तो इसने मेरी एक हजार अशर्फियाँ चुरा लीं और भाग आया। मेरी अशर्फियाँ दिला दीजिए।'

मुखिया बाबा की बात समझ गया। उसने उस ठग से एक हजार अशर्फियाँ देने को कहा। ठग बोला—"मुखिया जी, यह बूढ़ा झूठ बोल रहा है। आप ही बताइए कहीं पानी में आग लगती है?"

बाबा ने कहा—"जब लकड़ी का खूँटा जीते–जागते घोड़े को जन्म दे सकता है तो पानी में आग क्यों नहीं लग सकती?"

मुखिया ने ठग से कहा—"इनका कहना ठीक है या तो बंजारे का घोड़ा लौटाओ या एक हजार अशर्फियाँ दो।" अब क्या था? पलट गया पासा। अछता–पछताकर ठग ने लौटाया बंजारे का घोड़ा। मुखिया ने ठगों को किया गाँव से बाहर। बंजारा बाबा की चतुराई की बड़ाई करता अपने डेरे में लौटा। जैसे बना बंजारे का काम, वैसे बनें सब के काम। इतना कहकर नानी ने खत्म की कहानी। बुधिया ने बजाई ताली।

शब्दार्थ—

घड़ी–घड़ी—पल–पल। थोड़े–थोड़े समय बाद। **शकरपारा**—शक्कर से बनी एक मिठाई। **बंजारा**—एक घुमन्तु (खानाबदोश) विशेष जाति का व्यक्ति। **नेक**—अच्छा। तेज **तर्राट**—तेज चलने वाला, फुर्तीला। **डेरा**—ठिकाना, रहने का स्थान। **बियाबान**—निर्जन। **चौकन्नी**—सतर्क। **आवभगत**—स्वागत, सत्कार। **ठग**—बातों में बहला फुसलाकर ठगने वाला। **दम**—साँस। **मुखिया**—गाँव का मुख्य व्यक्ति, ग्राम प्रमुख जिसके पास कुछ विशेष अधिकार होते हैं। **झट**— जल्दी, **गवाह**—साक्षी, किसी घटना को देखने वाला व्यक्ति। **अशर्फी**— प्राचीन **स्वर्ण**—मुद्रा, सोने के सिक्के। **बड़ाई**—प्रशंसा। **अछता**—पछताकर—विवश होकर।

अभ्यास

1. **बोध प्रश्न**

(क) बंजारे ने बूढ़े आदमी की क्या मदद की थी?

(ख) बंजारा रात में कहाँ रुका था?

(ग) ठग ने क्या कहकर घोड़े को अपना बताया?

(घ) बूढ़े ने ठग पर क्या आरोप लगाया?

(ङ) बूढ़े बाबा ने ठग को कैसे झूठा सिद्ध किया?

2. नीचे लिखे प्रश्नों के चार सम्भावित उत्तरों में से सही उत्तर छाँटकर लिखिए–

1. बंजारे के पास कौन सा जानवर था?

   (क) ऊँट (ख) घोड़ा

   (ग) हाथी (घ) सियार

2. बंजारे ने बूढ़े बाबा को कहाँ से निकाला?

   (क) काँटों से (ख) कीचड़ से

   (ग) कुएँ से (घ) गड्ढे से

3. ठग के अनुसार घोड़े को किसने जन्म दिया था?

   (क) घोड़ी ने (ख) रस्सी ने

   (ग) खूँटे ने (घ) गाय ने

4. बंजारा किसे साथ लेकर मुखिया के पास गया?

   (क) व्यापारी को (ख) सिपाही को

   (ग) बूढ़े बाबा को (घ) साधु को

3. किसने किससे कहा :–

(क) उन ठगों को ऐसा सबक सिखाऊँगा कि जीवन भर याद रखेंगे। ....

(ख) मेरे खूँटे ने इस घोड़े को जन्म दिया है। ....

(ग) मैं जंगल में एक तालाब में रहता हूँ। ....

भाषा अध्ययन

1. सम्बन्ध जोड़िए और लिखिए:–

घोड़ा	मछली	______	_______
तालाब	लगाम	______	_______
सियार	खूँटा	______	_______
रस्सी	माँद	______	_______

2. इस शब्दजाल में दस जानवरों के नाम दिए गए हैं। नाम आड़े, खड़े और तिरछे भी हो सकते हैं? नाम पर घेरा बनाइये और लिखिए :–

ऊँ	इ	स	री	छ	हि
पा	ट	धा	ग	धा	र
ब	क	री	सि	गा	ण
गा	घो	ड़ा	या	बै	व
य	ल	शे	र	ल	रा
मी	हा	थी	न	शे	ना

जैसें – 1. ऊँट 2. ______
3. ______ 4. ______
5. ______ 6. ______
7. ______ 8. ______
9. ______ 10. ______

3. नीचे लिखे मुहावरों के अर्थ समझकर उन्हें वाक्य में प्रयोग करिए।

(1) चैन की नींद सोना – बेफ्रिक होना

(2) हाँ में हाँ मिलाना – बिना सोचे समझे किसी बात का समर्थन करना।

(3) पासा पलटना – परिस्थिति बदल जाना

1. ______________________________

2. ______________________________

3. ______________________________

4. इन वाक्यों को सही ढंग से लिखिए–

जैसे–(क) एक था बंजारा – एक बंजारा था।

(ख) इतना कहकर नानी हो गई चुप।

____

(ग) घोड़े ने पिया जी भर कर पानी।

____

(घ) उसका रास्ता गुजरता था जंगल से।

____

(ङ) ठग ने लौटाया बंजारे का घोड़ा।

____

5. सही विराम चिह्न लगाइए। (। – ! , ?)

(क) अरे तुम यहाँ

(ख) यह मेरा घर है

(ग) तुम कहाँ जा रहे हो

(घ) सुनूँगा सबकी करूँगा मन की

(ङ) बंजारा बहुत ही सीधा सच्चा था
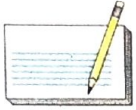
योग्यता विस्तार

- चतुराई भरी ऐसी ही कोई दूसरी लोककथा सुनाइए।
- इस कहानी को अपनी स्थानीय बोली में सुनाइए।
- घोड़े के अलावा और कौन से जानवर सवारी के काम आते हैं? उनकी सूची बनाइए।
- बैल और ऊँट के मुँह में बाँधने वाली रस्सी को क्या कहते हैं? पता करिए।

सोचिए और आपस में चर्चा कीजिए–

अगर आप बूढ़े बाबा की जगह होते तो घोड़ा वापिस लेने के लिए क्या करते।

इस कविता को याद करिए–

अगर कहीं मैं घोड़ा होता,
वह भी लम्बा चौड़ा होता,
तुम्हें पीठ पर बैठा करके,
बहुत तेज मैं दौड़ा होता।
पलक झपकते ही ले जाता,
दूर पहाड़ों की वादी में,
बातें करता हुआ हवा से,
बियाबान में, आबादी में।
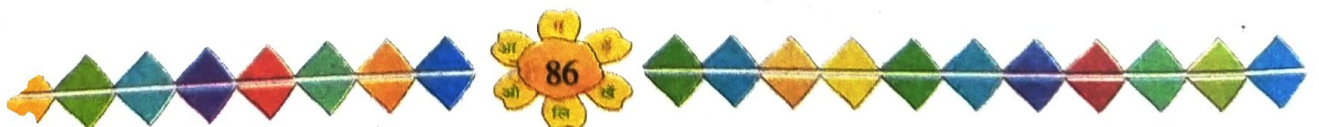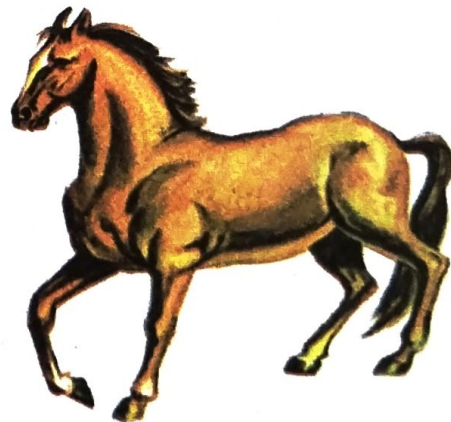
पाठ 14
नीति के दोहे

आइए सीखें

● दोहों का सस्वर वाचन ● दोहों का मूलभाव ग्रहण करना ● शब्दों के पर्यायवाची, विलोम तथा शुद्ध रूप जानना ● तत्सम एवं तद्भव शब्दों की समझ।

1. आवत हिय हरषे नहीं, नैनन नहीं सनेह।
   तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसे मेह।।
2. तुलसी संत सुअम्ब तरु, फूलें फरहिं पर हेत।
   इतते ये पाहन हनत, उतते वे फल देत।।

तुलसीदास

3. ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
   औरन को सीतल करे, आपहु सीतल होय।।
4. रहिमन देख बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
   जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तलवारि।।

रहीम

5. जो तोकूँ काँटा बुवै, ताहि बोय तू फूल।
   तोकूँ फूल के फूल हैं, बाकूँ है तिरसूल।।
6. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
   पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर।।

कबीर

शिक्षण संकेत— ● दोहों का भाव स्पष्ट करने के लिए कहानी/संस्मरण/प्रेरक प्रसंग/घटना का उदाहरण दे सकते हैं। ● बालसभा में दोहा अन्त्याक्षरी करवाएँ। ● बच्चों को बताएँ कि दोहे में दो पंक्तियाँ होती है। सस्वर गायन करवाएँ।

तुलसीदास, कबीरदास और रहीम भक्तिकाल के महान कवि है इन्होंने भक्ति नीति, ज्ञान और व्यवहार की बड़ी–बड़ी बातों को सरल उदाहरणों के माध्यम से दोहों में समझाया हैं।

शब्दार्थ

हिय–हृदय। हरषै–प्रसन्न होना। नैनन–आँखों में। सनेह–स्नेह, प्रेम। कंचन–सोना। मेह–मेघ, बादल। बानी–वाणी, बोल, वचन। आपा–अहंकार। औरन–दूसरों को। सीतल–शीतल,ठण्डा, लघु–छोटा। डारि–छोड़ना। तोकूँ–तुम्हारे लिये। बुवै–बोये। ताहि–उनके लिये। बोय–बोना। वाकूँ–उसके लिये। सुअम्ब–मीठे आम। तरु–वृक्ष, फरहिं–फलते हैं। परहेत–दूसरों के लिये। पाहन–पत्थर। हनत–मारना। पंथी–राहगीर, पथिक।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) तुलसीदास जी ने कहाँ जाने के लिए मना किया है?

(ख) हमें कैसी वाणी बोलना चाहिए?

(ग) रहीम ने छोटों के महत्व को किस प्रकार समझाया है?

(घ) जो हमारा बुरा चाहता हो, उसके साथ हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए?

(ङ) खजूर का पेड़ बड़ा होने पर भी उपयोगी क्यों नहीं है?

(च) कवि ने सन्त की तुलना आम के वृक्ष से क्यों की है?

2. निम्नलिखित पंक्तियों को पूरा कीजिए–

(क) आवत हिय हरषै नहीं ————————————।

(ख) पंथी को छाया नहीं ————————————।

3. निम्नलिखित वाक्यों में सही के सामने सही (✓) का एवं गलत के सामने गलत (X) का चिह्न लगाइए–

(क) जहाँ सम्मान न मिले वहाँ जाना चाहिए।

(ख) जो तुम्हारी बुराई करता हो तुम्हें भी उसकी बुराई करना चाहिए।

(ग) हमें सदैव मीठी वाणी बोलना चाहिए।

(घ) समय पर छोटी चीज भी काम आती है।

4. निम्नलिखित पंक्तियों के भावार्थ लिखिए:—

(क) आवत हिय हरषै नहीं, नैनन नहीं सनेह।

(ख) ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।

(ग) जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तलवारि।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के दो—दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—

कंचन, नैन, नदी, जंगल, मेह, बानी

पढ़िए और समझिए —

क	ख
भीतर	बाहर
बड़ा	छोटा

यहाँ पर स्तम्भ क में दिए शब्द का स्तम्भ ख में विपरीत अर्थ बताने वाला शब्द है।

ध्यान रखिए—

एक दूसरे के विपरीत अर्थ देने वाले शब्द विपरीतार्थ या विलोम शब्द कहलाते हैं।

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

काँटा, कठोर, शीतल, ज्ञानी

आइए, समझिए—

सूरज	सूर्य
आग	अग्नि
पत्ता	पत्र

यहाँ पहले सामान्य बोलचाल के शब्द हैं, किन्तु उनके समक्ष उनके मूल रूप दिए गए हैं, जो संस्कृत भाषा के शब्द हैं। बोलचाल में इनके रूप बदल गए हैं। इन्हें **तत्सम और तद्भव** शब्द कहते हैं।

तत्सम शब्द– संस्कृत भाषा के जो मूल शब्द हिन्दी में बोले व लिखे जाते हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे : सूर्य, अग्नि, पत्र।

तद्भव शब्द– ऐसे शब्द जो मूलरूप में संस्कृत के हैं किन्तु हिन्दी में जिनका रूप बदल गया है, तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे : सूरज, आग, पत्ता।

3. निम्नलिखित तालिका में दिए गए तद्भव और तत्सम शब्दों की सही जोड़ी बनाइए–

तद्भव शब्द	तत्सम शब्द
हिय	पत्थर
सनेह	शीतल
तिरसूल	नयन
नैन	स्नेह
सीतल	हृदय
पाहन	त्रिशूल

4. कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) रहिमन देख ——— को ———— न दीजिए डारि। (लघु, बड़ेन)

(ख) जो तोकूँ ———— बुवै, ताहि बोय तू ——— । (फूल, काँटा)

(ग) आवत हिय ———— नहीं, नैनन नहीं ————। (हरषै, सनेह)
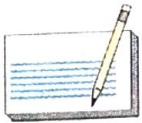
योग्यता विस्तार–

- तुलसीदास, कबीरदास और रहीम के नीति सम्बन्धी कुछ दोहे खोजकर याद कीजिए और उन्हें लिखकर अपनी कक्षा में टाँगिए।
- सदाचार और सद्व्यवहार से सम्बन्धित कुछ वाक्य संग्रहीत कीजिए और कक्षा में सुनाइए।

पाठ 15

मिट्ठू

आइए सीखें –

● मित्रता की भावना ● पशु–पक्षियों के प्रति प्रेम और संवेदना ● मनोरंजन के पुराने साधनों से परिचय ● क्रिया का ज्ञान, वचन और वाक्य रचना की समझ।

बन्दरों के तमाशे तो तुमने बहुत देखे होंगे। मदारी के इशारों पर बन्दर कैसी कैसी नकलें करता है, उसकी शरारतें भी तुमने देखी होगी। तुमने उसे घरों से कपड़े उठाकर भागते देखा होगा। पर आज हम तुम्हें एक ऐसा हाल सुनाते हैं, जिससे मालूम होगा कि बन्दर लड़कों से दोस्ती भी कर सकता है।

कुछ दिन हुए लखनऊ में एक सरकस कम्पनी आई थी। उसके पास शेर, भालू, चीता और कई तरह के और भी जानवर थे। इनके सिवा एक बन्दर मिट्ठू भी था। लड़कों के झुण्ड के झुण्ड रोज इन जानवरों को देखने आया करते थे। मिट्ठू ही उन्हें सबसे अच्छा लगता। उन्हीं लड़कों में गोपाल भी था। वह रोज आता और मिट्ठू के पास घण्टों चुपचाप बैठा रहता। उसे शेर, भालू, चीते आदि से कोई प्रेम न था। वह मिट्ठू के लिए घर से चने, मटर, केले लाता और खिलाता। मिट्ठू भी उससे इतना हिल गया था कि बगैर उसके खिलाए कुछ न खाता। इस तरह दोनों में बड़ी दोस्ती हो गई।

एक दिन गोपाल ने सुना कि सरकस कम्पनी वहाँ से दूसरे शहर में जा रही है। यह सुनकर उसे बड़ा रंज हुआ। वह रोता हुआ अपनी माँ के पास आया और बोला– 'अम्मा, मुझे एक अठन्नी दो, मैं जाकर मिट्ठू को खरीद लाऊँ। वह न जाने कहाँ चला जाएगा फिर मैं उसे कैसे देखूँगा? वह भी मुझे न देखेगा तो रोएगा।''

शिक्षण संकेत – ● कहानी का हाव–भाव के साथ वाचन करें। ● पाठ में आए विरामचिह्नों, मुहावरों और उर्दू के शब्दों को उदाहरण सहित समझाएँ। ● छात्रों को इस कहानी का अभिनय करने को कहें। ● बच्चों को यह बताएँ कि अब जीवों के प्रति क्रूरता रोकने के लिए सरकस में तथा मदारी के तमाशे में बन्दर भालू आदि का प्रदर्शन कानूनी रूप से प्रतिबन्धित है। ● शिक्षक बच्चों को बताएँ कि जब यह कहानी लिखी गई थी तब अठन्नी का मूल्य अधिक था। वर्तमान में अठन्नी को पचास पैसे के रूप में जानते हैं।

माँ ने समझाया– "बेटा, बन्दर किसी को प्यार नहीं करता। वह तो बड़ा शैतान होता है। यहाँ आकर सबको काटेगा, मुफ्त में उलाहने सुनने पड़ेंगे।"

लेकिन लड़के पर माँ के समझाने का कोई असर न हुआ। वह रोने लगा। आखिर माँ ने मजबूर होकर उसे एक अठन्नी दे दी।

अठन्नी पाकर गोपाल मारे खुशी के फूल उठा। उसने अठन्नी को मिट्टी में मलकर खूब चमकाया, फिर मिट्ठू को खरीदने चला। लेकिन मिट्ठू वहाँ दिखाई न दिया। गोपाल का दिल भर आया– मिट्ठू कहीं भाग तो नहीं गया? मालिक को अठन्नी दिखाकर गोपाल बोला– "क्यों साहब, मिट्ठू को मेरे हाथ बेचेंगे?"

मालिक रोज उसे मिट्ठू से खेलते और खिलाते देखता था। हँसकर बोला – "अबकी बार आऊँगा तो मिट्ठू को तुम्हें दे दूँगा।"

गोपाल निराश होकर चला आया और मिट्ठू को इधर–उधर ढूँढने लगा। वह उसे ढूँढने में इतना मग्न था कि उसे किसी बात की खबर न थी। उसे बिल्कुल न मालूम हुआ कि वह चीते के कठघरे के पास आ गया था। चीता भीतर चुपचाप लेटा था। गोपाल को कठघरे के पास देखकर उसने पंजा बाहर निकाला और उसे पकड़ने की कोशिश करने लगा। गोपाल तो दूसरी तरफ ताक रहा था। उसे क्या खबर थी कि चीते का तेज पंजा उसके हाथ के पास पहुँच गया है। वह इतना करीब था कि चीता उसका हाथ पकड़कर खींच ले कि मिट्ठू न

मालूम कहाँ से आकर उसके पंजे पर कूद पड़ा और पंजे को दाँतों से काटने लगा। चीते ने दूसरा पंजा निकाला और उसे ऐसा घायल कर दिया कि वह वहीं पर गिर पड़ा और जोर–जोर से चीखने लगा।

मिट्ठू की यह हालत देखकर गोपाल भी रोने लगा। दोनों का रोना सुनकर लोग दौड़े, पर देखा कि मिट्ठू बेहोश पड़ा है और गोपाल रो रहा है। मिट्ठू का घाव तुरन्त धोया गया और मरहम लगवाया गया। थोड़ी देर में उसे होश आ गया। वह गोपाल की ओर प्यार से देखने लगा, जैसे कह रहा हो कि अब क्यों रोते हो? मैं तो अच्छा हो गया।

कई दिन मिट्ठू की मरहम पट्टी होती रही और आखिर वह बिल्कुल अच्छा हो गया। गोपाल अब रोज आता और उसे रोटियाँ खिलाता।

आखिर कम्पनी के चलने का दिन आया। गोपाल बहुत रंजीदा था। वह मिट्ठू के कठघरे के पास खड़ा आँसू–भरी आँखों से देख रहा था कि मालिक ने आकर कहा–"अगर तुम मिट्ठू को पा जाओ तो क्या करोगे?"

गोपाल ने कहा– "मैं उसे अपने साथ ले जाऊँगा, उसके साथ–साथ खेलूँगा, उसे अपनी थाली में खिलाऊँगा, और क्या!"

मालिक ने कहा– "अच्छी बात है, मैं, तुमसे अठन्नी लिये बिना ही इसे तुम्हें देता हूँ।"

गोपाल को जैसे कोई खजाना मिल गया। उसने मिट्ठू को गोद में उठा लिया, पर मिट्ठू नीचे कूद पड़ा और उसके पीछे–पीछे चलने लगा। दोनों खेलते–कूदते घर पहुँच गए।

मुन्शी प्रेमचन्द जी का जन्म सन् 1880 (अठारह सौ अस्सी) ई. में लमही वाराणसी में हुआ था। इन्होंने हिन्दी तथा उर्दू में लगभग तीन सौ कहानियाँ तथा अनेक श्रेष्ठ उपन्यासों की रचना की। ये कहानी और उपन्यास सम्राट के रूप में प्रसिद्ध है। इनका निधन सन् 1936 (उन्नीस सौ छत्तीस) ई. में हुआ।

– मुंशी प्रेमचन्द

शब्दार्थ–

शरारत– शैतानी। झुण्ड–समूह, दल। तमाशे– प्रदर्शन, करतब। मदारी– पशु पक्षियों का खेल दिखाने वाला, (डमरू ढोलक, बाँसुरी बजाकर तमाशा दिखाने वाला)। सरकस कम्पनी– तमाशा दिखाने वाले लोगों का समूह। रंज– दुःख। उलाहना – शिकायत। खुशी से फूल उठना – बहुत प्रसन्न होना। दिल भर आना – दुःखी होना। मग्न– मगन, लीन। रन्जीदा– उदास, दुःखी। आँसू भरी आँखें– रोना।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) सरकस कम्पनी किस शहर में आई थी?

(ख) गोपाल और दूसरे लड़कों को कौन सा जानवर अच्छा लगता था?

(ग) गोपाल और मिट्ठू आपस में मित्र कैसे बन गए?

(घ) गोपाल चीते के कठघरे के पास कैसे पहुँच गया?

(ङ) मिट्ठू कैसे घायल हो गया?

(च) गोपाल प्रसन्न क्यों था?

2. कोष्टक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए।

(क) अठन्नी पाकर -------- मारे खुशी के फूल उठा। (गोपाल/मिट्ठू)

(ख) मिट्ठू नाम का एक -------- था। (तोता/बन्दर)

(ग) कुछ दिन हुए -------- में एक सरकस कम्पनी आई थी। (आगरा/लखनऊ)

(घ) माँ ने मजबूर होकर उसे एक -------- दे दी। (चवन्नी/अठन्नी)

(ङ) अबकी बार आऊँगा तो -------- तुम्हें दे दूँगा। (भालू/मिट्ठू)

3. किसने किससे कहा लिखिए–

किसने कहा	कथन	किससे कहा
बेटा बन्दर किसी को प्यार नहीं करता।		
क्यों साहब मिट्ठू को मेरे हाथ बेचोगे।		
अगर तुम मिट्ठू को पाजाओ तो क्या करोगे।		

भाषा अध्ययन

(क) निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
कम्पनी, मिट्ठू, मरहम, आँसू

(ख) कैसी–कैसी शब्दों में योजक चिह्न का प्रयोग हुआ है। इस पाठ में से योजक चिह्न के प्रयोग वाले शब्द छाँटकर लिखिए।

पढ़िए और समझिए

रोता है, जाता है, खाता है, हँसता है, पढ़ता है।

यहाँ – रोता, जाता, खाता, हँसता, पढ़ता शब्दों से किसी काम का करना या होना समझा जाता है।

अब जानिए –

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पता चले, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे– राम पुस्तक पढ़ता है। इसमें "पढ़ता" शब्द से पढ़ने के काम का होना या करना पता चलता है।

4. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया पद के नीचे रेखा खींचिए–

उदा. (क) राम घर जाता है।

(ख) सीता गाना गाती है।

(ग) सोहन गेंद से खेलता है।

(घ) राधा नाचती है।

5. निम्नलिखित शब्दों में से एकवचन और बहुवचन शब्द अलग–अलग कीजिए–

लड़का, गाय, आँखें, बन्दरों, लड़के, गायें, औरत, बन्दर, ग्वाला, ग्वाले

एकवचन	बहुवचन
______	______
______	______
______	______
______	______
______	______

6. **निम्नलिखित शब्दों को वर्णमाला के क्रम से (प्रथम वर्ण देखकर) लिखिए–**

उदाहरण:–

गोपाल, क्षेत्र, बन्दर, चिड़िया, शेर, सरकस

7. **वाक्यांश को उसके सामने दिए गये वाक्य में जोड़कर लिखिए–**

उदाहरण:–
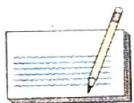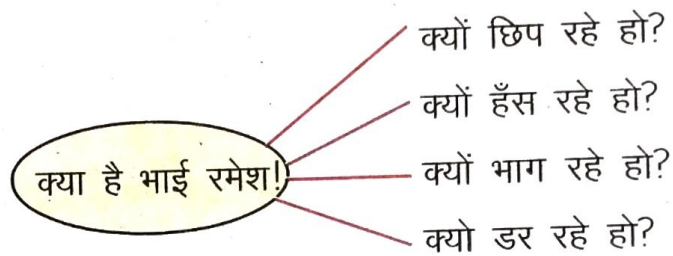
योग्यता विस्तार

- अगर आपके गाँव/शहर में या आसपास कोई सरकस आए तो उसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।
- जानवरों के प्रति प्रेम और मित्रता व्यक्त करने वाली अन्य कहानियाँ या प्रसंग पढ़िए तथा कक्षा में सुनाइए।
- पशु पक्षियों से सम्बन्धित पुस्तकें पढ़िए और उनके भोजन, निवास स्थान तथा प्रवृत्तियों को समझिए।
- आपस में चर्चा कीजिए कि मुक्त रहने वाले पशु–पक्षियों को पालतू बनाकर पिंजड़े में बन्द रखना क्यों ठीक नहीं है?
- 'चीता' के बारे में पता कीजिए। यह प्राणी अब भारत में नहीं पाया जाता।

विविध प्रश्नमाला – दो

(पाठ क्रमांक 9 से 16 तक)

प्रश्न 1. निम्नलिखित वाक्यों के सामने उनसे सम्बन्धित कविता की पंक्ति लिखिए?

(क) जहां सुई से काम बनना हो, वहाँ तलवार भला क्या करेगी।

....

(ख) माँ, यह कदम्ब का पेड़ अगर यमुना नदी के किनारे होता।

....

(ग) दीपक पंक्तियों में इस तरह सजे हुए हैं, जैसे किसी डाली पर फूल सजे हों।

....

प्रश्न 2. सही उत्तर छाँटकर लिखिए–

(I) नर्मदा नदी किस सागर में मिलती है?

(क) लाल सागर (ख) अरब सागर

(ग) भू मध्यसागर (घ) मृत सागर

(II) इंदिराजी को पत्र लिखा था –

(क) महात्मा गाँधी ने (ख) सरदार पटेल ने

(ग) जवाहर लाल नेहरू ने (घ) सुभाषचन्द्र ने

(III) गोपाल को किसने बचाया?

(क) रीछ ने (ख) बन्दर ने

(ग) हाथी ने (घ) घोड़े ने

प्रश्न 3. सही (✓) व गलत (x) का चिह्न लगाइए?

(क) बालक, कदम्ब का पेड़ गंगा नदी के किनारे चाहता है।

(ख) घोड़े को खूँटे ने जन्म दिया था।

(ग) गोपाल सरकस के मालिक से बन्दर खरीदने गया।

(घ) नर्मदा नदी पश्चिम दिशा में बहती है।

प्रश्न 4. 'रेवा' किस नदी का दूसरा नाम है?

प्रश्न 5. बालक बाँसुरी के स्वर में किसे बुला रहा है?

प्रश्न 6. तालाब के किनारे बंजारे की किससे भेंट हुई?

प्रश्न 7. सन्त की तुलना किससे की गई है?

प्रश्न 8. दीपक किस प्रकार जल उठे?

प्रश्न 9. रिक्त स्थानों में भरिए, किसने–किससे कहा –

(क) नहीं, नहीं। मैं तुम्हें नहीं निकाल सकता।

....................ने..........................से कहा।

(ख) नीचे उतरो मेरे भैया तुम्हें मिठाई दूँगी।

....................ने..........................से कहा।

(ग) मैं.......,मैं.......मैं कुछ नहीं कर रहा था।

....................ने..........................से कहा।

प्रश्न 10. नेहरूजी, इन्दिरा को बहादुर सिपाही क्यों बनाना चाहते थे?

प्रश्न 11. आप दीपावली का त्योहार कैसे मनाते हैं?

प्रश्न 13. निम्नलिखित शब्दों में से दिए गये शब्दों के पर्यायवाची (समानार्थी) शब्द चुनकर लिखिए –

पादप, सूर्य, पवन, नृप, अग्नि, पावक, भूप, वायु, रवि, तरू

(क) सूरज ....

(ख) राजा ....

(ग) आग ....

(घ) हवा ....

(ङ) पेड़ ....

प्रश्न 14. निम्नांकित शब्दों में 'आई' लगाकर नये शब्द बनाइए –

उदाहरणः– कठिन – कठिनाई

लड़ – ....

पढ़ – ....

चढ़ – ....

मँहगा – ....

प्रश्न 15. निम्नलिखित शब्दों में से संज्ञा व सर्वनाम छांटकर तालिका में लिखिए–

आगरा, उसका, वह, तुम, कमल, मिठाई, कहाँ, उधर, गाय, पेड़, कितना, मैं, हम, राजा चक्कर

संज्ञा	सर्वनाम
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

प्रश्न 16. निम्नलिखित वाक्यों के शब्दों को सही क्रम में लिखिए –

(क) है रेखा जीवन की मध्यप्रदेश नदी नर्मदा।

....

(ख) नहीं चाहिए करना विश्वास का दुष्टों।

....

(ग) ले लिए माँ ने गुलाबजामुन रम्मू की।

....

(घ) हो चुप गई कहकर इतना नानी।

....

प्रश्न 17. उचित शब्द चुनकर लिखिए–

(क) मोहन घर..................................था। (जाता / जाती)

(ख) सीता पत्र..................................। (लिखेगा / लिखेगी)

(ग) गाय घास.....................................। (चरता / चरती)

(घ) सूर्य पूर्व में उदय हो..............................है। (रहा / रही)

(ङ) वह पाठशाला जा चुकी..................................। (होगा / होगी)

प्रश्न 18. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध करके लिखिए।

(क) र्नमदा ....

(ख) पश्चीम ....

(ग) पृक्रति ....

(घ) कृर्तिम ....

(ङ.) सीतल ....

(च) पड़ाई ....

प्रश्न 19. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए–

(क) स्वयं लिखी गई अपने जीवन की कहानी.........................

(ख) मन को मोहित करने वाला.........................

प्रश्न 20. निम्नलिखित शब्दों में से एक वचन और बहुवचन छाँटिए–

नदी, धाराएँ, पत्र, स्त्रियाँ, व्यक्ति, कहानी, आँखें, भेड़, चींटी, डाली, पतंग, जहाज, पुस्तकें, तितलियाँ

एक वचन	बहुवचन
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

प्रश्न 21. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

(क) जी चुराना

वाक्य ....

(ख) सबक सिखाना

वाक्य ....

(ग) मुसीबत गले पड़ना

वाक्य ....

प्रश्न 22. अपने मित्र को पत्र लिखिए। आपकी सहायता के लिए कुछ बिन्दु दिए गए हैं।

- गाँव या स्थान का नाम जहाँ मेला भारत है
- मेले तक किस साधन से गए
- मेले में कौन–कौन से अन्य मित्र या लोग मिले
- मेले में क्या–क्या खरीदा
- मेले में क्या–क्या खाया
- मेले में क्या अच्छा लगा

पत्र लिखने वाले का नाम

....

प्रश्न 23. 'खूँटे का घोड़ा' अथवा 'मिट्ठू' कहानी को अपने शब्दों में लिखिए।
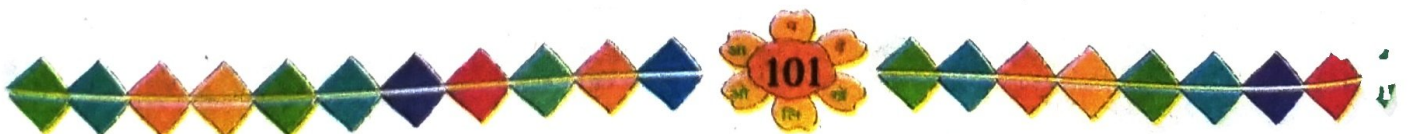
पाठ 16
मीठे बोल

आइए सीखें –

- कविता को हावभाव और लय से पढ़ना
- वाणी के महत्व की समझ।
- विलोम शब्दों से परिचय
- प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाना।

तुम बोलो मीठे बोल, नहीं कुछ जाता है,
जो सुनता है आनन्द बहुत ही पाता है।
जब वाणी में मिठास घुल जाती है,
कैसी भी हो गाँठ, तुरन्त खुल जाती है,
मीठी वाणी की तुला अनोखी है, इस पर
भारी से भारी मुश्किल भी तुल जाती है।
मीठा बोलोगे तो मीठे बोल सुनोगे,
वाणी का वाणी से ऐसा ही नाता है,
तुम बोलो मीठे बोल, नहीं कुछ जाता है।
तुम छुओ किसी को सच्चे अपनेपन से,
तो उतर नहीं पाओगे उसके मन से,
मनभावन, मीठे बोल सुहावन होते हैं,
वे मूल्यवान हैं अधिक किसी भी धन से।
वाणी का मरहम तनिक लगाकर तो देखो,

शिक्षण संकेत – • शिक्षक बच्चों को मीठी बोली का महत्व समझाएँ। • शिक्षक लय के साथ कविता का सस्वर वाचन करेंगे, फिर बच्चे उसे दोहराएँ। इस प्रकार शिक्षक बच्चों को लय व ताल के साथ एवं उचित प्रवाह में कविता का वाचन सिखाएँ। • कठिन शब्दों के अर्थ वाक्य प्रयोग द्वारा समझाएँ। • बच्चों के सहयोग से कविता का भाव स्पष्ट करें।

यह दोनों को ही शीतलता पहुँचाता है,
तुम बोलो मीठे बोल, नहीं कुछ जाता है।

मीठा बोलोगे तो मीठे बोल सुनोगे
मीठे सपने तुम अपने लिए बुनोगे,
सबसे अच्छी होती मिठास वाणी की,
अपने अनुभव से यह बात गुनोगे।
जीवन की कटुता न पास कभी फटकती,
मीठी बोली का पथ जो भी अपनाता है,
तुम बोलो मीठे बोल, नहीं कुछ जाता है।

सरल जी का जन्म 9 (नौ) जून 1921 ई. (उन्नीस सौ इक्कीस) में गुना जिले के अशोक नगर में हुआ था। श्री कृष्ण सरल उस समर्पित व्यक्तित्व का नाम है जिसके लेखन में कई विश्व कीर्तिमान स्थापित किए है। देश भक्ति एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का साहित्य 43 (तैतालीस) काव्य कृतियाँ है।

– श्रीकृष्ण सरल

शब्दार्थ

आनन्द–सुख। वाणी–बोली। गाँठ–कपट, ग्रन्थि। तुला–तराजू। अनोखी–अनूठी, निराली। मुश्किल–कठिनाई। तुल जाती–मिट जाती, हल हो जाती। मनभावन–मन को अच्छे लगने वाले। सुहावन–शोभा बढ़ाने वाले। मूल्यवान–कीमती, मंहगे। मरहम–लेप। तनिक– थोड़ी। शीतलता– ठण्डक। फटकती–आती, पथ–रास्ता,मार्ग।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(1) मीठे बोल बोलने से क्या लाभ हैं?

(2) सबसे अच्छी वाणी कौन–सी होती है?

(3) मीठी वाणी की तुला अनोखी क्यों है?

(4) मीठी बोली किस–किस को शीतलता पहुँचाती है?

2. खाली स्थान भरिए –

(वाणी, सुहावन, गाँठ, आनन्द)

(1) मीठी बोली सुनकर ————————— प्राप्त होता है।

(2) मीठे बोल ————————— होते हैं।

(3) सबसे अच्छी मिठास ——————— की होती है।

(4) मीठी बोली से कोई भी —————— खुल जाती है।

3. सही विकल्प चुनकर लिखिए –

(1) मीठी बोली से आशय है –

(अ) सुखद वाणी (ब) मिठाई खाकर बोलना

(स) मिठाई की बातें करना (द) मिठाई के नाम लेना

(2) बोली की मिठास अनुभव होनी चाहिए –

(अ) बोलने में (ब) सुनने में

(स) स्वभाव में (द) सभी में

4. कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए–

(क) मीठा बोलोगे तो ....

.... ऐसा ही नाता है।

(ख) मन भावन मीठे बोल ....

.... किसी भी धन से।

(ग) मीठी बोली का पथ ....

.... नहीं कुछ जाता है।

भाषा अध्ययन

1. **पढ़िए, समझिए और लिखिए—**

मीठा	मीठी	मीठे
बोल	....	....
....	....	सुने
....	छुई	....
पहुँचा	....	....

2. **सही जोड़ियाँ बनाइए—**

जैसे— मीठा — मिठास

मीठा	कटुता
सुहाना	मूल्यवान
अपना	मिठास
मूल्य	सुहावन
कटु	अपनापन

3. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द वर्ग पहेली में दिए गए हैं। आप पहेली से छाँटकर लिखिए**

नि	रा	शा	अ	प	ना
क	म	भा	री	शी	ख
ह	ल्का	धु	X	त	ट्टा
दु	स	र	ल	ल	अ
ख	च्चा	X	X	ता	च्छा

शब्द	मीठा	हल्का	कठिन	अधिक	झूठा
विलोम शब्द					
शब्द	उष्ण	बुरा	पराया	आशा	सुख
विलोम शब्द					

4. 'शीतल' में 'ता' जोड़कर 'शीतलता' शब्द बना है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में 'ता' जोड़कर नए शब्द बनाइए–

शब्द	नया शब्द
शीतल	शीतलता
अधिक	----------
लघु	----------
कटु	----------
सज्जन	----------
विनम्र	----------
गुरु	----------
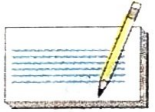
योग्यता विस्तार

- मीठी बोली से सम्बन्धित अन्य कविताएँ पढ़िए।
- कुछ ऐसी घटनाएँ कक्षा में सुनाइए जब मीठी बोली के कारण काम बन गया हो।
- श्री कृष्ण सरल की अन्य रचनाएँ प्राप्त कर पढ़िए।

पाठ 18
वीरांगना दुर्गावती

आइए सीखें –

● रानी दुर्गावती की वीरता एवं राष्ट्रप्रेम से परिचित होना ● घटनाओं का क्रमबद्ध अध्ययन ● मुहावरों का वाक्य प्रयोग ● संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग

रानी दुर्गावती का नाम इतिहास में महान वीरांगना के रूप में बड़े आदर और श्रद्धा से लिया जाता है।

उनका जन्म उत्तरप्रदेश के राठ (महोबा) नामक स्थान पर हुआ था। वे कालिंजर के अन्तिम शासक महाराजा कीर्तिसिंह चन्देल की इकलौती सन्तान थी।

नवरात्रि की दुर्गाष्टमी को जन्म लेने के कारण पिता ने इनका नाम दुर्गावती रखा। बचपन में ही दुर्गावती की माता का देहान्त हो गया था। पिता ने इन्हें पिता के साथ–साथ माँ का प्यार भी दिया और इनका पालन–पोषण बड़े लाड़ प्यार से किया।

दुर्गावती बचपन से ही बड़ी बहादुर थीं। अस्त्र–शस्त्र चलाने में और घुड़सवारी करने में उनकी विशेष रुचि थी। राजकुमार के समान ही उन्होंने वीरता के कार्यों का प्रशिक्षण लिया। बड़ी होने पर वे अकेली ही शिकार को जाने लगीं। बन्दूक और तीर–कमान से अचूक निशाना लगाने में वे निपुण थीं।

दुर्गावती वीर होने के साथ–साथ सुशील, भावुक और अत्यन्त सुन्दरी भी थीं। इन गुणों के साथ–साथ दुर्गावती में धैर्य, साहस, दूरदर्शिता और स्वाभिमान भी कूट–कूट कर भरा था।

दुर्गावती का विवाह गोंडवाना नरेश राजा दलपति शाह से सम्पन्न हुआ। राजा दलपतिशाह बड़े वीर, दानी और न्यायप्रिय शासक थे। दुर्गावती अब गोंडवाना की रानी बन गईं। इनका वैवाहिक जीवन बड़ी सुख–शान्ति से बीतने लगा। इसी बीच रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया,

शिक्षण संकेत – ● दुर्गावती का जिन शहरों, स्थानों से सम्बन्ध रहा है उसे मान चित्र में दिखाकर समझाएँ। ● रानी दुर्गावती का ऐतिहासिक महत्व समझाएँ।

जिसका नाम वीर नारायण रखा गया।

महाराजा दलपतिशाह अचानक बीमार पड़ गए। उनका स्वास्थ्य बिगड़ता ही गया। एक दिन राजा इस संसार से चल बसे। रानी की तो मानो दुनिया ही उजड़ गई। रानी और प्रजा पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।

अपने पुत्र की खातिर रानी को यह आघात सहन करना पड़ा। वीरनारायण उस समय बहुत छोटा था। रानी ने उसका राजतिलक सम्पन्न कराया और गढ़मण्डला राज्य की संरक्षिका के रूप में रानी स्वयं शासन का कार्य देखने लगीं।

रानी दुर्गावती बड़ी ही सूझ–बूझ तथा कुशलता से राज्य का संचालन करने लगीं। वीर नारायण की शिक्षा भी अच्छी तरह से चल रही थी। राज्य में धन–दौलत की कमी नहीं थी। प्रजा सुख–चैन की वंशी बजा रही थी। रानी ने अपनी प्रजा की भलाई के लिए अनेक योजनाएँ चलाईं। अनेक निर्माण कार्य किए। अपने राज्य में अनेक इमारतें, कुएँ, तालाब, बावड़ी आदि भी बनवाए। इनके शासनकाल को गोंडवाने का स्वर्णयुग कहा जाता है। प्रजा उनके कार्य और व्यवहार से प्रसन्न और सन्तुष्ट थी।

जबलपुर नगर में स्थित रानीताल, चेरीताल और मदनमहल आज भी रानी की स्मृति को बनाए हुए हैं। उस समय इनके राज्य में बावन गढ़ थे।

रानी दुर्गावती ने सोलह वर्षों तक कुशलतापूर्वक अपने राज्य की देखभाल की। इस बीच रानी ने अपनी सेना को नए ढंग से संगठित किया। नारी–सेना बनाई और शत्रु राज्यों में गुप्तचरों का जाल बिछाया। इससे राज्य की शासन व्यवस्था में काफी सुधार आया और राज्य की शक्ति भी बढ़ी।

गढ़मण्डला राज्य की सम्पन्नता देखकर अनेक राजाओं ने उनके राज्य पर आक्रमण किए पर रानी की वीरता के आगे उन्हें परास्त होना पड़ा।

उस समय दिल्ली में सम्राट अकबर का राज्य था। गढ़मण्डला की सम्पन्नता और स्वतन्त्रता उसकी आँख की किरकिरी बनी थी। उसने सोचा कि स्त्री होने के कारण रानी दुर्गावती से उसका राज्य छीनने में कोई मुश्किल नहीं होगी। उसने सर्वप्रथम एक सन्देशवाहक भेजकर रानी दुर्गावती को यह पैगाम भेजा कि वह उसकी आधीनता स्वीकार कर लें। पैगाम पाते ही रानी आग बबूला हो गईं और उन्होंने बादशाह अकबर का पैगाम ठुकरा दिया।

अकबर ने अपने सेनापति आसिफ खाँ को गढ़मण्डला पर अधिकार करने के लिए भेज दिया। सेनापति आसिफ खाँ एक बहुत बड़ी सेना और तोपखाना लेकर गढ़मण्डला की ओर चल पड़ा।

रानी को इस आक्रमण की सूचना मिली, तो उन्होंने अपनी प्रजा को संगठित कर उसका सामना करने का निश्चय किया। रानी दुर्गावती ने मुगल सेना से लड़ने के लिए अपने राज्य के सबसे मजबूत किले सिंगौरगढ़ को चुना। यह गढ़ आजकल दमोह जिले में है। आसिफ खाँ ने अपनी विशाल सेना के घमण्ड में सिंगौरगढ़ पर चढ़ाई कर दी।

किले के बाहर रानी से उसकी पहली मुठभेड़ हुई। शत्रु सेना के मुकाबले रानी की सेना बहुत कम थी, पर रानी दुर्गावती साक्षात् दुर्गा की तरह युद्ध में कूद पड़ी। रानी ने बड़ी बुद्धिमानी और चतुराई से मुगल सेना को विन्ध्य पर्वत की एक सँकरी घाटी में आने के लिए विवश कर दिया। घाटी में बसे नरही गाँव के पास रानी ने चट्टानों में छिपे अपने सैनिकों की सहायता से अकबर की सेना को आसानी से परास्त कर दिया।

मुगल सेना को हटना पड़ा, तभी उसका पीछे रह गया तोपखाना आ गया। मुगल सेना ने बड़ी–बड़ी तोपों से गोलों की झड़ी लगा दी। रानी के सैनिक तीर–कमान और तलवार से लड़ रहे थे। रानी भी हाथी पर सवार होकर अदम्य साहस के साथ दुश्मन से जूझ रही थीं।

रानी की फौज के पीछे एक सूखी नदी थी। अचानक पानी बरसने से उसमें बाढ़ आ गई। सामने शत्रु का आग उगलता तोपखाना, पीछे बाढ़ आई नदी, रानी और उनकी सेना दोनों ओर से घिर गए। घमासान युद्ध होने लगा, परन्तु तोप के गोलों का मुकाबला तीर तलवार कब तक करते। फिर भी रानी दुर्गावती वीरतापूर्वक आसिफ खाँ की विशाल सेना से जूझती रहीं। यहाँ
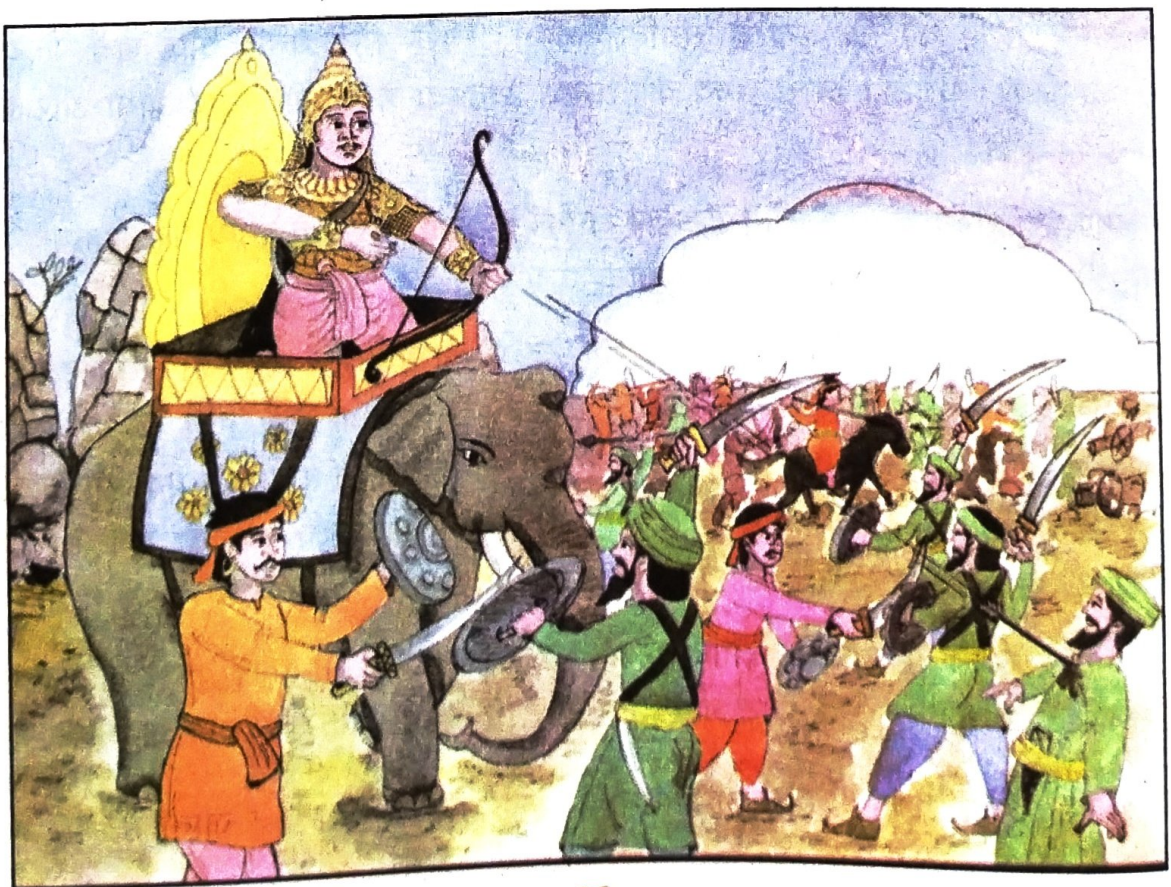
तक कि एक बार फिर मुगल सेना के सामने हार का खतरा उत्पन्न हो गया। तभी एक तीर रानी की बाँयीं आँख में आ लगा। बहुत प्रयास करने के बाद भी तीर का फलक आँख से नहीं निकला।

उसी समय शत्रु से लड़ते–लड़ते उनके पुत्र वीरनारायण की मृत्यु हो गई। इससे सारी सेना घबरा गई और उसमें हाहाकार मच गया। पुत्र को वीरगति प्राप्त होने पर भी रानी विचलित नहीं हुई। घायल होते हुए भी और अधिक वीरता के साथ मुगल सेना का सामना करने लगीं।

तभी एक और तीर रानी के गले में आकर लगा। यह तीर प्राणघातक सिद्ध हुआ। अब उन्हें अपने जीवन और जीत की आशा न रही। जीते जी शत्रु उनके शरीर को न छू सके, इसलिए उन्होंने अपनी कटार अपनी छाती में भोंक ली और स्वयं को समाप्त कर लिया।

रानी दुर्गावती ने अन्तिम साँस तक अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अद्वितीय वीरता, अदम्य साहस और असाधारण रण कौशल का परिचय दिया। इस तरह रानी दुर्गावती अपनी मातृभूमि की आन–बान–शान पर मिटकर भी अमर हो गई। युगों–युगों तक उनका अलौकिक आत्म–त्याग प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

शब्दार्थ–

वीरांगना–वीर नारी। अस्त्र–शस्त्र– अस्त्र– फेंककर चलाने वाला हथियार, जैसे–तीर, शस्त्र– हाथ में रखकर प्रयोग में लाया जाने वाला हथियार। गढ़मण्डला–गोंड़वाना राज्य का दूसरा नाम। स्वर्ण युग–वह समय जिसमें प्रजा सब प्रकार से सुखी हो। अचूक– न चूकने वाला, खाली न जाने वाला। निपुण–कुशल, दक्ष। लावण्य–सुन्दरता। दूरदर्शिता–दूर की बात सोचने का गुण या क्षमता। स्वाभिमान–आत्मसम्मान। गुप्तचर– छिपकर टोह लेने वाला, जासूस। पैगाम–संदेश, सूचना। अदम्य–जो दबाया न जा सकें।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) रानी दुर्गावती का नाम दुर्गावती क्यों रखा गया था?

(ख) दलपति शाह कौन थे?

(ग) रानी दुर्गावती के शासन को गोंडवाने का स्वर्णयुग क्यों कहा जाता है?

(घ) सम्राट अकबर ने रानी के पास क्या पैगाम भेजा?

(ङ) रानी दुर्गावती का नाम इतिहास में क्यों अमर हो गया?

2. **कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–**

(क) रानी दुर्गावती का शासनकाल ———— का स्वर्णयुग कहा जाता है। (बघेलखंड / गोंड़वाना)

(ख) रानी दुर्गावती बचपन से ही बड़ी ———— थीं। (डरपोक / बहादुर)

(ग) दुर्गावती के पुत्र का नाम ———— था। (वीर नारायण, प्रेम नारायण)

(घ) रानी–ताल ———— नगर में स्थित है। (जबलपुर / भोपाल)

(ङ) रानी दुर्गावती साक्षात् ———— की तरह युद्ध में कूद पड़ी। (दुर्गा / लक्ष्मी)

3. **बताइए निम्नलिखित कथन सत्य हैं या असत्य।**

(क) रानी दुर्गावती की माता का देहान्त उनके बचपन में ही हो गया था।

(ख) रानी दुर्गावती में धैर्य, साहस और दूरदर्शिता का अभाव था।

(ग) प्रजा उनके कार्य और व्यवहार से सन्तुष्ट नहीं थी।

(घ) रानी दुर्गावती ने सोलह वर्षों तक कुशलतापूर्वक अपने राज्य की देखभाल की।

(ङ) रानी दुर्गावती ने नारी सेना बनाई।

भाषा अध्ययन

1. **निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण कीजिए–**

वीरांगना, श्रद्धा, कालिंजर, दुर्गाष्टमी, दूरदर्शिता, संरक्षिका, अदम्य

2. **निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

अस्त्र–शस्त्र, पालन–पोषण, लाड़–प्यार, स्वाभिमान

3. **निम्नलिखित मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

आग बबूला होना, चैन की वंशी बजाना, दुःखों का पहाड़ टूट पड़ना, दुनिया उजड़ना, कूट–कूटकर भरना।
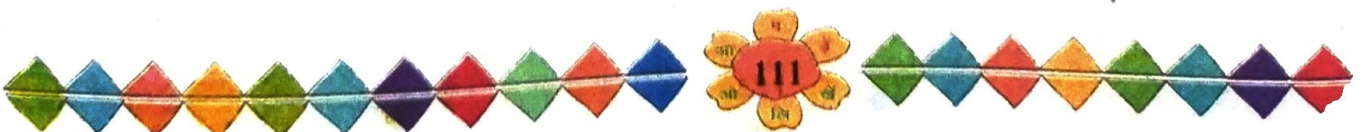
4. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और यथास्थान सर्वनाम का प्रयोग करते हुए गद्यांश को पुनः लिखिए–**

रेवती एक होशियार लड़की है। रेवती हमेशा कक्षा में प्रथम आती है। रेवती का एक भाई भी है। रेवती का भाई भी रेवती के साथ शाला में पढ़ता है। रेवती के भाई का नाम राकेश है। रेवती के भाई का मन पढ़ाई में नहीं लगता है। खेल में आनन्द आता है।

5. **'क' स्तम्भ के शब्दों के सम्मुख 'ख' स्तम्भ में कुछ शब्द दिए गए हैं। उनमें से विलोम शब्द पर गोला लगाइए–**

क	ख
हार	जीत, पराजय, अजय
सुख	खुशी, हार, दुःख
अमृत	दूध, विष, अमर
शत्रु	मित्र, दुश्मन, बैरी

6. **निम्नलिखित शब्दों में से जो सही है, उस पर सही (✓) का निशान लगाइए–**

(क) दुर्गावति, दुर्गावती, दुगार्वती, दुर्गावित

(ख) क्षेत्र, छेत्र, क्षत्रे, छेतर

(ग) इक्छा, ईठा, इच्छा, इछा

(घ) पिरेणा, प्रेरणा, प्रैरणा, प्रेणा
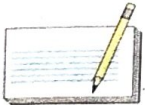
योग्यता विस्तार –

- म.प्र. की अन्य वीरांगनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर कक्षा में बताइए?
- स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के जीवन परिचय से सम्बन्धित प्रेरक प्रसंग, संस्मरण गीत, कविता आदि को बालसभा में सुनाइए?
- स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के चित्रों को एकत्र कर एलबम बनाइए।

पाठ 19

दानी पेड़

आइए सीखें –

● कहानी को हाव–भाव से पढ़ना, सुनना और अर्थग्रहण करना। ● पेड़ों की उपयोगिता और महत्व। ● उदारता, परोपकार, प्रेम और त्याग की भावना।

एक पेड़ था। वह एक छोटे लड़के को बहुत प्यार करता था। लड़का प्रतिदिन पेड़ के पास आता। वह फूलों की माला बनाता, उसके तने पर चढ़ता, उसकी शाखाओं से झूलता और उसके फल खाता। फिर वह पेड़ के साथ लुका–छुपी खेलता। जब वह थक जाता, तो पेड़ की छाँव में सो जाता। लड़का पेड़ से बहुत प्यार करता था। पेड़ बहुत खुश था।

समय बीतता गया। लड़का बड़ा हो गया। वह अब पेड़ पर खेलने नहीं आता। पेड़ अकेले दुःखी होता। जब लड़का एक दिन आया तो पेड़ बहुत खुश हुआ। लड़के ने पेड़ से कहा–"मुझे पैसों की जरूरत है। मैं बहुत–सी चीजें खरीदना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे कुछ पैसे दे सकते हो ?"
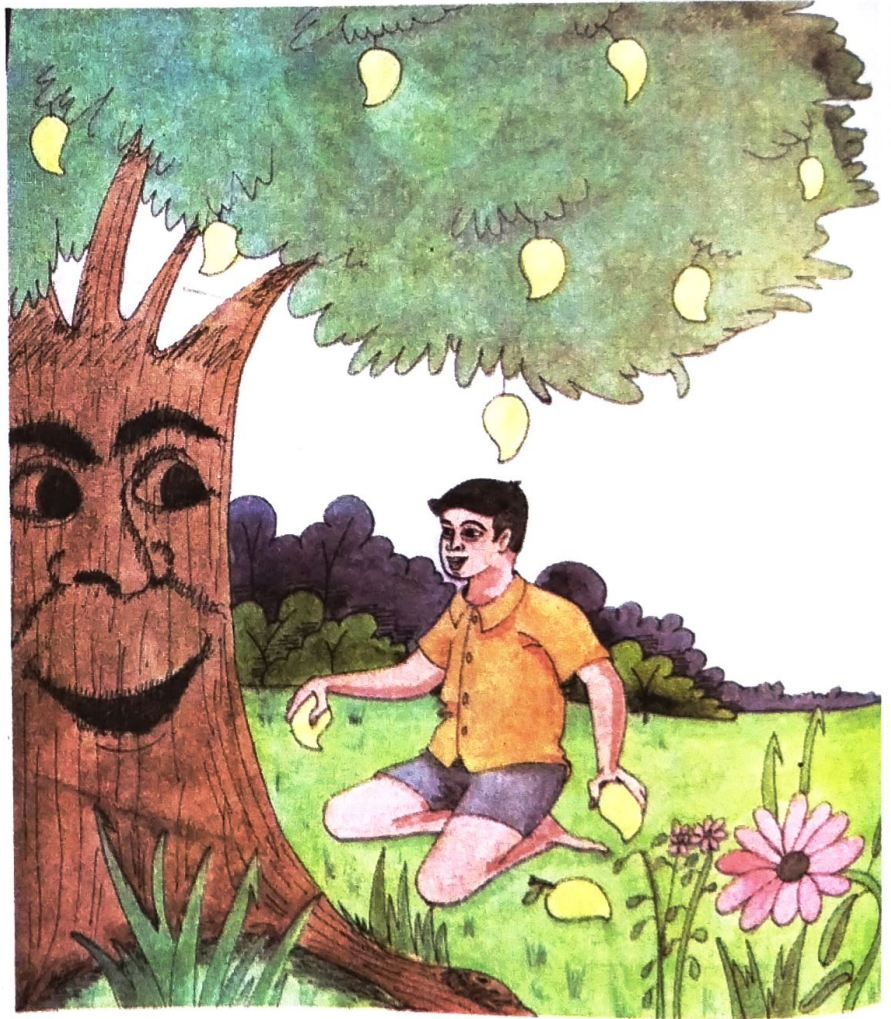
शिक्षण संकेत – ● पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना जागृत करें। ● परोपकार की भावना का विकास करें।

पेड़ ने कहा – "पैसे तो मेरे पास हैं नहीं। तुम मेरे फल तोड़ लो और उन्हें बाजार में बेच दो। इससे पैसे मिल जाएँगे।"

लड़का सब फल तोड़ कर ले गया। पेड़ अभी भी खुश था।

कई साल के बाद वह युवक फिर पेड़ के पास आया। "मेरी शादी होने वाली है मुझे एक घर चाहिए। क्या तुम मुझे एक घर दे सकते हो ?" उसने पेड़ से कहा।

पेड़ ने कहा–"घर तो मेरे पास है नहीं। लेकिन तुम मेरी शाखाएँ काट कर उनसे घर बना लो।" युवक पेड़ की सब शाखें काट कर ले गया। पेड़ का बस तना बचा रह गया। पेड़ अभी भी खुश था।

बहुत साल बीत गए। लड़का अधेड़ उम्र का आदमी बन गया था। एक दिन पेड़ के पास आया और बोला– "मुझे मछली पकड़ने के लिए एक नाव चाहिए। क्या तुम मुझे एक नाव दे सकते हो ?"

पेड़ ने कहा–"नाव तो मेरे पास है नहीं। मेरा तना बचा है। उसे काट कर नाव बना लो।" आदमी ने पेड़ का तना काट कर नाव बनाई। पेड़ अब भी खुश था।

पेड़ का अब केवल ठूँठ बचा था।

इस तरह कई साल बीत गए। एक दिन एक बूढ़ा आदमी पेड़ के ठूँठ के पास आया। पेड़ ने उसे फौरन पहचान लिया। यह वही छोटा लड़का था। पेड़ उसे देखकर बहुत खुश हुआ। उससे खुशी के मारे बोलते नहीं बना। पेड़ ने कहा– "बेटा, मैं तुम्हें कुछ देना चाहता था। परन्तु अब मेरे पास बचा ही क्या है ? मेरे फल नहीं बचे जिन्हें तुम खा सको। मेरी शाखाएँ नहीं रहीं जिनसे कि तुम लटक सको। मेरा तना

भी नहीं बचा जिस पर तुम चढ़ सको। बताओ, मैं तुम्हें क्या दूँ ?"

बूढ़े ने कहा –"तुम देख रहे हो मेरी हालत। मेरे सब दाँत गिर चुके हैं। मैं अब फल नहीं चबा सकता। अब मेरी उम्र शाखों पर झूलने की नहीं रही। तने पर चढ़ने का दम अब मुझ में नहीं रहा। मैं बहुत थक चुका हूँ। मुझे बस आराम से बैठने और सुस्ताने के लिए एक जगह चाहिए।"

"तो फिर आओ और मेरे ठूँठ पर शान्ति से बैठो।" पेड़ ने कहा।

बूढ़ा ठूँठ पर बैठकर सुस्ताने लगा। पेड़ अब भी बहुत खुश था।

शब्दार्थ–

लुका–छुपी–बच्चों का छुपने और खोजने का खेल। **अधेड़**–युवावस्था और वृद्धावस्था के बीच की आयु का व्यक्ति। **ठूँठ**–काटे गए पेड़ का बचा हुआ निकला हिस्सा या तना। **रोज**–प्रतिदिन, नित्य। **शाखा**–डाली, टहनी। **छाँव**–छाया। **युवक**–युवा व्यक्ति, जवान आदमी। **उम्र**–आयु, अवस्था। **फौरन**–तत्काल, तुरन्त। **दम**–ताकत, बल, साँस। **सुस्ताना**–थकान दूर कराना।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) पेड़ क्यों दुःखी था ?

(ख) पेड़ ने बूढ़े आदमी से क्या कहा ?

(ग) पेड़ किस कारण खुश था ?

(घ) तुम्हारे घर के आस–पास कौन–कौन से पेड़ हैं ?

शिक्षण संकेत – ● बच्चों को पेड़ों की उपयोगिता के बारे में बिस्तार से बताएँ। ● पेड़ काटने से क्या नुकसान है, इस पर चर्चा करें। ● बच्चों से पौधे लगवाएँ ● बच्चों से कहें कि अन्य लोगों को भी वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहित करें व सहयोग दें। ● बच्चों को बताएँ कि यह कहानी ' द गिविंग ट्री–शेल सिल्वरस्टाइन' का अनुवाद है।

2. सही या गलत लिखिए –

(क) पेड़ लड़के को बहुत प्यार करता था।

(ख) पेड़ अकेले में खुश होता।

(ग) पेड़ ने लड़के को कुछ भी देने से मना कर दिया ?

3. दिए गए शब्दों में से सही शब्द छाँटकर खाली स्थान भरिए–

(तोड़कर, ठूँठ, लुका–छुपी, सुस्ताने)

(क) लड़का पेड़ के साथ ————————खेलता।

(ख) लड़का सब फल ———————— ले गया।

(ग) पेड़ अब केवल ———————— बचा था।

(घ) बूढ़ा ठूँठ पर बैठकर ———————— लगा।

4. नीचे लिखे प्रश्नों के चार सम्भावित उत्तर दिए गए हैं। सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाओ–

(क) पेड़ ने घर बनाने के लिए युवक को क्या दिया ?

(क) फूल (ख) फल

(ग) शाखें (घ) तना

(ख) लड़के ने तना काटकर बना ली –

(क) खटिया (ख) हॉकी

(ग) कुर्सी (घ) नाव

(ग) 'दानी पेड़ कहानी से हमें शिक्षा मिलती है

(क) परोपकार (ख) ईमानदारी

(ग) भाई–चारा (घ) आदरभाव

(घ) लड़का रोज पेड़ के पास क्यों आता था–

(क) पत्तियाँ और फल तोड़ने

(ख) शाखाओं पर झूलने और लुका–छुपी खेलने।

(ग) पेड़ को चिढ़ाने और परेशान करने।

(घ) पेड़ को काटने।

(ङ) बूढ़ा सुस्ताने के लिए बैठा–

(क) पेड़ के नीचे (ख) पेड़ की शाखा पर

(ग) पेड़ के पत्तों पर (घ) पेड़ के ठूँठ पर

भाषा अध्ययन

1. नीचे लिखे वाक्यों के शब्दों को सही क्रम में रखिए –

(क) रोज पास पेड़ के लड़का आता।

____

(ख) जवान गया हो अब लड़का।

____

(ग) भी अभी था खुश पेड़।

____

(घ) पर सुस्ताने लगा ठूँठ बैठ कर बूढ़ा।

____

2. पढ़िए और समझिए –

नीचे लिखे शब्दों में 'ज' वर्ण के नीचे बिन्दु ज़ लगा है, इस बिन्दु को नुक्ता कहते

रोज़, चीज़ें, बाज़ार, कागज़, आवाज़

3. निम्नलिखित वाक्यों के आगे सही विराम चिह्न लगाओ –

- कितने सुन्दर फूलों की माला हैं
- अरविंद को पेड़ों से बहुत प्यार है
- क्या तुम मुझे कुछ फूल दे सकते हो
- इस बाग में बेला चमेली गुलाब और गेंदे के फूल हैं
- देखो यहाँ कितने सुन्दर सुन्दर पेड़ हैं
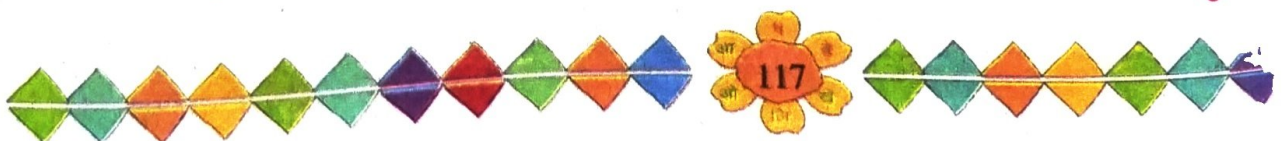
4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए –

जैसे–

दिन	रात
शान्ति	
दुःखी	
छोटे	
आना	
खरीदना	
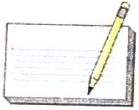
योग्यता विस्तार :–

- पेड़ के महत्व पर अपने विचार पाँच पंक्तियों में लिखें।
- सोचिए ! यदि पेड़ न होते तो क्या होता ?
- ऐसे पेड़ों के नाम लिखिए, जो दवाई के काम आते हैं ?
- पेड़ से सम्बन्धित कोई अन्य कविता, याद कर बाल सभा में सुनाइए।
- फलदार पेड़ों के नाम की सूची बनाइए ?
- पेड़ का चित्र बनाकर उसमें रंग भरिए।
- लकड़ी से क्या–क्या वस्तुएँ बनाई जाती हैं, उनके नाम लिखिए।
- अपनी पाठ्य–पुस्तक की कहानियों को स्थानीय बोली में सुनाइए।
- अनुवाद किसे कहते हैं पता कीजिए। स्थानीय भाषा की कहानियों का हिन्दी मानक भाषा में अनुवाद कीजिए।

पाठ 19

अमर शहीद भगतसिंह

आइए सीखें–

● भगतसिंह की बलिदान गाथा ● कविता का ओज के साथ वाचन ● देश प्रेम, त्याग, बलिदान, निडरता आदि गुणों का विकास ● रकार युक्त विभिन्न रुपों वाले शब्द

भारत माता का सपूत, आजादी का दीवाना था,
हँसकर झूल गया फाँसी पर, भगतसिंह मस्ताना था।

नौजवान था वह पंजाबी, गजब शेर के दिलवाला,
देशप्रेम का रस पीकर वह बना हुआ था मतवाला।
दिन में चैन, नींद रात में, उसको कभी नहीं आती,
भारत माता की परवशता अति बेचैन बना जाती।
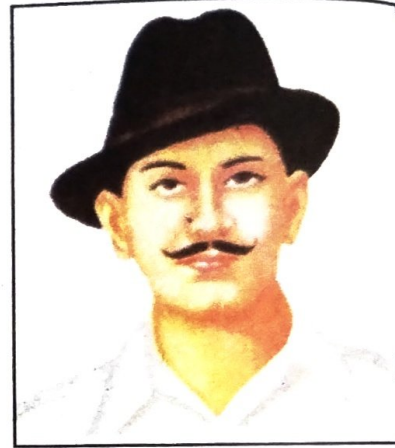
आजादी की लौ पर मरने वाला वह परवाना था,
हँस कर झूल गया फाँसी पर, भगतसिंह मस्ताना था।

'हम स्वदेश आजाद करेंगे' – कसम वीर ने खाई थी,
भारत के कोने–कोने में उसने जोत जगाई थी।
बाँध कफन सिर पे, मशाल ले क्रान्तिदूत था मुस्काया,
गाँव–गाँव में आजादी का परचम उसने लहराया।
इंकलाब का नारा देने वाला वह मरदाना था,

शिक्षण संकेत– ● बच्चों में देशप्रेम, त्याग, बलिदान, निडरता आदि के विकास हेतु प्रयास करें। ● बच्चों से कविता का गायन सुर, ताल व लय में अभिनय के साथ करवाएँ। ● कविता का भाव स्पष्ट करें तथा अन्य स्वतन्त्रता सेनानियों के बारे में बच्चों को बताएँ। ● बच्चों से शब्दों के अर्थ वाक्य प्रयोग द्वारा निकलवाएँ।
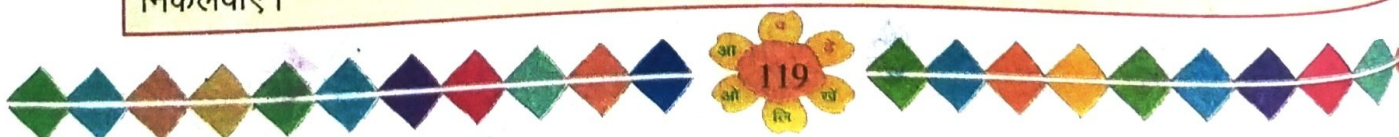
हँस कर झूल गया फाँसी पर भगत सिंह मस्ताना था।

कर दी नींद हराम भगत ने, अंग्रेजों की मार से
काँप गया सिंहासन लन्दन का उसकी हुंकार से।
लिए हाथ में दीप क्रान्ति का सबको राह बताने को,
वीर भगत बढ़ चला वतन को बन्धनमुक्त कराने को।
मुर्दों में भी जान फूँक दे, ऐसा एक तराना था,
हँसकर झूल गया फाँसी पर, भगतसिंह मस्ताना था।

केन्द्र–सभा में बम निर्भय हो, भगत सिंह ने था फेंका,
अन्दर जाते पुरुषसिंह को नहीं किसी ने था टोका।
सजा मौत की मिली अदालत में, फिर भी था मुस्काया,
फाँसी पर चढ़ गया, वीर वह तनिक नहीं था घबराया।
देकर अपनी जान, क्रान्ति का दीपक उसे जलाना था,
हँसकर झूल गया फाँसी पर, भगतसिंह मस्ताना था।

भारत ने सचमुच, सपूत अपना महान, एक खोया था,
सच है उस दिन भारतभूमि का, बच्चा–बच्चा रोया था।
कुर्बानी उस वीर भगत की, आओ सब मिल याद करें,
आजादी की रक्षा के हित, हम सब कुछ बलिदान करें।
बलिदानी था, उसे देश का नव इतिहास बनाना था,
हँसकर झूल गया फाँसी पर, भगत सिंह मस्ताना था।

शब्दार्थ

सपूत	–	अच्छा बेटा, सुपुत्र	दीवाना	–	आसक्त, मतवाला
गजब	–	विचित्र, विलक्षण बात	मतवाला	–	उन्मत, पागल, मदमस्त
परवशता	–	पराधीन	परवाना	–	आज्ञापत्र, पतंगा
फाँसी	–	गले में डाला जाने वाला फंदा	जोत	–	ज्योति
कफन	–	शव को ओढ़ाया जाने वाला कपड़ा			
कसम	–	शपथ, सौगंध	परचम	–	झंडा
इंकलाब	–	आज़ादी की लड़ाई	नींद हराम	–	नींद न आना

बोध प्रश्न

1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) भगतसिंह कहाँ का रहने वाला था?

(ख) भगतसिंह ने क्या कसम खाई थी?

(ग) भगत सिंह को फाँसी पर क्यों चढ़ाया गया?

(घ) भगतसिंह का नारा क्या था?

(ङ) भगतसिंह किसको बन्धनमुक्त कराना चाहते थे?

2 निम्नलिखित प्रश्नों के चार–चार सम्भावित उत्तर दिए गए हैं। सही उत्तर के सामने सही (✓) का चिह्न लगाओ।

(क) 'इंकलाब' नारा दिया था

(क) महात्मा गांधी ने (ख) लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने

(ग) सरदार भगत सिंह ने (घ) सरदार पटेल ने

(ख) सरदार भगतसिंह रहने वाले थे

(क) गुजरात के (ख) पंजाब के

(ग) राजस्थान के (घ) दिल्ली के

(ग) भगतसिंह ने बम फेंका था –

(क) केन्द्र सभा में (ख) चौराहे पर

(ग) बाजार में (घ) मैदान में

(घ) हँसकर फाँसी पर झूला था

(क) चन्द्रशेखर आजाद (ख) सुभाषचन्द्र बोस

(ग) लाला लाजपत राय (घ) सरदार भगतसिंह

3. कविता की इन पंक्तियों को पूरा कीजिए–

(क) ______________ भगत सिंह मस्ताना था।

(ख) देशप्रेम का रस पीकर ______________।

(ग) ______________ भगतसिंह ने था फेंका।

(घ) फाँसी पर चढ़ गया ______________।

4 **नीचे लिखे भाव या विचार कविता की जिन पंक्तियों में आए हैं, वे पंक्तियाँ लिखिए—**

(क) भगत सिंह ने अंग्रेजों को परेशान कर दिया। उनकी वीरता से अंग्रेज घबरा उठे।

(ख) जिस दिन भगतसिंह को फाँसी दी गई, उस दिन भारत—माता ने अपना एक महान, बहादुर बेटा खोया था। देश का हर व्यक्ति उस दिन बहुत दुःखी हुआ था।

भाषा अध्ययन

1. **निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध उच्चारण कीजिए और लिखिए**

हँसना, फाँसी, गाँव, घाँस, साँस, फाँस, काँप, फूँक, पंजाबी, इंकलाब, क्रान्ति, अहंकार, अंग्रेज, लन्दन, हुंकार, केंद्र, सिंहासन

2. **निम्नलिखित शब्दों की सही वर्तनी लिखिए—**

- अरथ, मारग, परवत
- परकाश, राजेन्दर, गिराम
- डिरामा, डिरेस, टिरक

3. **निम्नलिखित शब्दों की समान तुक वाले शब्द कविता से खोजकर लिखिए—**

आती ————————

दीवाना ————————

जगाई ————————

लहराया ————————

खोया ————————

हुंकार ————————
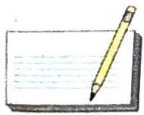
योग्यता विस्तार —

- किसी तुकान्त कविता की चार पंक्तियाँ लिख कर तुकान्त शब्दों को रेखांकित कीजिए।
- कुछ अन्य अमर शहीदों के नाम अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखिए।
- देश की आजादी की लड़ाई लड़ने वाले शहीदों के चित्र इकट्ठे कर एलबम में सजाइए।
- देश प्रेम की अन्य कविता याद कर लय और ताल के साथ बालसभा में सुनाइये।

पाठ 20

हमारी जनजातीय कलाएँ

आइए सीखें–

- जनजातीय लोक कलाओं की समझ
- प्रदेश की प्रमुख जनजातियों की जानकारी
- पर्यावरण के प्रति जुड़ाव
- युग्म शब्द
- एक वचन, बहुवचन की समझ।

शहर में जनजातीय कलाप्रदर्शनी लगी थी, जिसमें मध्यप्रदेश की विभिन्न जनजातियों की कलाओं को उनके स्वाभाविक परिवेश में बताया गया था। प्रदर्शनी में इन जनजातियों के घरों और दैनिक उपयोग की वस्तुओं को ठीक उसी तरह संजोया गया था जैसे वे अपने वास्तविक जीवन के व्यवहार में लाते हैं।

मेखला और उसकी सहेलियाँ सुप्रभा और फातिमा प्रदर्शनी देखने गई थीं। उनके साथ जाह्नवी दीदी भी थीं। उन्होंने मध्यप्रदेश की जनजातियों के रहन–सहन का गहराई से अध्ययन किया था।

प्रदर्शनी के प्रवेश द्वार को बड़े ही कलात्मक ढंग से सजाया गया था। सजावट में लोक संस्कृति की छाप स्पष्ट दिख रही थी। द्वार पर गोबर और मिट्टी से कई प्रकार के चित्र उकेरे गए थे। इन चित्रों को कई रंगों से अच्छी तरह रंगा गया था। चित्र इतने आकर्षक थे कि इन्हें देखकर लगता ही नहीं था कि इतनी साधारण वस्तुओं से इतने सुन्दर चित्र बनाए जा सकते हैं।

वे सभी प्रदर्शनी के अन्दर गईं। प्रदर्शनी को जगह–जगह बाँस, पत्तों, सन, सुतली और लकड़ी से बनी कलात्मक वस्तुओं से सजाया गया था। प्रदर्शनी में एक जगह लाख की चूड़ियॉ, पाटले, चूड़े, खिलौने, श्रृंगार–पेटिका इत्यादि कई वस्तुएँ प्रदर्शन और बेचने के लिए रखी थीं। जाह्नवी दीदी ने बताया कि लाख, पलाश और इसी प्रकार के कुछ पेड़ों की गोंद या रस से बनाई जाती है। लाख की बनी बहुत–सी वस्तुओं का उपयोग जनजातियों में खूब

शिक्षण संकेत– • शिक्षक जनजातीय कलाओं के बारे में बताएँ। • सम्भव हो तो जनजातीय शिल्प की वस्तुओं को दिखाएँ। • बच्चों से लोककला शैली के चित्र और वस्तुएँ बनवाएँ। • स्थानीय बोली के शब्दों के मानक रूप बनाएँ पाठ में आए विशेष शब्दों के स्थानीय रूप बताएँ। • लोकजीवन में पर्यावरण के महत्व के बारे में बताएँ।

होता है। प्रदर्शनी में काष्ठ शिल्प और धातु शिल्प का भी प्रदर्शन किया गया था। काष्ठ और धातु के बने खिलौने, कलात्मक और दैनिक उपयोग की वस्तुएँ देखने योग्य थीं। वे सभी प्रदर्शनी देखने लगीं। मेखला ने कहा–"दीदी, इनमें से कुछ चीजें तो हमारी समझ से परे हैं, आप कुछ बताइए न।"
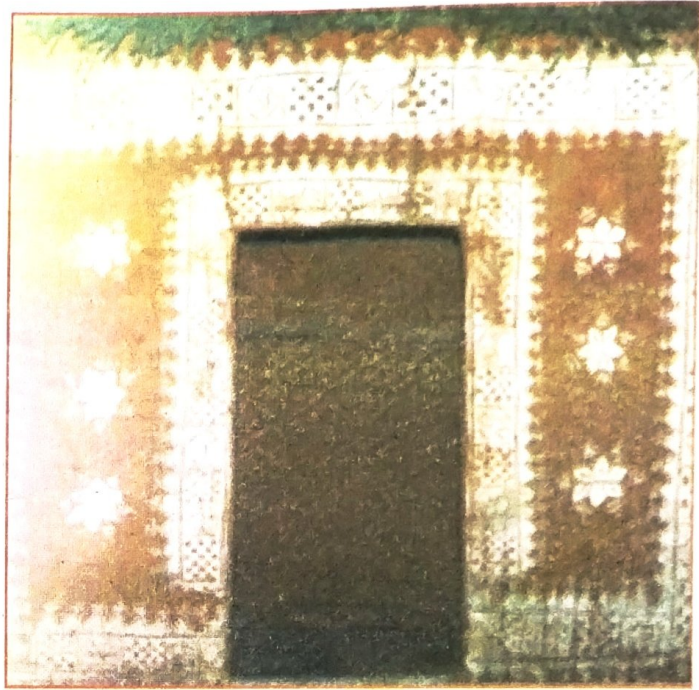
जाह्नवी दीदी ने कहा– "अच्छा, तुम सभी प्रदर्शनी देखती चलो और ध्यान से मेरी बात भी सुनती रहो।" सुप्रभा बोली–"हाँ, दीदी। हम सब ध्यान से सुनेंगी। जाह्नवी कहने लगीं– "मध्यप्रदेश में अनुसूचित जनजातियों की संख्या अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक है। यहाँ गोंड भील, कोरकू, कोल, बैगा, मारिया और सहरिया प्रमुख जनजातियाँ हैं। इसके अतिरिक्त भी कई जनजातियाँ प्रदेश में निवास करती हैं।"

"ये जनजातियाँ प्रकृति के सबसे निकट रहती हैं, इनका जीवन प्रकृति पर निर्भर है। ये जनजातियाँ स्वभाव से कला प्रेमी हैं। इनकी कलाओं पर प्रकृति की सुन्दरता का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा है। इनकी कलाओं में पेड़–पौधे, पशु–पक्षी और चाँद–सूरज जीवन्त हो उठे हैं।"

फातिमा ने कहा–"शायद इसीलिए इन कलाकृतियों में प्राकृतिक प्रतीकों और वस्तुओं का प्रयोग अधिक किया गया है।" जाह्नवी ने उत्तर दिया –"हाँ, फातिमा। यह देखो, इस खण्ड में गोंड जनजातीय कला को दिखाया गया है। इनकी इस कला को 'चीन्हा' कहते हैं। गोंड़ स्त्रियाँ अपने घरों की दीवारों के उठे हुए किनारों को गेरू, कजली या नील के रंगों से रंगती हैं। दीवारों पर गोल या तिकोन रेखाएँ उभार कर उन्हें भी रंगों से सजाया जाता है। ताकों, खूँटियों और अनाज रखने की कोठियों को भी चित्रांकित किया जाता है। आजकल गोंडी चित्र शैली के चित्रों की देश–विदेश में खूब माँग है। गोंड रस्सी, मचिया, सुतली, कृषि के औजार, खुमरी, फंदे और धनुष–वाण कलात्मक ढंग से बनाते हैं। यहाँ ये सब चीजें दिखाई गई हैं।

इन्हें भी जानें–

प्रदर्शनी – जहाँ कोई वस्तु यावस्तुएँ आम जनता को दिखाने के लिए रखी जाती हैं। शिल्प–कला। उकेरना–उभारना। पलाश–ढाक या छेवले का वृक्ष।

अब बताइए–

- प्रदर्शनी के प्रवेश द्वार को किस प्रकार सजाया गया था?
- आपके यहाँ द्वार को कैसे सजाते हैं?
- आपके यहाँ 'चीन्हा' की तरह और कौन–कौन सी कलाएँ हैं? उनके नाम बताइए।

जाह्नवी, मेखला और उसकी सहेलियों के साथ आगे बढ़ी। जाह्नवी ने बताया– यहाँ भील जनजाति की कलाओं को प्रदर्शित किया गया है। दीवारों पर बने ये भित्तिचित्र देखो। ये भील परम्परा की विशेष शैली है। इसे 'पिथौरा' कहते हैं। पहले ये चित्र पिथौरापर्व पर बनाए जाते थे। ये लोग आँगन में अल्पनाएँ माँडते हैं।

भील कला को देखती हुई वे सभी एक झोंपड़ी और उसके आँगन के सामने खड़ी हो गई। जाह्नवी दीदी ने बताया–"वह सहरिया जनजाति का परम्परागत आवास है। ये लोग दीवारों को चित्रित करने के साथ–साथ अपनी गृहस्थी के सामान को भी आकर्षक ढंग से बनाते हैं। सहरिया जिस कोठी या बखार में अनाज को रखते हैं उसे विशेष रूप से सजाते हैं। वह देखो, चित्रों से सजी यह कोठी 'पेई' कहलाती है। 'पेई' वास्तव में सहरिया चित्रकला का अद्भुत नमूना है।
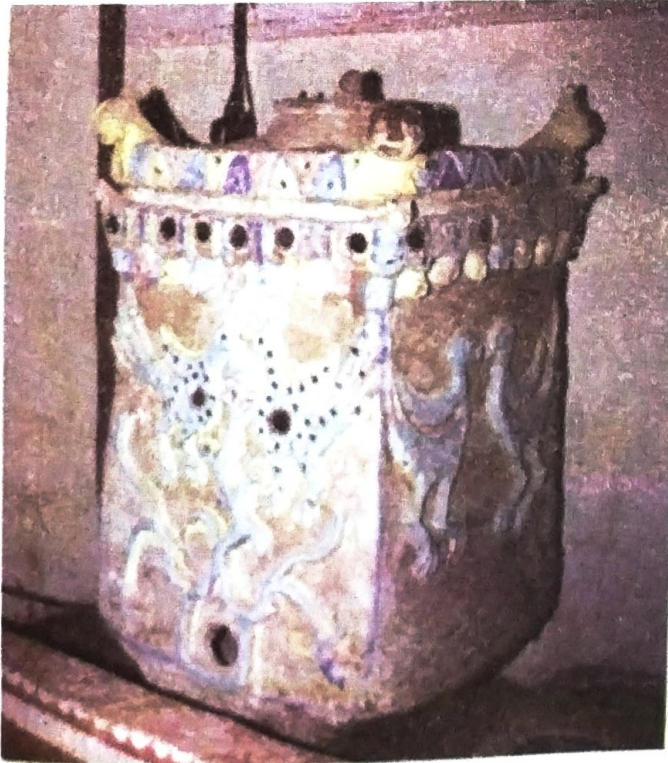
सहरिया खण्ड से लगा हुआ हिस्सा कोरकू जनजाति का था। कोरकू आवास में दीवारों पर और दरवाजे के आजू–बाजू बड़े ही सुन्दर चित्र बनाए गए थे। जाह्नवी दीदी बता रही थीं।–"ये कोरकू जनजाति की चित्रकला है, इसे 'गुदनी' कहते हैं। गुदनी के लिए सफेद खड़िया या लाल मिट्टी का

प्रयोग किया जाता है। 'गुदनी' बनाना बड़ा शुभ माना जाता है। इसे बनाते समय सूपे में गोबर की देवमूर्ति रखकर पारम्परिक गीत गाए जाते हैं।''

तभी मेखला ने लकड़ी की एक सुन्दर कलाकृति को देखकर पूछा–''दीदी, यह क्या है? जाह्नवी ने बताया–यह 'गाता' है। कोरकू जनजाति में मृतकों की याद में 'गाता' स्थापित करने की प्रथा है। 'गाता' लकड़ी के ऊपर सुन्दर आकृतियाँ उभार कर बनाया जाता है।''

इन्हें भी जानें–

अल्पना–रंगीन कलात्मक रेखाचित्र, चौक मॉड़ना, बनाना, पूरना। परम्परा–रिवाज, प्रथा। कलाकृति–कलात्मक ढंग से बनी वस्तु। आवास–घर, रहने का स्थान। स्थापित–थापना।

अब बताइए–

- 'भील' अपने आँगन को किस प्रकार सजाते हैं?
- 'गुदनी' बनाते समय क्या किया जाता है?
- घर के समान, वर्तन आभूषणों के स्थानीय नाम पता कीजिए।

वे सभी प्रदर्शनी में सजी विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों की प्रशंसा करती हुई 'भारिया' जनजाति कला खण्ड में पहुँचीं। 'भारिया' जनजाति के घर पर दरवाजे के आसपास परम्परागत शैली में चित्र बनाए गए थे। वहाँ बाँस और 'छिन्द' के पत्तों से बनाई गई रोजमर्रा के काम की चीजें दिखाई गईं थीं। जाह्नवी ने बताया कि भारिया जनजाति के लोग पेड़ की छाल से रस्सी बनाने में बड़े निपुण होते हैं।

आगे के खण्ड में एक बैगा जनजाति के परिवार के रहन–सहन को प्रदर्शित किया गया था। एक बैगा युवती अपनी परम्परागत वेशभूषा में बैठी थी। उसके हाथ पैर और चेहरे पर बड़े ही सुन्दर चित्र बने थे। जाह्नवी ने बताया–''बैगा जनजाति की स्त्रियाँ अपने शरीर के विभिन्न अंगों पर आकर्षक चित्र गुदवातीं हैं। इसे 'गोदना' कहते हैं। 'गोदना' गुदवाना अन्य जनजातियों में भी बहुत लोकप्रिय है।''
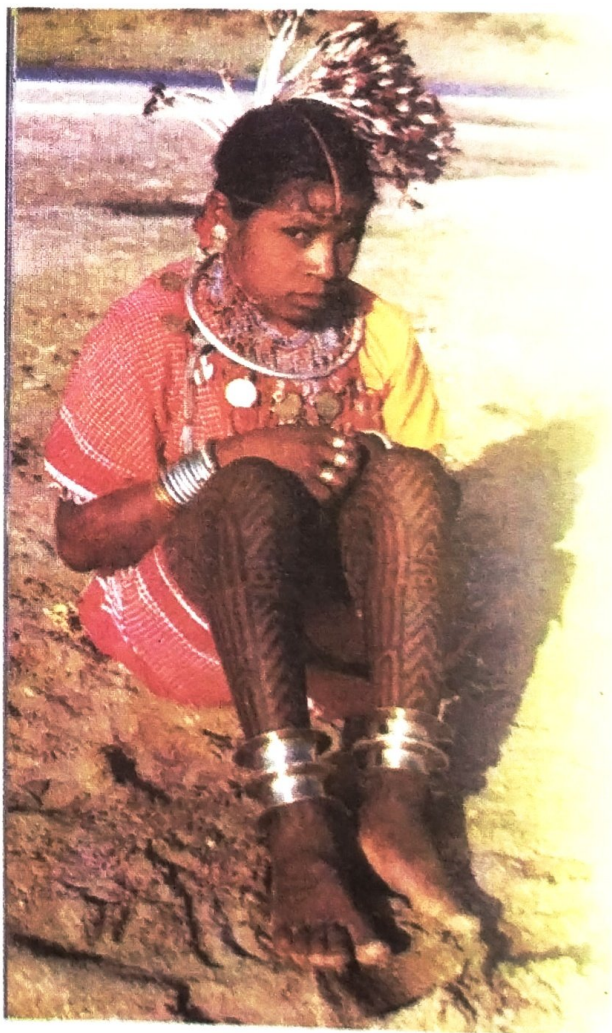
कोल जनजाति का आवास भी सुन्दर चित्रों, बाँस, घास, लकड़ी तथा मिट्टी की बनी कलात्मक वस्तुओं से सजा था।

मेखला ओर उसकी सहेलियाँ प्रदर्शनी देखकर बहुत खुश थीं। उन्हें अपने प्रदेश की जनजातीय कलाओं और उनके रहन–सहन के बारे में बहुत–सी जानकारी मिली थी। जाह्नवी दीदी कह रही थीं–"जनजातियों की जीवनशैली और लोककलाएँ प्रकृति के बहुत करीब होती है। ये हमारे प्रदेश की अमूल्य धरोहर हैं। इनके गीत–संगीत और नृत्य भी जनजातीय जीवन के विशिष्ट प्रतीक है। आजकल ये सभी जनजातियाँ अपनी परम्पराओं को जीवित रखते हुए विकास के मार्ग पर भी आगे बढ़ रही हैं। इन जनजातियों के सैकड़ों, हजारों सुशिक्षित व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों में पूरी योग्यता और निपुणता के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर प्रदेश और देश की प्रगति के लिए कार्य कर रहे हैं।"

मेखला, सुप्रभा और फातिमा जाह्नवी दीदी के साथ घर लौट रहीं थीं पर उनका मन अब भी उन्हीं मनमोहक चित्रों और कलाकृतियों में खोया था।

इन्हें भी जानें–

शैली–तरीका, प्रकार। छिन्द–एक वृक्ष। रोजमर्रा–दैनिक। निपुण–कुशल, दक्ष, पारंगत। वेशभूषा–पहनावा। कंधे से कंधा मिलाना–साथ–साथ मिलकर काम करना।

बोध प्रश्न

1 **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

(क) जनजातीय कला प्रदर्शनी में क्या बताया गया था?

(ख) प्रदर्शनी को किन–किन चीजों से सजाया गया था?

(ग) मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ कौन–कौन सी हैं?

(घ) गोंडी चित्रकला शैली को क्या कहते हैं?

(ङ) 'गुदनी' चित्रकला में कौन–कौन सी मिट्टी का प्रयोग किया जाता हैं?

शिक्षण संकेत– • शिक्षक बताएँ कि गोदना गुदवाने वाली सुई असंक्रमित होनी चाहिए। अन्यथा उससे शरीर में संक्रमण हो सकता है।

2 सही उत्तर छाँटकर लिखिए–

(1) सहरिया जनजाति की अनाज भण्डारण की विचित्र कोठी कहलाती है?

(क) सेई (ख) पेई

(ग) गुदनी (घ) गाता

(2) 'गाता' बनाने वाली जनजाति है?

(क) भील (ख) कोल

(ग) भारिया (घ) कोरकू

(3) भील भित्ति चित्रकला कहलाती है?

(क) पिथौरा (ख) गोदना

(ग) चीन्हा (घ) पेई

(4) लाख बनाई जाती है?

(क) छाल से (ख) गोंद से

(ग) पत्तियों से (घ) जड़ से

3. निम्नलिखित वाक्यों के सामने सही या गलत का चिह्न लगाइए–

(क) जनजातियाँ स्वभाव से ही कलाप्रेमी होती हैं।

(ख) जनजातियों की दैनिक वस्तुएँ कलात्मक नहीं होती हैं।

(ग) जनजातीय लोक कलाओं पर प्रकृति का प्रभाव नहीं है।

(घ) जनजातीय जीवन और परम्पराएँ प्रदेश की अमूल्य धरोहर हैं।

(ङ) गीत,संगीत और नृत्य जनजातीय परम्परा के महत्वपूर्ण अंग हैं।

भाषा अध्ययन

(1) इन शब्दों के बहुवचन लिखिए–

जैसे – जाति– जातियाँ पत्ती– पत्तियाँ

मूर्ति ———— स्त्री ————

प्रति ———— कोठी ————

गति ———— रोटी ————

(2) पाठ में आए युग्म शब्दों को छाँटिए और उदाहरण अनुसार लिखिए–

उदाहरण – पेड़–पौधे – पेड़ और पौधे

__________ __________

__________ __________

__________ __________

__________ __________

(3) इन शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और लिखिए –

1. प्रदर्शनी __________ __________ __________ __________
2. चित्रों __________ __________ __________ __________
3. कृति __________ __________ __________ __________
4. सुप्रभा __________ __________ __________ __________
5. पर्व __________ __________ __________ __________
6. श्रृंगार __________ __________ __________ __________

(4) उदाहरण अनुसार शब्दों को मिलाकर लिखिए–

जैसे– चित्र + अंकित = चित्रांकित

पृष्ठ + अंकित = __________

निम्न + अंकित = __________

रेखा + अंकित = __________

योग्यता विस्तार –

- प्रदेश की जनजातियों के रहन–सहन के बारे में शाला पुस्तकालय से और अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।
- घरों में प्रयोग होने वाली लकड़ी, धातु या मिट्टी से बनी वस्तुओं की सूची बनाइए।
- जनजातीय कलाओं से सम्बन्धित वस्तुएँ संग्रहीत कीजिए।
- पाठ में दिए गए चित्रों को बनाइए और उनमें रंग भरकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

पाठ 21

जब मैं पढ़ता था

आइये सीखें–

- गांधीजी के जीवन से जुड़े कुछ प्रेरक प्रसंगों की जानकारी देना। • सुलेख का महत्व एवं सुन्दर लेख का अभ्यास। • अनुस्वार, अनुनासिक एवं विराम चिह्नों की जानकारी। • वाक्यांश के लिए एक शब्द। लिंग परिचय।

मेरे पिता करमचन्द गांधी राजकोट के दीवान थे। वे सत्यप्रिय, साहसी और उदार व्यक्ति थे। वे सदा न्याय करते थे।

मेरी माता जी का स्वभाव बहुत अच्छा था। वे धार्मिक विचारों की महिला थीं। पूजा–पाठ किए बिना भोजन नहीं करती थीं।

2 (दो) अक्टूबर सन् 1869 (अठारह सौ उन्हत्तर) को पोरबन्दर में मेरा जन्म हुआ। पोरबन्दर से पिताजी जब राजकोट गए तब मेरी उम्र सात वर्ष की रही होगी। पाठशाला से फिर अपर स्कूल में और वहाँ से हाईस्कूल में गया। मुझे यह याद नहीं है कि मैंने कभी भी किसी शिक्षक या किसी लड़के से झूठ बोला हो। मैं बहुत संकोची था। एक बार पिताजी 'श्रवण–पितृभक्ति' नामक पुस्तक खरीद कर लाए। मैंने उसे बड़े शौक से पढ़ा। उन दिनों बाइस्कोप में तस्वीर दिखाने वाले लोग आया करते थे। तभी मैंने अन्धे माता–पिता को बहँगी पर बैठाकर ले जाने वाले श्रवण कुमार का चित्र देखा। इन बातों का मेरे मन पर बहुत प्रभाव पड़ा। मन ही मन मैंने तय किया कि मैं भी श्रवण की तरह बनूँगा।
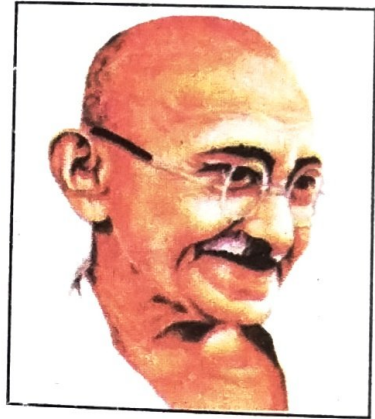
मैंने 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' नाटक भी देखा था। बार–बार उसे देखने की इच्छा होती। हरिश्चन्द्र के सपने आते। बार–बार मेरे मन में यह बात उठती थी कि सभी हरिश्चन्द्र की तरह सत्यवादी क्यों न बनें? यही बात मन में बैठ गई कि चाहे हरिश्चन्द्र की भाँति कष्ट उठाना पड़े, पर सत्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि खुली हवा में घूमना स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। यह बात मुझे अच्छी लगी और तभी से मैंने सैर करने की आदत डाल ली। इससे मेरा शरीर मजबूत हो गया।

शिक्षण संकेत – • महत्मा गांधी के बारे में बताएँ। • श्रवण कुमार की पितृ भक्ति के बारे में जानकारी दें

एक भूल की सजा मैं आज तक पा रहा हूँ। पढ़ाई में अक्षर अच्छे होने की जरूरत नहीं, यह गलत विचार मेरे मन में इंग्लैण्ड जाने तक रहा। आगे चलकर दूसरों के मोती जैसे अक्षर देखकर मैं बहुत पछताया। मैंने देखा कि अक्षर बुरे होना अपूर्ण शिक्षा की निशानी है। बाद में मैंने अपने अक्षर सुधारने का प्रयत्न किया। परन्तु पके घड़े पर कहीं मिट्टी चढ़ सकती है?

सुलेख शिक्षा का एक जरूरी अंग है। उसके लिए चित्रकला सीखनी चाहिए। बालक जब चित्रकला सीखकर चित्र बनाना जान जाता है, तब यदि अक्षर लिखना सीखे तो उसके अक्षर मोती जैसे हो जाते हैं।

अपने आचरण की तरफ मैं बहुत ध्यान देता था। इसमें यदि कोई भूल हो जाती तो मेरी आँखों में आँसू भर आते। मेरे हाथों कोई ऐसा काम हो, जिसके लिए शिक्षक मुझे दण्ड दें, तो यह मेरे लिए असह्य था। मुझे याद है कि एक बार मुझे मार खानी पड़ी थी। मुझे मार का दुःख न था, पर मैं दण्ड का पात्र समझा गया, इस बात का बड़ा दुःख था। यह बात पहली या दूसरी कक्षा की है।

दूसरी बात सातवीं कक्षा की है। उस समय हेडमास्टर कड़ा अनुशासन रखते थे, फिर भी वे विद्यार्थियों के लिए प्रिय थे। वे स्वयं ठीक काम करते और दूसरों से भी ठीक काम करवाते थे। पढ़ाते अच्छा थे। उन्होंने ऊपर की कक्षा के लिए व्यायाम और क्रिकेट अनिवार्य कर दिए थे। मेरा मन इन चीजों में न लगता था। अनिवार्य होने से पहले मैं कभी व्यायाम करने, क्रिकेट या फुटबाल खेलने गया ही नहीं था। वहाँ न जाने में, मेरा संकोची स्वभाव भी एक कारण था। अब मैं यह देखता हूँ कि व्यायाम के प्रति अरुचि मेरी गलती थी। उस समय मेरे मन में गलत विचार घर किए हुए था कि व्यायाम का शिक्षण के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। बाद में समझा कि पढ़ने के साथ–साथ व्यायाम करना भी बहुत जरूरी है।

व्यायाम में अरुचि का दूसरा कारण था– पिताजी की सेवा करने की तीव्र इच्छा। स्कूल बन्द होते ही घर जाकर उनकी सेवा में लग जाता। व्यायाम अनिवार्य होने से इस सेवा में विघ्न पड़ने लगा। मैंने पिताजी की सेवा के लिए व्यायाम से छुटकारा पाने का प्रार्थना पत्र दिया पर हेडमास्टर साहब कब छोड़ने वाले थे?

एक शनिवार को स्कूल सबेरे का था। शाम को चार बजे व्यायाम के लिए जाना था। मेरे पास घड़ी न थी। आकाश में बादल थे, इससे समय का पता न चला। बादलों से धोखा खा गया। जब पहुँचा तो सब जा चुके थे। दूसरे दिन मुझसे कारण पूछा गया। मैंने जो बात थी बता दी। उन्होंने उसे नहीं माना और मुझे एक या दो आना, ठीक याद नहीं कितना, दण्ड देना पड़ा। मैं झूठा बना। मुझे भारी दुःख हुआ। मैं झूठा नहीं हूँ यह कैसे सिद्ध करूँ? कोई उपाय नहीं था। मैं मन मारकर रह गया। बाद में समझा कि सच बोलने वाले को असावधान भी नहीं रहना चाहिए।
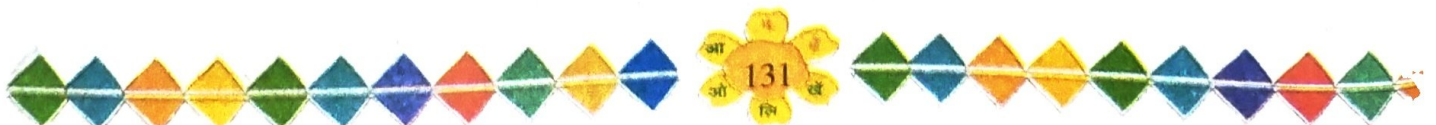
'बापू' और 'राष्ट्रपिता' के नाम से पुकारे जाने वाले महात्मा गांधी के नेतृत्व में हमारा राष्ट्र स्वतन्त्र हुआ। इनकी दृष्टि से सभी मनुष्य एक परमात्मा की सन्तान है। और बराबर है। इस प्रकार उन्होंने जाति–पाँति, ऊँच–नीच या धर्म के आधार पर किए जाने वाले भेद को व्यर्थ बताया।

–महात्मा गांधी

शब्दार्थ–

दीवान–मंत्री। बहँगी–काँवर, तराजू के समान कन्धे पर रखकर सामान ढोने का साधन। हरिश्चन्द–अयोध्या के प्राचीन राजवंश के एक राजा जो अपनी सत्य निष्ठा के लिए प्रसिद्ध हैं।

आचरण	विघ्न	दण्ड	असावधान	
असह्य	सिद्ध करना	अनिवार्य	अनुशासन	अरुचि

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) गांधीजी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(ख) गांधीजी ने सैर करना क्यों अच्छा माना?

(ग) 'सुलेख' के विषय में गांधीजी के क्या विचार थे?

(घ) व्यायाम और खेल के सम्बन्ध में गांधीजी के क्या विचार थे?

(ङ) "मैं मन मारकर रह गया" यह कथन गांधीजी ने क्यों कहा?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के चार–चार विकल्प दिये गए हैं। सही विकल्प चुनकर खाली स्थान भरिए–

(1) गांधीजी के पिता राजकोट के ——— थे।

(क) सैनिक (ख) पहरेदार (ग) दीवान (घ) वकील

(2) गांधीजी बचपन में बहुत ——— थे।

(क) बातूनी (ख) शरारती (ग) चतुर (घ) संकोची

(3) 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' नाटक से गांधीजी को ------ की प्रेरणा मिली।

(क) व्यायाम कने की (ख) सत्यवादी होने की

(ग) संगीत की (घ) परोपकार करने की

(4) गांधीजी बहुत ध्यान देते थे–

(क) अच्छे आचरण पर (ख) खेलकूद पर

(ग) पढ़ाई पर (घ) व्यायाम पर

3. निम्नलिखित शब्दों की सही जोड़ी बनाइए–

(क) सत्यवादी – करमचन्द गांधी

(ख) मातृ–पितृ भक्त – हरिश्चन्द्र

(ग) राष्ट्रपिता – श्रवण कुमार

(घ) राजकोट के दीवान – महात्मा गांधी

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध उच्चारण कीजिए–

श्रवण, पितृभक्ति, हरिश्चन्द्र, स्वास्थ्य, शिक्षा, इंग्लैण्ड, असह्य, दण्ड, भातृ, पितृ, पृथ्वी, गृह, तृण

2. निम्नलिखित अशुद्ध शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए–

अनुसाशन शुलेख

अपुर्ण शिद्ध

अनिर्वाय परिर्चचा

जो पिता का भक्त हो उसे पितृभक्त कहते हैं। इसमें रेखांकित वाक्यांश के लिए– 'पितृभक्त' एक शब्द का ही प्रयोग किया गया है। और भी देखिए–

जो देश का भक्त हो – देशभक्त

जो राष्ट्र का भक्त हो – राष्ट्रभक्त

3. **दिए गए वाक्यांश के सामने कुछ शब्द दिए है। उनमें से सही शब्द छाँटकर लिखिए–**

(क) जिसका कोई नाथ न हो – सनाथ / अनाथ

(ख) जिसके हृदय में दया न हो – निर्मम / निर्दय

(ग) जिसे सत्य प्यारा है – सत्यप्रिय / असत्यप्रिय

(घ) सत्य के लिए आग्रह – दुराग्रह / सत्याग्रह

ध्यान दीजिए –

स्तम्भ 'अ'		स्तम्भ 'ब'
बालक	–	बालिका
दादा	–	दादी
पुत्र	–	पुत्री
नाना	–	नानी

यहाँ स्तम्भ 'अ' के शब्दों से पुरुष जाति का तथा स्तम्भ 'ब' के शब्दों से स्त्री जाति का बोध हो रहा है।

अब जानिए –

जिन प्राणियों, वस्तुओं से पुरुष अथवा स्त्री जाति का बोध होता है, उसे लिंग कहते है।

लिंग के भेद– 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग

पुल्लिंग– जिस शब्द से प्राणी, वस्तु पुरुष जाति का बोध होता है उसे पुल्लिंग कहते है। जैसे–लड़का, भाई, छात्र, काला।

स्त्रीलिंग– जिस शब्द से प्राणी, वस्तु की स्त्री जाति के होने का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। जैसे– नदी, नानी, काली,

4. **निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदल कर लिखिए–**

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग
जैसे–(क) मैं पढ़ता हूँ	–	मैं पढ़ती हूँ

(ख) तुम लिखते हो – ________________

(ग) सोनू दौड़ता है – ________________

(घ) राधे खेलता है – ________________

(ङ) वे चलते हैं – ________________

5. निम्नलिखित अनुच्छेद से संज्ञा, सर्वनाम शब्द छाँटकर लिखिए–

गांधीजी का जन्म पोरबन्दर में हुआ था। वे राजकोट पढ़ने गए। उन्होंने पुस्तकों में पढ़ा था कि घूमना लाभकारी होता है। वे सत्यप्रिय थे। गांधीजी हरश्चिन्द्र की तरह सत्यवादी बनना चाहते थे। वे दूसरों के मोती जैसे अक्षर देखते तो स्वयं भी वैसा लिखने का प्रयास करते थे।

संज्ञा शब्द	सर्वनाम शब्द
____	____
____	____
____	____
____	____
____	____

6. 'धर्म' संज्ञा शब्द में 'इक' प्रत्यय जोड़कर 'धार्मिक' सर्वनाम शब्द बनता है। इसी तरह नीचे लिखे शब्दों में 'इक' प्रत्यय जोड़ शब्द बनाइए–

पक्ष, वर्ष, मास, सप्ताह, समाज

7. निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़कर अपने विषय में लिखिए–

(1) आपका क्या नाम है? ________________

(2) आप कहाँ रहते हैं? ________________

(3) आपके माता–पिता का नाम क्या है? ________________

(4) क्या आपके कोई भाई–बहन हैं? ________________

(5) आप किस कक्षा में पढ़ते हैं? ______________________

(6) आपका विद्यालय कैसा हैं? ______________________

(7) आपको क्या काम अच्छा लगता है? ______________________

(8) आपकी रुचियाँ क्या–क्या हैं? ______________________
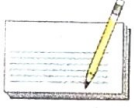
योग्यता विस्तार –

- गांधीजी से सम्बन्धित पुस्तकों विशेषतः उनकी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' पुस्तक को पढ़िए और गांधीजी के बारे में और अधिक जानकरी प्राप्त कीजिए।
- गांधीजी के बचपन से जुड़े अन्य प्रसंगों को एकत्र कीजिए।
- राजा हरिश्चन्द्र और श्रवणकुमार के बारे में अधिक जानकारी एकत्र कीजिए।
- विद्यालय/कक्षा से जुड़े अपने अनुभवों को संक्षिप्त में लिखिए।
- अन्य महापुरुषों की आत्मकथा पढ़िए।

पाठ 22
स्वास्थ्य का रहस्य

आइये सीखें –

● गुरु या शिक्षक के प्रति समुचित आदर–भाव ● कहानी द्वारा दिए गए सन्देश को ग्रहण करना ● उचित आरोह–अवरोह और हाव–भाव के साथ संवादों को बोलने का अभ्यास करना ● एक वचन और बहुवचन का ज्ञान।

महर्षि चरक का नाम चिकित्सा शास्त्र में बहुत आदर के साथ लिया जाता है वे महान आयुर्वेदाचार्य थे। उनकी पुस्तक 'चरक संहिता' आयुर्वेद का महान ग्रन्थ है।

महर्षि चरक अपने आश्रम में शिष्यों को शिक्षा–दीक्षा देते थे। एक बार चरक के पास चार शिष्य आए। महर्षि को प्रणाम कर बैठ गए। महर्षि ने उनसे आने का कारण पूछा। एक शिष्य ने कहा– "गुरूदेव हम आपसे एक प्रश्न पूछना चाहते हैं।"
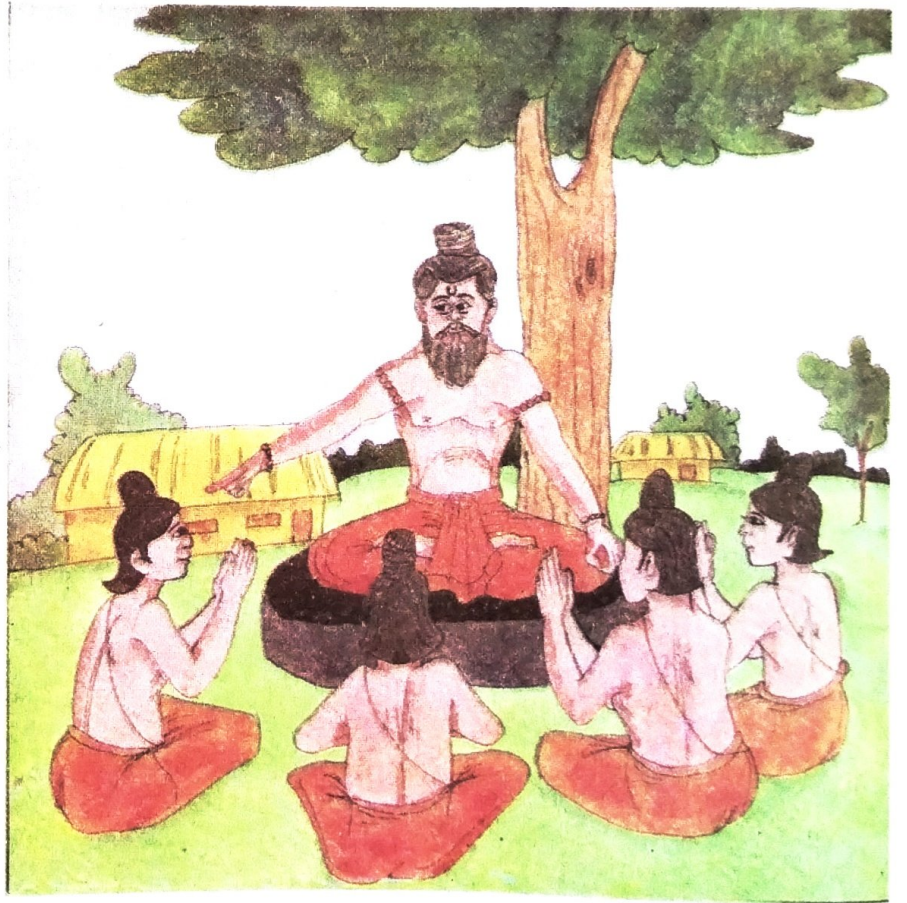
"हाँ–हाँ पूछो, क्या पूछना चाहते हो?" महर्षि ने कहा। शिष्य ने विनम्रतापूर्वक पूछा– "गुरुदेव, स्वस्थ व्यक्ति कौन है?" महर्षि बोले– इस प्रश्न का उत्तर तुम स्वयं ढूँढ़ो। तुम चारों चार दिशाओं में जाओ। और लोगों से मिलो। उनसे चर्चा करो। फिर मेरे पास आकर

शिक्षण संकेत– ● शिक्षक पाठ पढ़ाने से पूर्व प्राचीन आश्रम पद्धति और गुरू शिष्य परम्परा का संक्षिप्त परिचय छात्रों को दें। ● शिक्षक छात्रों के समक्ष आदर्शवाचन करें। फिर छात्रों से अलग–अलग छोटे–छोटे अंशों का वाचन कराएँ।

अपने–अपने अनुभव सुनाओ।''

महर्षि की आज्ञा पाकर चारों शिष्य चारों दिशाओं में चल दिए। पहला शिष्य चलते–चलते एक नगर में पहुँचा। उसने कई लोगों से अपना प्रश्न पूछा– ''स्वस्थ व्यक्ति कौन हैं?'' लोगों ने अपने–अपने विचारों से इस प्रश्न का उत्तर दिया। किसी ने कहा– ''औषधि लेने से व्यक्ति स्वस्थ रहता है।'' किसी ने कहा– ''जो व्यक्ति औषधि नहीं लेता, वह स्वस्थ रहता है। ''किसी अन्य व्यक्ति ने कहा– ''जो व्यक्ति समय पर पौष्टिक आहार लेता है, वह स्वस्थ रहता है।'' जितने मुँह उतनी बातें। शिष्य ने सभी उत्तरों को ध्यान से सुना और फिर वह लौट पड़ा।

दूसरा शिष्य एक गाँव में पहुँचा। उसने देखा कि गाँव के लोग अपने–अपने काम में लगे हुए थे। कोई खेत में हल चला रहा था, कोई पशुओं को चारा खिला रहा था। किसी के हाथ में खुरपी, किसी के हाथ में हँसिया, किसी के हाथ में फावड़ा तो किसी के हाथ में कुदाल। सभी अपने–अपने काम में जी–जान से जुटे हुए थे। खेतों के पास ही झोपड़ियाँ थीं। गाँव की स्त्रियाँ भी परिश्रम करने में पुरुषों से कम नही थी। कोई चक्की पीस रही थी, कोई ओखली में मसाला कूट रही थी। कोई घर में खाना बना रही थी तो कोई बाहर कुएँ पर पानी भर रही थी। ये सभी मेहनत करते हुए भी खुश नजर आ रही थीं। कुछ स्त्रियाँ काम करते हुए गीत भी गा रही थीं। बच्चे भी खेलकूद में मग्न थे। शिष्य ने गाँव के कई लोगों से अपने प्रश्न का उत्तर माँगा– ''स्वस्थ व्यक्ति कौन है?'' लोगों ने कहा– ''जो खूब मेहनत से काम करता है, जिसे अच्छी भूख लगती है और अच्छी नींद आती है। ऐसे व्यक्ति को कोई बीमारी नहीं होती। वह सदा स्वस्थ रहता है।''

तीसरा शिष्य दिन भर चलता हुआ रात को नदी किनारे बने मन्दिर पर पहुँचा। मन्दिर के पास एक चबूतरा था। वह बहुत थक गया था। सुस्ताने के लिए वह चबूतरे पर सो गया। ठण्डी–ठण्डी हवा चल रही थी। थकान के कारण उसे नींद आ गई। जब उसकी नींद टूटी तो भोर हो चुकी थी। उसने देखा कि लोग नदी में स्नान कर रहे हैं। कुछ लोग मन्दिर के परिसर में व्यायाम कर रहे हैं। शिष्य ने लोगों से पूछा– ''स्वस्थ व्यक्ति कौन है?'' स्नान करने वालों ने कहा कि जो व्यक्ति प्रतिदिन स्नान करता है, वह स्वस्थ रहता है। व्यायाम करने वालों ने कहा कि जो नियमित रूप से व्यायाम करता है वह सदा स्वस्थ रहता है।

चौथा शिष्य चलते–चलते एक छोटे गाँव में आ पहुँचा। शिष्य ने उस गाँव के लोगों से पूछा– ''भाई, स्वस्थ व्यक्ति कौन है?'' वहाँ के लोगों ने बताया– जो नगर की भीड़–भाड़ से दूर, धूल–धुँए से रहित स्वच्छ वातावरण में रहता है, वह स्वस्थ रहता है। हम ताजे फल और सब्जियाँ खाते हैं, स्वच्छ पानी पीते हैं, शुद्ध वायु का सेवन करते हैं इसलिए हम स्वस्थ हैं। यहाँ शहर के लोगों की तरह औषधियाँ नहीं लेनी पड़ती।''

चारों शिष्य गुरूदेव के पास लौट आए। उन्होंने अपने–अपने अनुभव सुनाए। चरक ने उनकी बातें सुनी और कहा– "तुम चारों की बातें बिल्कुल ठीक हैं। यदि तुम्हारे सभी विचारों को मिला दिया जाए तो तुम्हें तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा। हमें स्वच्छ वातावरण में रहना चाहिए। खूब परिश्रम करना चाहिए। प्रतिदिन स्वच्छ जल से स्नान करना चाहिए। प्रतिदिन व्यायाम करना, स्वच्छ हवा में घूमना, स्वच्छ पानी का सेवन करना और ताजा पौष्टिक आहार ग्रहण करना स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है। खेल–कूद और मनोरंजन भी व्यक्ति को स्वस्थ रखने में सहायक है।"

गुरूजी की बातों को सुनकर शिष्यों की खुशी का ठिकाना न रहा। उन्हें उनके प्रश्न का उत्तर मिल गया था। स्वास्थ्य का रहस्य उनकी समझ में आ गया था।

शब्दार्थ–

महर्षि–महान ऋषि, ज्ञानी। ज्ञानार्जन–ज्ञान प्राप्त करना। आयुर्वेदाचार्य–आयुर्वेद शास्त्र के आचार्य। आश्रम–ऋषि–मुनियों के रहने का स्थान। विनम्रता–विनय पूर्वक। औषधि–दवाई, पोष्टिक

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) महर्षि चरक कौन थे?

(ख) चरक संहिता क्या है?

(ग) शिष्यों ने महर्षि से क्या प्रश्न पूछा?

(घ) महर्षि ने शिष्यों से क्या कहा?

(ङ) स्वस्थ जीवन का क्या रहस्य हैं?

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान में भरिए–

(क) महर्षि चरक महान ———— थे। (ज्योतिषाचार्य/आयुर्वेदाचार्य)

(ख) महर्षि चरक अपने ———— में शिष्यों को शिक्षा–दीक्षा देते थे। (आश्रम/घर)

(ग) प्रतिदिन ———— हवा में घूमना चाहिए (स्वच्छ/अशुद्ध)

(घ) स्वस्थ रहने के लिए ———— पौष्टिक भोजन करना चाहिए। (ताजा/वासी)

3. **नीचे लिखे वाक्यों में जो वाक्य सही है उसके सामने खाने में सही (✓) का चिह्न और जो गलत है उसके सामने गलत (X) का चिह्न लगाइए।**

(क) जो व्यक्ति समय पर पौष्टिक आहार लेता है वह स्वस्थ रहता है। ☐

(ख) जो खूब मेहनत से काम करता है उसे अच्छी नींद नहीं आती है। ☐

(ग) जो नियमित रूप से व्यायाम करता है वह सदा स्वस्थ रहता है। ☐

(घ) हमें ताजे फल और सब्जियाँ नहीं खाना चाहिए। ☐

भाषा अध्ययन

1. **निम्नलिख़ित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए–**

शास्त्रज्ञ, संगीतज्ञ, कृतज्ञ, अज्ञ, महर्षि, आयुर्वेद, पौष्टिक, परिश्रम, स्वास्थ्य, रहस्य

2. **निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

महर्षि, शिष्य, आयुर्वेद, प्रणाम, विनम्र, स्वास्थ्य

3. **सही जोड़े बनाइए–**

शास्त्रज्ञ	कुछ न जानने वाला
संगीतज्ञ	उपकार को मानने वाला
अनभिज्ञ	संगीत को जानने वाला
कृतज्ञ	शास्त्र को जानने वाला

4. **एक जंगल में पत्ते खड़के। वहाँ शेर आ गया। उसे देख हिरण भागे। खरगोश भागा। हाथी भागा। कछुआ पानी में कूद पड़ा, भालू गुफा में छिप गया, कौए कॉव–कॉव करने लगे। जानवर डर के मारे कॉपने लगे।**

ऊपर लिखे अनुच्छेद में एक वचन और बहुवचन के शब्द हैं। आप नीचे दी गई तालिका में उन्हें यथा स्थान लिखिए–

एक वचन	बहु वचन

5. **आइए समझिए-**

पंचम अक्षर के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है। अनुस्वार (.) का प्रयोग अलग-अलग वर्णों की ध्वनि के स्थान पर किया जाता है। इसे ध्यान से समझने के लिए तालिका को देखिए-

क वर्ण	क, ख, ग, घ,	ङ	कङ्घा	कंघा
च वर्ण	च, छ, ज, झ	ञ	चञ्चल	चंचल
ट वर्ण	ट, ठ, ड, ढ	ण	झण्डा	झंडा
त वर्ण	त, थ, द, ध	न	मन्दिर	मंदिर
प वर्ण	प, फ, ब, भ	म	पम्प	पंप

6. **प्रत्येक पंचमाक्षर वाले दो-दो शब्द लिखिए-**

ङ	------------- -------------
ञ	------------- -------------
ण	------------- -------------
न	------------- -------------
म	------------- -------------
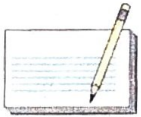
योग्यता विस्तार–

- आप स्वस्थ रहना चाहते हैं इसके लिए आप किन किन बातों का ध्यान रखेंगे।
- बीमार पड़ने के कौन कौन से कारण हो सकते हैं चर्चा करो।
- अपने घर के आस–पास की गंदगी को दूर करने के लिए आप क्या–क्या करेंगे?
- अपने साथियों के साथ एक छोटा दल बनाएँ और साफ–सफाई की जानकारी अपने आस–पास के लोगों को भी दें।

पाठ 23
वन विहार

हम सीखेंगे–

● संस्मरण विधा। ● घटना या देखे गए स्थान का वर्णन करना। ● पशु–पक्षियों की सामान्य जानकारी। ● प्रकृति प्रेम एवं वन्य जीवों के प्रति संवेदनशीलता।

सरिता अपने भाई श्याम के साथ गर्मी की छुट्टियों में भोपाल गई थी। वहाँ उसने वनविहार की सैर की थी। वनविहार उसे बहुत अच्छा लगा। जब वह वापिस घर आई तो उसने तुरन्त कॉपी में कुछ लिखा। उसे आप भी पढ़िए–

आज हम लोग बहुत खुश थे। मैं और श्याम, सुबह जल्दी उठ गए। आज हमें 'वनविहार' देखने के लिए जाना था। मामाजी ने रात को ही हम लोगों को बता दिया था। आज मामाजी की छुट्टी थी। 'वनविहार' देखने की इच्छा हमारे मन में कई दिनों से थी। आज उसे देखने का अवसर मिल ही गया।

जब हम वन–विहार के मुख्य द्वार पर पहुँचे तो मामाजी ने कहा "तुम लोग ठहरो मैं टिकिट लेकर आता हूँ।" कुछ ही देर में मामाजी टिकिट लेकर आ गए। फिर हम लोग आगे बढ़े। रास्ता समीप के बड़े तालाब के किनारे से होकर जाता था।

हम लोग कुछ दूर आगे बढ़े ही थे कि मैंने देखा–तार की लम्बी जाली के बाड़े के अन्दर एक भूरे रंग का जानवर, पेड़ पर उल्टा चढ़ रहा था। तभी मामाजी और श्याम ने भी उधर देखा।

शिक्षण संकेत – ● बच्चों को वन्य जीवों के चित्र दिखाएँ और उनके रहन–सहन, वास–स्थान, भोजन के बारे में बताएँ।

मामाजी बोले, "श्याम, बताओ यह क्या है?" श्याम कुछ कहता उसके पहले ही मैं बोल पड़ी, 'मामाजी यह तो भालू है। इसे मैंने अपने गाँव में पहले भी देखा है।"

अचानक श्याम की दृष्टि पूँछ वाले जानवर पर पड़ी। वह बोला, "अरे–अरे देखो, वह क्या है?" मैंने पूछा, "कहाँ?" उसने हाथ का इशारा तालाब की तरफ किया और बोला, "वह देखो तालाब के किनारे पानी से बाहर छिपकली जैसा बड़ा जानवर।"

मामाजी बोले, अरी पगली यह तो मगर है। पानी से बाहर आकर आराम कर रहा है।

हमने देखा पेड़ों के झुरमुट के नीचे कुछ जानवर खड़े थे। ये हमारे गाय–बैलों जैसे दिख रहे थे। इनके सींग लम्बे और शरीर अधिक पुष्ट थे। हमारी आहट पाकर वे एक ओर बढ़ने लगे। मैंने पूछा, "मामाजी ये कौन से जानवर हैं?" मामाजी ने बताया, "इन्हें नीलगाय कहते हैं। यह भी गाय की तरह घास चरती हैं, इनका रंग हल्का नीला होने से इन्हें नीलगाय कहते हैं।" तभी एक पेड़ के नीचे कुछ बन्दर दिखाई दिए। वे इधर–उधर, उछलकूद कर रहे थे। बन्दर पेड़ पर बैठे हुए कुछ खा रहे थे। श्याम बोला, "दीदी–दीदी देखो बन्दर। बन्दर का छोटा बच्चा कैसे अपनी माँ से चिपका हुआ है?" हमें बन्दरों की उछलकूद देखकर बड़ा मजा आया।

इसके पहले मैंने कभी भी इतना सुन्दर दृश्य नहीं देखा था। बड़े–बड़े छायादार पेड़ और उनके बीच मुलायम घास। ये सब बहुत सुन्दर और सुखद लग रहा था। यहाँ पहले से ही कुछ लोग आराम कर रहे थे। ये लोग भी हमारी तरह ही वन विहार देखने आये थे। वन विहार में खाने पीने की वस्तुएँ ले जाना मना है। प्रवेश द्वार पर ही लिखा है।

आसपास के पेड़ों पर तरह–तरह के खूबसूरत पक्षी भी हमें दिखाई दिए। तोता, बगुला, मैना, कबूतर, और रंग–बिरंगी छोटी–छोटी चिड़ियाँ देखकर मन खुशी से झूम उठा। पक्षियों की चहचहाहट बरबस ही मन को उस ओर खींच रही थी कि अचानक हिरणों का एक झुण्ड तेजी से हमारे सामने से गुजर गया। हम तो बस उसे देखते ही रह गए।

शिक्षण संकेत : ● बच्चों को वन्य जीवों का मुखौटा लगवाएँ या बच्चों को किसी को शेर, किसी को हाथी, किसी के मोर बनने को कहें, इसमें शेर दहाड़ेगा, हाथी झूमकर चलेगा, मोर नाचकर दिखाएगा। ● इससे बच्चों में अभिनय हावभाव प्रकट करने की क्षमता का विकास होगा।

आगे चलने पर एक ऊँचे तारों की जाली वाला बाड़ा दिखाई दिया। मामाजी बोले, "आओ तुम्हें जंगल के राजा से मिलाते हैं" "जंगल का राजा" श्याम बोला। "हाँ जंगल का राजा शेर।" मामाजी ने कहा। हम बातें करते–करते बाड़े के पास पहुँच गए। अचानक जोरदार दहाड़ सुनाई दी। श्याम डर गया। वह मामाजी से लिपट गया। मामाजी बोले, "बच्चो! डरो मत, यह शेर है। यह बाड़े के अन्दर है, इसलिए यह हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।" फिर हमने शेर को ध्यान से देखा। शेर की लाल–लाल, बड़ी–बड़ी आँखें, मोटे–मोटे तेज़ नुकीले दाँत, लपलपाती जीभ और भरा हुआ शरीर। वह दृश्य मुझे आज भी याद है।

समीप के बाड़े में सफेद बाघ को देखकर तो हम दंग रह गए। एकदम सफेद और शरीर पर काले या गहरे भूरे की धारियाँ। मामाजी ने बताया कि सफेद बाघ हमारे देश में ही पाए जाते हैं। इनकी संख्या बहुत कम है।

एक बड़े पिंजड़े में बाघ के दो छोटे–छोटे बच्चे आपस में लोट–पोट हो, मस्ती में खेल रहे थे। इन्हें देखकर तो मुझे अपनी बिल्ली के बच्चों की याद आ गई।

घूमते–घूमते हमें काफी समय हो गया था। श्याम तो थक चुका था। मामाजी ने पूछा "क्या और घूमना चाहते हो? या फिर वापिस चलें।" मैंने कहा, "मामाजी मन तो नहीं चाहता लेकिन थकान हो चली है, वापिस चलना चाहिए।" हम लौटने लगे तभी वृक्ष के नीचे एक सुन्दर पक्षी दिखाई दिया। श्याम बोला, "मामाजी यह क्या है?" मामाजी ने कहा "यह 'मोर' है। इसका नाच बहुत सुन्दर लगता है।"

वन विहार का आनन्द लेते हुए हम बड़े तालाब के किनारे आ गए। बड़े तालाब का दृश्य तो देखते ही बनता था। वहाँ लोग नौका विहार का आनन्द ले रहे थे। शाम का धुंधलका और

शिक्षण संकेत : ● बच्चों को कॉपी में वन्य जीवों के चित्र बनाने को कहें। चित्र में मुखौटा भी बनवाएँ। ● बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम तथा वन्य जीवों के प्रति संवेदना की भावना जागृत करने का प्रयास करें।

शहर की जगमग करती रोशनी। ये सब मिलकर अत्यन्त सुन्दर दृश्य बना रहे थे। इसे देखकर मन बड़ा ही प्रसन्न हुआ। वहाँ हमने आइसक्रीम का मजा लिया। आइसक्रीम, चाट–पकौड़ी आदि बेचने वाले अपने छोटे खेमचे लिए वहाँ मौजूद रहते हैं।

थोड़ा रुककर हम घर की ओर चल दिए। मेरा मन तो अभी भी 'वनविहार' के सुन्दर–सुन्दर दृश्यों में खोया हुआ था।

शब्दार्थ–

वन विहार–वन में घूमना, भोपाल में स्थित राष्ट्रीय उद्यान का नाम। टिकिट–किसी जगह को देखने या यात्रा करने के लिए निर्धारित राशि देकर प्राप्त की गई पर्ची। आइसक्रीम – पानी, दूध, मलाई आदि को ठण्डा करके बनाई गई बर्फ। खोमचा – चाट–पकौड़ी रखने के लिए लकड़ी आदि का बना आधार, ठेला। नौका विहार – झील या तालाब में नौका (नाव) में बैठकर घूमना। बाड़ा – जाली, तार या लकड़ी से घिरा स्थान। झुरमुट–पेड़ों या झाड़ियों का समूह। बरबस–जबरन, जिस पर अपना कोई बस न हो, बिना किसी प्रयास के। तुरन्त – तत्काल, उसी समय। अवसर–मौका। द्वार–दरवाजा। दृष्टि–नजर। इशारा–संकेत। झुरमुट–पेड़ों का समूह। पुष्ट–तगड़ा। आहट–चलते समय पैरों की आवाज। मुलायम–कोमल। सुखद–सुख देने वाला। खूबसूरत–सुन्दर। गुज़र गया–निकल गया। बाड़ा–घेरा, पशुशाला। अत्यन्त–बहुत अधिक। वातावरण–परिवेश, माहौल। विश्राम–आराम। मुख्य–खास।

बोध प्रश्न

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

   (क) बच्चों ने वन विहार में कौन–कौन से पशु–पक्षी देखे?

   (ख) वन विहार में शेर कैसा दिखाई दे रहा था?

   (ग) पानी के भीतर कौन से जानवर रहते हैं?

   (घ) बड़े तालाब का दृश्य कैसा था?

2. **सही उत्तर छाँटकर लिखो–**

   (1) जंगल का राजा कहलाता है?

   (क) हाथी   (ख) भालू

   (ग) बन्दर   (घ) शेर
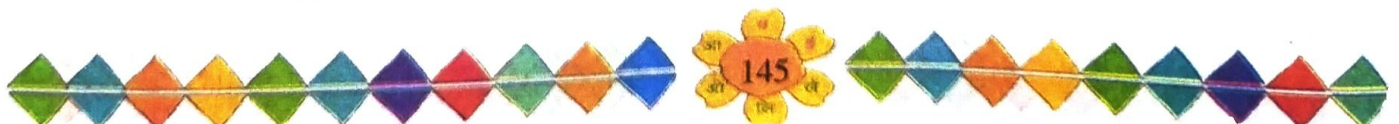
(2) वन विहार राष्ट्रीय उद्यान स्थित है?

(क) इन्दौर (ख) ग्वालियर

(ग) भोपाल (घ) जबलपुर

(3) किस पक्षी का नाच सुन्दर लगता है?

(क) बतख (ख) कौआ

(ग) मोर (घ) तीतर

(4) इनमें से किस जानवर की संख्या सबसे कम है?

(क) सफेद बाघ (ख) भालू

(ग) तेंदुआ (घ) सिंह

(5) अपनी माँ से किसका बच्चा चिपका था ?

(क) भालू का बच्चा (ख) हाथी का बच्चा

(ग) शेर का बच्चा (घ) बन्दर का बच्चा

3. खाली स्थान भरिए :–

(क) बड़े तालाब में लोग ....का आनन्द ले रहे थे (नौका विहार, बस)

(ख) सफेद बाघ केवल................. में ही पाए जाते हैं। (अफ्रीका, भारत)

(ग) .... का नाच बहुत सुन्दर लगता है। (मोर, बन्दर)

(घ) .... पेड़ पर उल्टा चढ़ता है। (शेर, भालू)

भाषा अध्ययन

4. पढो, समझो और लिखो :–

जैसे – शेर – शेरनी

ऊँट – ------

बन्दर – ------

हाथी – ------

मोर – ------

हिरण – ------

5. पाठ में आये संज्ञा और सर्वनाम शब्दों को छाँटकर लिखो–

संज्ञा	सर्वनाम
______	______
______	______
______	______
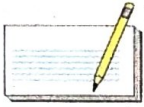
योग्यता विस्तार–

- **यदि आपने किसी रमणीक स्थान की सैर की है तो उसका विवरण लिखिए।**
- अपनी पसन्द के पशु या पक्षी का चित्र बनाइए और उसमें रंग भरिए।
- **मध्यप्रदेश में स्थित राष्ट्रीय उद्यानों की सूची बनाइए।**
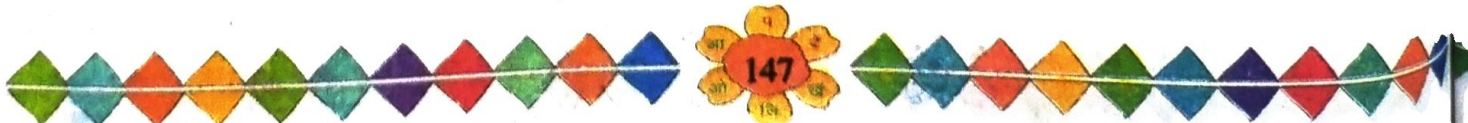
विविध प्रश्नमाला – तीन

प्रश्न 1. "जब वाणी में मिठास घुल जाती है" का अर्थ है

(क) मुँह में शक्कर का घुलना (ख) मीठी लार आने लगना

(ग) बोली सबको अच्छी लगना (ग) मिठास के बारे में बोलना

प्रश्न 2. "देश के प्रेम में वह अपना सब कुछ भूल गया था"। यह अर्थ निम्नलिखित पंक्तियों में से किस पंक्ति का है?

(क) हँस कर झूल गया फाँसी पर, भगत सिंह मस्ताना था।

(ख) बलिदानी था, उसे देश का नव इतिहास बनाना था।

(ग) देश–प्रेम का रस पीकर वह बना हुआ था मतवाला।

प्रश्न 3. मध्यप्रदेश की विभिन्न जन–जातियों में प्रचलित कलाओं के नाम लिखिए।

प्रश्न 4. गुरूजी की बातों को सुनकर शिष्यों की खुशी का ठिकाना न रहा वाक्य में आए मुहावरे को लिखिए?

प्रश्न 5. महात्मा गांधी को माता–पिता की सेवा करने की प्रेरणा किस पुस्तक से मिली?

प्रश्न 6. रानी दुर्गावती के शासनकाल को गोंडवाने का 'स्वर्णयुग' क्यों कहा गया है?

प्रश्न 7. 'अमर शहीद भगतसिंह' नामक कविता से किस बात की सीख मिलती है?

प्रश्न 8. सुलेख शिक्षा का जरूरी अंग क्यों है?

प्रश्न 9. पढ़ने के साथ–साथ व्यायाम क्यों जरूरी है?

प्रश्न 10. आप अपने स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए क्या–क्या करेंगे? उपायों की सूची बनाइए।

प्रश्न 11. कविता में अमर शहीद भगतसिंह को उनकी विशेषताओं के आधार पर और कौन–कौन से नामों से पुकारा गया है? लिखिए।

प्रश्न 12. दिए गए शब्दों में से वाक्यांशों के सामने उचित शब्द लिखिए?

(चित्रकार, संगीतज्ञ, देशभक्त, जन्मान्ध, अनाथ)

(क) संगीत को जानने वाला ....

(ख) जिसका कोई नाथ न हो ....

(ग) जो देश से प्यार करता हो ....

(घ) चित्र बनाने वाला ....

(ड) जो जन्म से अन्धा है ....

प्रश्न 13. निम्नलिखित शब्दों में से सही वर्तनी वाले शब्द पर गोला लगाएँ–

(क) मर्हषी, महर्षि, महर्शि

(ख) पौस्टिक, पोष्टिक, पौष्टिक

(ग) स्वास्थय, स्वास्थ्य, स्वास्थय

(घ) अभिषेक, अभीषेक, अभिशेक

(ड) वारषिकोत्सव, वार्षिकोत्सव, बार्शीकोत्सव

(च) संरक्षीका, संरक्षिका, संरछीका

प्रश्न 14. 'चैन की बंशी बजाना' मुहावरे का अर्थ है –

(क) आराम करना, खुशी होना (ख) चैन दार बंशी बजाना

(ग) बंशी से गाना निकालना (घ) बंशी बजाकर खुश करना

प्रश्न 15. जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चलता है कहलाते हैं?

(क) संज्ञा (ख) सर्वनाम (ग) विशेषण (घ) क्रिया

प्रश्न 16. 'धर्म' शब्द में 'इक' जोड़ने से बना सही शब्द है

(क) धार्मिक (ख) धर्मइक (ग) धार्मिक (घ) धारमिक

प्रश्न 17. 'सामाजिक' शब्द में इक शब्दांश अन्य किस शब्द से जुड़ा हुआ है।

(क) समाज (ख) समाजि (ग) सामाजी (घ) समाज

प्रश्न 18. विनम्रता में 'विनम्र' शब्द के साथ निम्नलिखित शब्दान्शों में से कौन–सा शब्दान्श जुड़ा है?

(क) नम्रता (ख) ता (ग) अता (घ) रता

प्रश्न 19. निम्नलिखित वाक्यों में लिंग परिवर्तन कर फिर से लिखिए?

(क) लड़की गाना गा रही है।

(ख) लड़के पानी पी रहे है।

(ग) मेरा भाई कल भोपाल जाएगा।
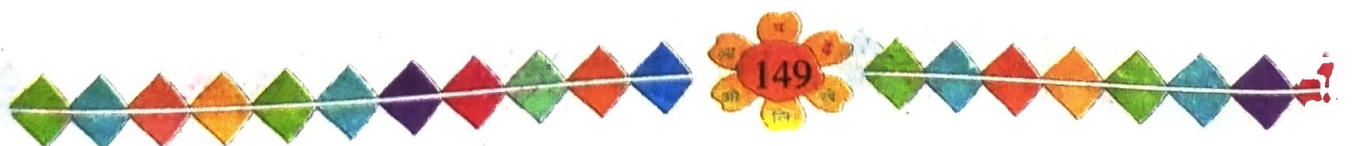
(घ) शेर जंगल का राजा है।

(ङ) मुर्गी दाना चुग रही है।

प्रश्न 20. निम्नलिखित अनुच्छेद में धरती सूर्य, नदी और पानी के पर्यायवाची शब्द दिए हैं छाँटकर लिखिए –

पूर्व में रवि उदय हो रहा था दिनकर की किरणें पृथ्वी पर उतर रही थी। सरिता में उसकी लालिमा सुन्दर लग रही थी। नीर सलिला का धीरे–धीरे बह रहा था। जल भरे बादल धरा के ऊपर छाए थे।

प्रश्न 21. निम्नलिखित वाक्यों को दानी पेड़ की कहानी के आधार पर क्रम में लिखिए?

(क) लड़का फल तोड़ कर ले गया।

(ख) आदमी ने पेड़ का तना काटकर नाव बनाई।

(ग) लड़का रोज पेड़ के पास आता।

(घ) बूढ़ा ठूँठ पर बैठकर सुस्ताने लगा।

(ग) युवक पेड़ की शाखाएँ काटकर ले गया।

प्रश्न 22. वन–विहार घूमने पर सरिता और श्याम ने जिन पशु–पक्षियों को देखा उनकी सूची बनाओ।

पशु	पक्षी
1.	
2.	
3.	
4.	
5.	
6.	

प्रारूप प्रश्न–पत्र

विषय – हिन्दी

कुल अंक – 100

प्र.1. क. सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए– 10

(1) उत्पादन बढ़ाकर भारतमाता को कौन मालामाल कर देगा?

(क) सैनिक (ख) मजदूर (ग) विद्यार्थी (घ) किसान

(2) "मेघदूत" रचना के रचनाकार का नाम है –

(क) कालिदास (ख) तुलसीदास (ग) रैदास (घ) सूरदास

(3) नर्मदा नदी किस सागर में मिलती है –

(क) लाल सागर (ख) अरब सागर (ग) भूमध्य सागर (घ) मृत सागर

(4) गोंडवाना राज्य में किस शासक के शासनकाल को स्वर्ण युग कहा गया है –

(क) रानी लक्ष्मी बाई (ख) रानी अहिल्या बाई

(ग) रानी दुर्गावती (ग) रानी अवन्ती बाई

(5) वन विहार राष्ट्रीय उद्यान स्थित है –

(क) भोपाल (ख) विदिशा (ग) इंदौर (घ) खण्डवा

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(क) गुरूदेव ने ....की उपाधि लौटा दी थी।

(ख) रम्मू की प्रिय मिठाई का नाम..........................था।

(ग) ....नर्मदा नदी का दूसरा नाम है।

(घ) दानी पेड़ ने अपने तने को..........................बनाने के लिए दान में दे दिया।

(ड) अमर शहीद भगतसिंह को..........................नाम से भी पुकारते थे।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दो वाक्यों में दीजिए? 10

(क) मजदूर और किसान किस प्रकार, भारतमाता के सवाल हल करते हैं?

(ख) रम्मू को दो गुलाबजामुन मिलने पर भी मन में संकोच क्यों था?

(ग) नेहरूजी इन्दिरा को बहादुर सिपाही क्यों बनाना चाहते थे?

(घ) "उसे देश का नव इतिहास बनाना था?" यह वाक्य किसके लिए कहा गया है? उसे किस प्रकार इतिहास बनाना था?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में दीजिए। 20

(क) नर्मदा नदी कहाँ से निकलती है तथा किन–किन जिलों से होकर बहती है?

(ख) 'रूप बड़ा या गुण' में कौन से दो महान व्यक्तियों का वर्णन किया है?

(ग) सुलेख शिक्षा का जरूरी अंग क्यों है?

(घ) 'वनविहार' में कौन–कौन से पशु–पक्षी दिखाई दिए?

(ड) मध्य प्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ कौन–कौन सी हैं?

प्रश्न 4. निम्नलिखित वाक्यों में विराम चिह्नों का सही प्रयोग कीजिए। 14

(क) तुम्हारा नाम क्या है शिक्षक ने पूछा सुरेश ने खड़े होकर कहा मेरा नाम सुरेश है सीमा सुरेश और दिनेश साथ–साथ स्कूल आते हैं

(ख) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. दिन में सूर्य प्रकाशित होता है और................में चन्द्रमा।
2. धरती पर फूल खिले है और......................में तारे।

(ग) 'पवन' और 'वायु' के दो–दो पर्यायवाची शब्द लिखिए?

(घ) 'नमर्दा' और 'पडाई' शब्दों की वर्तनी शुद्ध करके लिखिए?

(च) रेखांकित शब्दों के स्थान पर ''घिग्घी बंध गई'' मुहावरे का प्रयोग कीजिए।

राजा के डांटने पर सेवक एक दम चुप हो गया।

(छ) 'ता' और 'आई' लगाकर दो शब्द बनाइए।

(ज) सही जोड़ी बनाइए।

(क) जो देश प्रेमी हो	आत्मकथा
(ख) चित्र बनाने वाला	मनमोहक
(ग) मन को मोहित करने वाला	देशभक्त
(घ) स्वयं के जीवन की कहानी	चित्रकार

प्रश्न 5. अपनी पाठ्य पुस्तक से कविता की कोई चार पंक्तियाँ लिखिए? 4

प्रश्न 6. अपनी पाठ्य–पुस्तक की किसी कहानी का सार अपने शब्दों में लिखिए। 6

प्रश्न 7. 6

चित्र को देखकर कोई छः वाक्य लिखिए?

प्रश्न 8. अपने मित्र को मेले की जानकारी पत्र के द्वारा दीजिए। 10

अथवा

अपनी माताजी को परीक्षा की तैयारी के बारे में पत्र के द्वारा बताइए?

प्रश्न 9. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर दस वाक्य लिखिए। 10

(क) पाठशाला

(ख) पालतू पशु

(ग) मेरी यात्रा

प्रश्न10. अपनी पाठ्य पुस्तक में दिए गये नीति के दोहो में से कोई एक दोहा लिखकर उसका भावार्थ भी लिखे। 10

आओ सँाप और सीढ़ी का खेल खेलें

विकलांग साथियों को अपना भरपूर सहयोग और प्यार दें... ये उनका हक है...

समग्र स्वच्छता अभियान संदेश

1. खाना खाने के पहले हाथ धोयें।

2. शौच के बाद साबुन से हाथों को अवश्य धोयें।

3. शौच के लिए शौचालय में ही जायें।

4. घड़े में से पानी डंडी वाले लोटे से ही निकालें,

   पानी में उंगलियॉ नहीं डुबाना चाहिये।
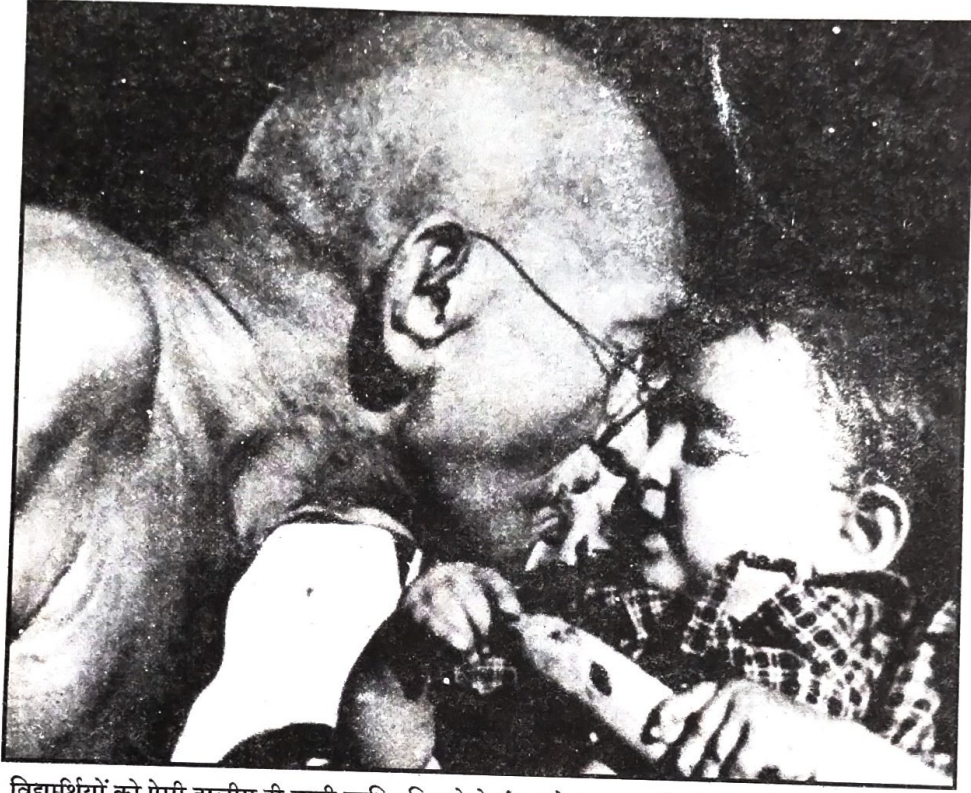
विद्यार्थियों को ऐसी तालीम दी जानी चाहिए जिससे वे संसार के महान धर्मों को आदर के साथ सीख सकें।

-महात्मा गांधी

— ★ —

राष्ट्रीय गीत

वन्दे मातरम्

श्री बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय : आनन्दमठ

वन्दे मातरम्।
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
शस्यश्यामलाम् मातरम् ।। वन्दे० ।।
शुभ्र ज्योत्स्ना - पुलकित यामिनीम्,
फुल्ल कुसुमित - द्रुमदल - शोभिनीम्,
सुहासिनीम्, सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम् ।। वन्दे० ।।
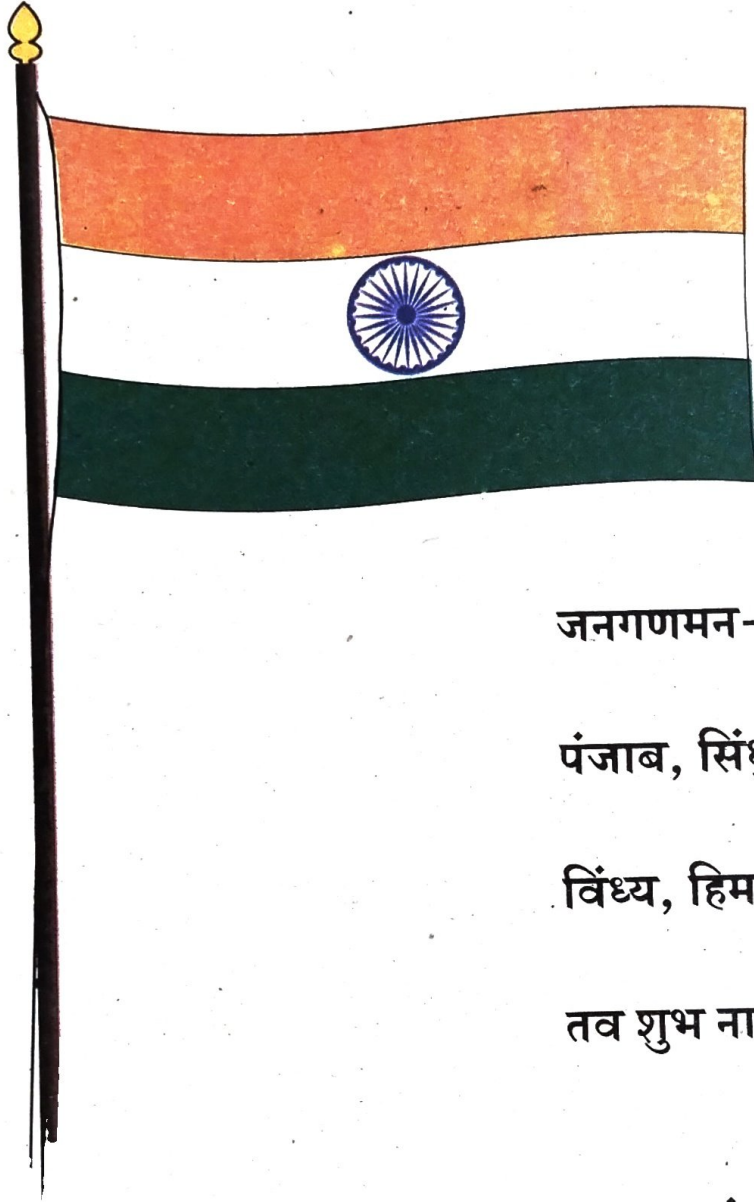
राष्ट्रगान

जनगणमन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता !
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि-तरंग !
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जयगाथा।
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय, जय हे !

(हर देश का अपना एक विशिष्ट झंडा और राष्ट्रगान होता है। ''तिरंगा झंडा'' भारतवर्ष का राष्ट्रध्वज है और ''जनगणमन'' राष्ट्रगान। राष्ट्रध्वज में ऊपर की पट्टी केसरिया रंग की और नीचे की हरे रंग की होती है। बीच की सफेद पट्टी के बीचों बीच २४ शलाकाओं का नीले रंग में गोल-चक्र होता है। केसरिया रंग त्याग का, सफेद शांति का और हरा रंग प्रकृति की सुन्दरता का प्रतीक है। चक्र का स्वरूप अशोक की सारनाथ-स्थित सिंहमुद्रा में अंकित चक्र की भाँति है यह चक्र सत्य और सब धर्मों का प्रतीक है।

राष्ट्रगान की रचना गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की थी। इसमें संपूर्ण देश के लिए मंगल-कामना है। राष्ट्रगान और राष्ट्रध्वज का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है। जब राष्ट्रगान गाया जाय या उसकी धुन बजाई जाये अथवा राष्ट्रध्वज फहराया जाय, तब हमें सावधान की स्थिति में खड़े होकर इसे सम्मान देना चाहिए।)